रूहानि सतसंग

एवं

श्रद्धा भजन माला



श्री श्री १००८ स्वामी श्री श्रद्धानन्द पुरी जी महाराज

-: प्रकाशक :-

श्री अद्वैत स्वरूप आश्रम

श्रद्धा नगर, शाहपुर कण्डी, (पठानकोट)

ओम् श्री सद्गुरु चरण कमले भ्यो नमः



रूहानि सत्संग

एवं

श्रद्धा भजन माला

-: रचियता व संग्रहकर्ता :-

श्री श्री 1008 स्वामी श्रद्धानन्द पुरी जी महाराज

श्री अद्वैत स्वरुप आश्रम

श्रद्धा नगर, शाहपुर कण्डी (पठानकोट)



अनोता प्रिंटर्ज

पुष्प सिनेमा के पोछे, ढांगू रोड़, पठानकोट।



श्री सद्गुरू सच्चिदानन्द स्वरूपाय नमः

—: विषय सूची :—

:- भजन माला :-

।। भूमिका ।।

प्रिय सत्संगामृत रस प्रेमी भक्त वृन्द ! देश काल और उपयोगी साधनों के सान्निध्य से ऊर्वरा भूमि में पड़ा हुआ जैसे सूक्ष्म बीज (जैसे) क्रमशः अंकुरित—पल्लवित् एवं प्रफुल्लित होता है ! इसी प्रकार प्राणी के अन्तः करण में जन्म-जन्मान्तर के सूक्ष्म संस्कार सन्निहित रहते हैं ! वे भी अनुकूल एवं प्रतिकूल सामग्री पाकर पुष्ट तथा क्षीण होते हैं । और प्रत्येक मनुष्य के मस्तक में चक्कर काटते रहते हैं, परन्तु बिना प्रभु की कृपा से प्राप्त हुए उन्हें ग्रहण करके लेख-बद्ध करना परिष्कृत मति वाले अनुभवी गुरु-सेवकों एवं विद्वानों का कार्य ही है । अर्थात् सदगुरु महाराज जी की अपार कृपा दृष्टि अथ च प्रेरणा द्वारा आज पुनः पूर्वलिखित "श्रद्धा सुमननामक" । पुस्तक रुपी पुष्प के पश्चात् प्रस्तुत "रुहानि सत्संग एवं श्रद्धा भजन माला" पुस्तक सत्संग प्रेमी जन के समक्ष करने जा रहा हूं । जिस में ज्ञान-गुरु महिमा-गुरु भक्ति जागृति तथा वैरागादि से सम्बन्धित नाना उपदेश-भजन-सत्संग प्रसंगादि जो इस संसार रुपी भवसागर और कलि-युग के महा कष्टों से मुक्ति देने में सहायक होंगे । इस पुस्तक में त्रुटियों की ओर ध्यान न देते हुए (सब से) भक्तों से अनुरोध है कि भूल का सुधार करने में सहायक हों ।

इन्हीं शब्दों के संग
श्री गुरु चर्ण कमलों में—
उपरोक्त तुच्छ भेंट समर्पित है ।
(दासन-दास श्रद्धा नन्द)

श्री गुरू-वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुर्रुविष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म स्तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥
वन्दौ चर्ण सरोज गुरु मुद मंगल आगार ।
यही सेवत नर होवत है भव सागर से पार ॥
वेद शास्त्र श्री भागवत् गीता पढ़े जो कोय ।
तीन काल सन्तुष्ट मन-बिन गुरु कृपा न होय ॥
गुरु के सिमरण मात्र से नाशत विघ्न अनन्त ।
ताते सर्वे आरम्भ में ध्यावत हैं सब सन्त ॥
डण्डौत वन्दना अनखवार सर्व कला समरत्थ ।
डोलणते राखो प्रभु—नानकेद घर हत्थ ॥
ॐ ब्रह्म प्रणाम-प्रणाम गुरु-पुनि प्रणाम सब सन्त ।
करत संग लौचारिये नाशत-विघ्न अनन्त ॥
नमो स्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये—
सहस्त्र पादाक्षशिरोरु वाहवे ।
सहस्त्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते—
सहस्त्र कोटि युगधारिणे नम: ॥



(रूद्राष्टकम्)

।। श्री शंकर स्तुति ।।

नमामीश मीशान् निर्वाण रूपम् ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपम ।
निजं निर्गुण निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदा काश माकाश वासं भजेऽहं ।।

निराकारमोङ्कार मूलं तुरीयम् ।
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।।
करालं महाकाल कालं कृपालम् ।
गुणागार संसार पारं नतोऽहं ।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभाश्री शरीरं ।।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारू गंगा ।
शसद्भाल बालेन्दुकण्ठे भुजंगा ।।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालम् ।
प्रसन्नाननं नील कण्ठं दयालम् ।।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्ड मालम् ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।

प्रचण्ड प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखण्ड अजं भानुकोटि प्रकाशं ।।
त्र्यशूल निर्मूलनं शूल पाणिः ।
भजेऽहं भवानी पति भाव गम्यम् ।।

कलातीत कल्याण कल्पान्त कारी ।
सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी ॥
चिदानन्द संदोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

न यावद् उमानाथ पादारबिन्दम् ।
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुख शान्ति सन्ताप नाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वे भूताधिवासम् ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजा ।
न तोहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्य मानम् ।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हर तोषये ।
ये पप्रन्ति जरां भक्तया तेषां शम्भु प्रसीदति ॥
यद क्षर पद भ्रष्टं-मात्राहीनतु यद्भवेत् ।
तत्र मे क्षम्यतां देव प्रसीद महेश्वर ॥



।। निजस्वरूप ।।

प्रभु प्रेमियों जिस आनन्द एवं शान्ति को जीव बाहर ढूंढता है वह तो हम सब के भीतर है । वो आनन्द स्वरुप आत्मा अथवा शब्द ब्रह्म सन्त सतगुर की कृपा से जाना जाता है । गुरु बाणी में भी लिखा है :—

"आनन्द आनन्द सब कोई कहे ।
आनन्द सतगुर ते जानिये ।।"

प्रभु प्रेमियों सतसंगी गुरमुख शब्द अभ्यासी उस सतचित आनन्द को अपने अन्दर ही प्राप्त कर लेता है यानि जान लेना है । गुरु शरण अथवा सतसंग की शरण जो जीव श्रद्धा युक्त जाता है उसी को यह भेद प्राप्त होता है अथवा शान्ति को अनुभव करता है अन्यथा नहीं । उस शान्ति स्वरूप सतचित आन्नद की लहर को सच्चा जिज्ञासु ही पकड़ पाता है । प्रभु प्रेमियों जैसे कि जो रेडियो स्टेशन से रेडियो द्वारा कोई बात सुनाई जाती है तो वह सर्वत्र फैल जाती है और तब उसे तरंग कहते हैं । पर जब वह बात रेडियो यन्त्र में ग्रहण की जाती है तब तरंग अणुरूप में बदल जाती है इसी तरह सतचित आनन्द की लहरें सर्वत्र विद्यामान है और जब इन्हे शब्द द्वारा मनुष्य के अन्तःकरण में पकड़ी जाती है । तो वह अणुरुप हो कर मानवी सीमा से बद्ध हो जाती है । यदि तरगों को ग्रहण करने वाला यह यन्त्र केवल सतचित ही आनन्द की तरगों को ही ग्रहण करे तो कुछ भी कठिनाइ नहीं है । लेकिन कुछ यन्त्र इतने खराब होते हैं कि दूसरे कोलाहलों को भी ग्रहण कर लेते हैं यही हालत मनुष्य की है. महान पुरुष चेतावनी देते हैं कि अपने सतचित आनन्द स्वरुप को पहचानों । आत्म ज्ञान होने पर तेरा जन्म मरण छूट जायेगा । उन कर्मों का हिसाब जो पहले कर चुका है और उन पापों के मुताबिक आगे होने वाले जन्मों का हिसाब जो मालिक ने बना रखा है । यह सब भाग्य के लेखे वाला कागज़ फाड़ कर फैंक दिया जायेगा इसी जन्म में मुक्ति हो जाएगी ।

देखो ! भाई मोची की दुकान पर जूता मिलेगा । धनवान के पास जाने से धन मिलेगा । यदि कपड़ों की जरुरत है तो वस्त्रों की दुकान पर जाना पड़ेगा । विद्वान् के पास जाने से विद्या का काम बन सकता है ।इसी प्रकार यदि आध्यात्मिकता को पाना है अथवा भक्ति युक्ति की इच्छा है तो सन्त सतगुरु

की संगत करो क्योंकि परमार्थ का सिलसला हमेशा सन्तों के अधीन रहता चला आया है । जैसे रेल का इंजन माल से भरी गाड़ियों को अनायास खींच ले जाता है ऐसे ही सन्त पाप से लदे जीवों को मुक्ति की ओर खींच कर ले जाते हैं । इसी लिये महापुरुषों की संगत करो क्योंकि सन्त महात्माओं की संगत करने से जो भ्रम, अज्ञान, मोह और माया के पर्दे हैं वो हट जाते हैं । सन्त असन्त का निर्णय करने की दृष्टि मिल जानी है अथवा सतसंग से प्रेम विवेक, विचार, सुख आत्म ज्ञान और शान्ति के साधन उत्पन्न होते हैं । इसी लिये सन्त सतगुर की शरण अथवा सतसंग अनिवार्य है। यदि सूई की नोक यानि छिद्र में धागा डालना यानि पिरोना होता है तो धागे को पतला करना पड़ता है इसी तरह यदि मन को ईश्वर में पिरोना चाहते हो तो दीन हीन बनों । जैसे पत्थर के अन्दर कांटा नहीं घुसता वैसे ही सन्तों का उपदेश मूर्ख और बद्ध जीवों को हृदय में प्रकाश नहीं करता । सन्तो का क्या दोष वर्षा का जल जैसे एक ओर से जाता है और दूसरी ओर बह जाता है उसी तरह संसारी बद्ध जीव भी धर्म की बातें एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देते हैं ।

मालिक की प्राप्ति के लिये उसकी परख और पहचान का होना जरूरी है और वह पहचान अन्तर दृष्टि से होती है । यदि इन बाहरी आंखों से पहचान हो सकती तो फिर श्री कृष्ण महाराज द्वारा अर्जुन को दिव्य चक्षु देने की क्या अवश्यकता थी । उस संत स्वरूप मालिक की परख सन्त सतगुर द्वारा ही हो सकती है ; युक्ति से मुक्ति होती है । यह मत घबरायों कि हम पापी हैं अथवा अधम हैं हमारे से भक्ति, भजन सतसंग कैसे होगा । ऐसी बात नहीं है देखो अजामल गणिका, बालमीक कितने बड़े पाप अपराध करने वालों में माने गए थे लेकिन सन्तों की संगत, सतसंग नाम के द्वारा इन सब का कल्याण हुआ । क्या हम इन से भी महान् पापी है । भगवान तो यहां तक कहते हैं :—

"कोटि विपर बद्ध लागे जाहू ।
पढ़े शरण तयजता नहीं ताहू ।"

अर्थात भगवान् कहते हैं कि करोड़ ब्राह्मणों का वध करने वाले इतने बड़े महान् पापी को भी शरण देता हूं । अगर वो कहता है त्राहेमाम शर्णागतम

ाये शरण को मैं कभी नहीं त्यागता। परम सन्त कबीर जी भी कहते हैं :—

"चलते मार्ग जो गिरे, तां सिर नाहि दोष।
कहे कबीर बैठा रहे तां सिर करड़े कोष ॥"

अर्थात कबीर जी कहते हैं कि यदि कोई गलत कर्म हो गया है यानि मार्ग चलते गिर जाता है तो वो बैठा न रहे यानि सत्य मार्ग को त्यागे नहीं; अगर छोड़ देता है तब दोष है। यदि वो हिम्मत करके उठ कर चल पड़ता है सो उस पर दोष नहीं होता। वह अपनी मंजिल को तह कर लेता है तो सत्य की प्राप्ति हो जाती है यानि उसी का कल्याण होता है।

हिम्मते मर्दा मरदे खुदा

संसार में रहते हुए, सभी कार्य करते हुए, निरन्तर सुरत शब्द, परा बाणी अजपा जाप शब्द ब्रह्म स्वांस में नाम का अभ्यास करने से चलते फिरते, सोते जागते, खाते पोते, सतगती को प्राप्त होता है।

चलते फिरते सोवत नाम।
कहू नानक तिसके सदकाम ॥"

जैसे हाथ में तेल लगा कर कटहल काटने से उस का लसा हाथ में (नहीं लगता वैसे ही ईश्वर में) भक्ति व विश्वास करके संसार का सब काम करने से भी जीव संसार के बन्धन में नहीं पड़ता। भक्तों और संसारियों की दृष्टि में जमीन आसमान का अन्तर होता है। संसारियों की दृष्टि में प्रभु की दया उस पर अधिक समझी जाती है। जिस के पास धन दौलत और संसारिक खुशियों का सामान अधिक हो परन्तु भक्तों की दृष्टि बहुत ऊंची होती है, वे इन चीजों को नाशवान और दुखरूप समझ कर इच्छा नहीं करते।

प्रभु प्रेमियों प्रभु दर्शन में देरी नहीं। देरी तो संसार की वासनाओं को मिटाने में लगती है। संसार में केवल सतनाम ही सार वस्तु है जिसका प्रभाव यह है कि वह जीवों को अमर लोक में पहुचा देता है। मनुष्य कहलाने वाले प्राणी जब एक संसार में लिप्त रहते हैं और अपनी आत्मा से बेखबर या भूला रहता है वह पशु संज्ञा में गिना जाता है। जब आत्मा से नाता जोड़ कर अपने अन्दर दैवी गुणों को भरने लगता है तब उसकी देव संज्ञा हो जाती है। यह दोनों ही मनुष्य संज्ञा नहीं है। इन से आगे जब वह ईश्वरीय गुण धारण करता है तब उस को मनुष्य कहते हैं। ऐसा शास्त्रों का मत है कि

सन्त सतगुरु जी की संगत करने से जीव उस रहस्य को जान लेता है जो निरन्तर अपनी सुर्त को निज धाम में जोड़ कर परम आनन्द निज धाम तक बड़ी असानी से पहुंच सकता है। जैसे मछली जल की धारा को पकड़ कर छोटे से तालाब से नदी तक और नदी से समुंद्र तक जा पहुंचाती है ठीक इसी प्रकार सतसंग द्वारा जीव संसार के क्षणिक सुख मोह रुपी तालाब से सुरती रूपी मछली गुरु की बताई युक्ति द्वारा निरन्तर शब्द की धारा रुप नदी में और शब्द रुप नदी आगे अपने केन्दर निज घर परम धाम मोक्ष पद यानि अपने घर पहुंचा देती है वहां न सुर्त रही, न शब्द रहा, न गुरु रहा और न चेला रहा। सभी उसी सत्य परम तत्व से विलय हो गए। भजन किस का करना और किस ने करना। किस का दर्शन करना और किसने करना यह वातें भी वहां पहुंचने पर गायब हो जाती है। परम सन्त कबीर जी ने भी फरमाया है :—

"सुर्त छूटो, शब्द छूटो, छूट गयो अब राम।
राम ही मेरो भजन करे, मैं करू विश्राम॥"

और भी कहा :—

"जाप मरे अजपा मरे, अनंहद ही मर जाये।
सुर्त समानी शब्द में, ताको काल न खाये॥"

इस स्थिति को पहुंचा हुआ पुरुष मान बड़ाई इर्षा द्वेष, दुःख सुख लाभ हानि, मेरा तेरा, निंदिया स्तुति इत्यादि इन बातों से ऊपर उठ जात है फिर कोई दूसरा रह नहीं जाता। जिधर भी देखता है सर्वत्र में अथवा सभ में उस परख तत्व सत्य का ही मान करता हैं - जैसे लिखा भी है :—

"जिधर देखता हूं तू ही तू है।
हर शै में तेरा जलवा हू-बहू है॥"

ऐस स्थिति हो जाने पर हालत गूंगे जैसी हो जाती है जैसे लिखा भी है :—

गूगे गुड़ खाया स्वाद न बताया।

प्रभु प्रेमियों! जबान से उसके कोई क्या व्यक्त कर सकता है वो तो अथाह अथवा वेअन्त है उसको अनुभव से जाना जाता है जैसे एक समय स्वाम राम कृष्ण परमहंस जी से किसी ने पूछा कि आपका वो ब्रह्म कैसा है त स्वामी जी ने उत्तर दिया कि वो बाणी का विषय ही नहीं है अर्थात बाण

व्यक्त करने में असमर्थ है वो ब्रह्म वाणी से परे की चीज हैं अर्थात वो तो अनुभव अगम्य विषय की बात है। ऐसे ही गोतम ऋषि से किसी ने पूछा कि आप ने उस ईश्वर का दर्शन किया है तो गोतम जी ने सोचा कि अगर मैंने कहा कि दर्शन किया तो दर्शन करने वाला और एक जिसका दर्शन किया दो हो जायेंगे फिर एको ब्रह्म द्वतियां नास्तिक वाली बात खतम हो जायेंगी और अगर कहता हूं दर्शन नहीं किया तो इस श्रद्धा की टूट जायेगी। तब उन्होंने कहा कि प्रेमी गुरमुख हम ईश्वर के बारे में कुछ नहीं कहते, बल्कि हम तो छत पर चढ़ने के लिये एक सीढ़ी बनाते हैं। जब सीढ़ी दर सीढ़ी छत पर चढ़ जाओगे तो छत के उस पार क्या है वो खुद बखुद ही अनुभव हो जायेगा। लेकिन बहुत से लोग आजकल क्या करते हैं वो सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना तो छोड़ देते हैं। वे सब Direct यानिकि सीधे छलांग मार कर छत पर पहुंचना चाहते हैं। परिणाम क्या होता है कि वे अपने रास्ते से पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। स्थिति तो कोई बन नहीं पाती, वे न इधर के न उधर के रहते हैं। हालत ऐसी होती है :—

"धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का।"

ऐसा कौन लोग करते है जिनका एक इष्ट और एक धारणा नहीं होती। ऐसा क्यों होता है ? कि वो लोग अनेक तरह किताबें पढ़ कर अक्षर बोध और थयूरी में महान तो जरुर हो जाते हैं परन्तु अनुभव की बात को तो बेचारे समझते ही नहीं क्योंकि किताबों में कोई बात साधक के लिये कही है, कोई सिद्ध के लिए, कोई बात भक्ति के लिए, कोई बात ज्ञान के लिए, बातें तो यह अपनी-2 जगह पर सभी ठीक हैं लेकिन साधक के लिए साधना करना यानि कि नाम जपना, अपने इष्ट की आरती पूजा करना, सेवा करना, सतसंग में जाना शुभ कर्म करना अनिवार्य है वो सिद्ध की नकल न करे कि आरती पूजा करना नाम जपना तो एक छोटी सी बात है मैं तो सीधा ज्ञान से उस सत्य तत्व को जानूगा। लेकिन ऐसा कादिप नहीं हो सकता। आरती पूजा शुभ कर्म यह तो परमार्थ की पहली सीढ़ी है। अगर तू पहले इस सीढ़ी को अपनायेगा तभी अन्तिम सीढ़ी पर पहुंच सकेगा। अगर इनको ही नजर अन्दाज कर देगा तो वहां पहुंचना बच्चों का कोई काम है। नाम से ही अनामी को पकड़ा जायेगा। खाली किताबों से पढ़ कर के ही ज्ञान कथना, यह सूसक ज्ञान है। हां थयूरी में अक्षर बोद्ध हो जाना आसान बात है मजा तो तब है यदि उस बात को Practical अथवा अनुभव में लायें।

पानी पानी कहने से प्यास नहीं मिटती पानी पी लेने से ही प्यास मिटती है। अगर मिसरी मिसरी कहते रहें तो मुंह मीठा नहीं हो जायेगा, मिसरी खाने से ही मुंह मीठा होगा। जैसे खाना बनाने का व्याख्यान दिर भर करते रहें कि हम यह खाना बनायेंगे, बीच में इतना नमक डालेंगे, घी डालेंगे, मिर्च डालेंगे भाईयो ऐसा कहने मात्र से हमारा पेट नहीं भरेगा। खाना बनाकर खा लेने से ही पेट भरेगा। इस प्रकार अनेक तरह के ग्रन्थ और किताबें पढ़ने से कुछ नहीं बनेगा। तब तक बुल्ले की तरह Practical रुप में भजन करेंगे तब तक भटकना और अशान्ति दूर हो ही नही सकती जैसे कि बुल्ले को अनेक तरह की किताबें पढ़ कर हंकार हो गया था कि मेरे बरावर तो कोई ज्ञानी है ही नही लेकिन जब वह सन्त अनैत जी की शरण में गया तो उसने सब किताबों के पचड़ो से हटा कर एक ब्रह्म, निरन्तर रुहानियत इलम बताया बुल्ले को कहा कि जिसमानी अथवा बाहरी इलम से तुम्हारा कुछ नहीं बनेगा अब इस अभ्यन्तर रूहानियत इलम की पढ़ाई पढ़ो जिस के लिए कुल ग्रन्थ पढ़े जाते हैं। वो निज नाम सब घट भीतर स्वांस प्रति स्वांस में होता है। साई अनैत जी ने उस को अन्दर का इशारा देते हुए युक्ति समझाई जिस को गैबी रमंज भी कहते है। जैसे लिखा भी है :—

"गैबी रमंज फकीरां वाली पढ़ने विच न आई।
सोच समझ कुछ कर तू बन्दे पढ़ पढ़ ऊमर गवाई ॥"

इस रमंज को गुरु जी पा कर बुल्ले को सोझी और उस ने सभी किताबों को गढ़ा खोद कर दफना दिया और ऊपर आसन लगा कर बैठ गये और कहने लगे कि इन किताबों ने मेरा दिमाग खराब कर दिया था। अब बुल्ला कहने लगा :—

"इको अलफ तेरे दरकार।
इलमों बस करी ओ जार ॥"

बात तो समझने को होती है जिसकी समझ में वो आ जाये तो उस की भटकना दूर हो जाती है। जैसे लिखा है :—

"भटका फिरता जग में प्राणी देख देख हर्षायाई।
कदी न सोच विचार कीती, व्यर्था जन्म गवायाई ॥"

अर्थात बहुत से लोग दर बदर जाने से भटक जाते हैं जैसे जमुना गये जमुना दास, गंगा गये गंगा दास। रुहानियत मण्डलों को महापुरुषों ने अपनी

भाषा, शैली और बाणी के मुताबिक ही कहा है। बहुत से लोग बाणी शैली और भाषा के जाल में ही फस जाते हैं लेकिन बीच में जो यथार्थ सत्य है तो एक ही है। उसे महापुरुषों ने अपनी अपनी बोली में किसी ने राम, किसी ने God, किसी ने ईश्वर किसी ने रहीम, किसी ने कृष्ण, किसी ने सतनाम, किसी ने वहेगुरु और किसी ने पारब्रह्म आदि नामों से पुकारा है। यह सभी नाम उसी प्रमात्मा के रखे हुए हैं वो है तो एक ही। जैसे एक ही व्यक्ति को कोई पिता, कोई एक बापू, कोई डैडी और कोई पापा कहता है इतना नाम लेने से वो तो नहीं बदला, वो तो वही रहा लेकिन भाषा में भिन्नता जरुर है। इस लिए जो इश्वर तत्व से भजते हैं वही विचार शील और पहुंचे हुए हैं क्योंकि उन का सम्बन्ध उस नूर से होता है जिसे लिखा है :—

"नूरो नूर प्रीतम नूरो प्रीतम।
समझन वालिया ने इष्ट समझ लेना।
भावे मोहन कहलो, भावे श्याम कहलो।
नियत बिच है भाव यह प्यार वाला।
भावे राम कहलो, भावे सलाम कहलो।
नावां सारियां विच न ओहदा नाम कोई।
इस लई ओहदा कोई भी नाम कहलो।
सारियां बोलियां नू ओह जानदा है।
वाहेगुरु अल्ला भावे God कहलो।
ऐसे प्रेम दे रंग विच रंगियां जो।
ओहना समझेया ठीक जरुर प्रीतम।
अन्दर बाहर ओहनूं प्या नजरी आवे।
नूरो नूर प्रीतम, नूरो नूर प्रीतम।"

प्रभु प्रेमियों उस सत्य अथवा खुदा के नूर को जानने के लिए सुर्त को पिण्ड देश से ब्रह्मंड में ले जाना पड़ता है यहां से रुह आई है, उस निज धाम अथवा निज घर को प्राप्त करने के लिए महापुरुषों ने सुलभ उपाय बताये हैं। सभी अनुभवी महापुरुष कल्याण के लिए एक ही बात कहते हैं शब्दों में भिन्नता जरुर होती है। हम को चाहिए कि अक्षर का बोध छोड़ कर उस सत्य का बोध करे। महापुरुषों ने अपने अपने शब्दों में भिन्न जैसे सहज योग अथवा राजयोग सुर्त शब्द शब्द योग, प्राण अपान, पराबाणी अजपा जाप, निरन्तर

अभ्यास के तरीके बताये हैं उन बातों को समझ लेने से सहज कल्याण, परम सुख परम शान्ति, परम आन्नद अथवा मोक्ष होता है।

सुर्त शब्द में धारण करने से हो अथवा जुड़ने से योग पूरा होता है योग का मतलव ही जुड़ना है। वास्तव में दो वस्तुओं का एक होना ही योग है जैसे जीव और ब्रह्म का मेल, आतमा-प्रमात्मा की ऐकता सुर्त और शब्द का जुड़ना यह सभी योग है इसी भेद के जानने वाले को योगा कहा जाता है चाहे वो पढ़ा ही चाहे वो अनपढ़, चाहे स्त्री हो चाहे पुरुप, चाहे ब्राह्मण हो चाहे क्षत्रिय, चाहे वैश्य हो चाहे शूद्र। रूहानियत इलम को जान लेने पर यह सब बातें जात पात, मत महजब साम्प्रदाय आदि खत्म हो जाते हैं :—

"न तू रहा न मैं रहा, जो रहा सो बेखबरी।"

इस स्थिति को प्राप्त कर लेना ही जन्म मरन, आवागमन के चक्कर से छूटना है। जो गुरमुख भक्त एक निष्ठा, पूर्ण विस्वास रख कर सुर्त शव्द, पराबाणी शब्द ब्रह्म का निरन्तर अभ्यास करता है उसी को उस परम ज्योति का निरन्तर अनुभव होता है। जब सुर्त पिण्ड देश से निकल कर ब्रह्मण्ड देश में जाएगी तब, वहां एक अजब नजारा मिलेगा। जैसे लिखा है :—

"सुर्ती को समेट प्यारे, देखेगा अजब नजारे।
खुल जानगे भेद सारे, आया में आप समायेगा।"

पहले इस बात को अच्छी तरह समझो फिर करो। देखो! महापुरुषों ने शरीर के दो हिस्से बताये हैं। एक पिण्ड दूसरा ब्रह्मण्ड यानि एक काल दूसरा दयाल, भौंहो अर्थात आंखों नीचे वाले भाग को काल देश के नाम से पुकारा जाता है और आंखों के ऊपर वाले को दयाल देश कहा गया है जिस जीव की सुर्त का देश को छोड़ कर दयाल देश में प्रवेश करती है वो निश्चय जानो अमर लोक दयाल देश परम पद धुर धाम, निजघर मुक्ति को प्राप्त होगा जिन रूहों को निरन्तर अभ्यास मिल चुका है उनको भला दर बेदर भटकने की क्या जरुरत? महापुरुप कहते हैं :—

"एक ही दर काफी है तेरे सिजदे के लिये।
फिर दर बेदर भटकने से क्या मतलब।"

केवल शब्दों में भिन्न-2 नाम कहे गए हैं। आदमी भिन्नता की ओर चला जाता है और सत्य तत्व को छोड़ देता है। बस यही भारी कमी है। इन्हीं भारी कमियों को दूर करने के लिए सतसंग भजन अभ्यास किया जाता है

भु प्रेमियों सहज समाधि लगाने से निरन्तर उस परम ज्योति का दर्शन होता हां से सुर्त का काल देश से छूटना है और दयाल देश में जाना है। शब्दों को उसी को किसी ने कहा है कि माथे में देखो, किसी ने कहा है त्रिकुटि में ध्यान जमाओ, किसी ने कहा है सुर्त के अन्दर ले जाओ, किसी ने कहा है खोपड़ी में घुस जाओ, किसी ने कहा है पिण्ड छोड़ कर ब्रह्मण्ड में चले जाओ और किसी ने कहा है सुत को छोढ़ सयासु में चले जाओ और किसी ने कहा है कि काल को छोड़ दयाल में जाओ इन सभी बातों का मतलब तो एक ही है सिर्फ बोली और भाषा शैली में ही अन्तर हुआ न कि उस सत्य वस्तु में। फिर दर बेदर सिर पटकने से क्या मिलेगा। महापुरुषों ने कहा कि :-

"एक भरोषा एक बल, एक आस विश्वास।
स्वाति बूंद रघुनाथ है, चातक तुलसीदास॥"

दरबार साहिब में और भी लिखा है :-

"ऐको सिमरिये नानका, जल थल रहे समाये।
दूजा काहे को सिमरिये, जमे ते मर जाये॥"

अर्थात् गुरबाणी में यह दर्शाया है कि जिस जीव का एक दर, एक भरोसा एक इष्ट रहे वो ही मुक्ति को प्राप्त करता है। जो इष्ट को बदलता है और दर छोड़ कर बेदर जाता है वो जन्म मरण के चक्कर में ही आता रहता है कभी भी छुटकारा नहीं होता है। बहुत से लोग तो प्रभु के नाम पर भी शंका करते हैं हमारा नाम बड़ा है कि और तुम्हारा छोटा है। ऐसे लोग इन चक्करों में पढ़े रहे हैं कि यह इष्ट छोड़ दे और दूसरे को अपना ले। उन से कोई बड़ा सा मन्त्र ले ले। ऐसे निकम्मे और कच्चे जीवों की आत्मिक उन्नति और रूहानियत तरक्की कभी नहीं हो सकती चाहे सिर जगह-जगह क्यों न पटके। ऐसे लोगों की स्थिति कभी नहीं बन पायेगी। इन लोगों की हालत ऐसी होगी जैसे कि मैं एक निम्नलिखित दृष्टान्त में एक गुरु के चेले की हालत का वर्णन कर रहा हूं। दृष्टान्त :-

एक व्यक्ति ने गुरु जी से नाम लिया और गुरु जी ने उस व्यक्ति को शब्द ब्रह्म का भेद बता कर सभी पचड़ों से मुक्त कर दिया और कहा कि तुम इस निरन्तर अजपा जाप का सुमरण करते रहो। वह व्यक्ति कुछ समय तक शब्द ब्रह्म का जाप करता रहा और एक बार जब वह भ्रमण करने के लिये बाहर निकला तो रास्ते में कुछ साधुओं की मण्डली बैठ कर 12 अक्षरों का

जाप कर रही थी। महात्मा लोगों में यह प्रचार कर रहे थे कि 12 अक्षरों का जाप ही मनुष्य को पार कर सकता है तब उस व्यक्ति के मन में शंका हो गई कि मेरा नाम तो छोटा है और यह तो 12 अक्षरों का जाप कर रहे हैं। इसी लिये मैं भी पार नहीं होऊंगा। वहां से लौट कर वह सीधा गुरु जी के पास गया और कहने लगा कि गुरु जी आप ने तो मुझे छोटा सा नाम दिया है इसी लिये अब मुझे कोई बड़ा सा नाम बताओ। गुरु जी ने कहा अरे पगले नाम भी कोई छोटा बड़ा होता है आप को कैसे शंका हो गई है तब उस व्यक्ति ने गुरु जी को बताया कि जब मैं भ्रमण के लिए निकला था तब कुछ साधु 12 अक्षरों का जाप कर रहे थे और कह रहे थे कि 12 अक्षरों का जाप ही पार कर सकता है। गुरु जी नाम छोटा बड़ा है तभी तो वे महात्मा लोग कह रहे थे तब गुरु जी ने कहा कि जाप छोटा बड़ा नहीं होता है हर परम तत्व शब्द ब्रह्म एक जैसा ही होता है। जब वो व्यक्ति नहीं माना तो गुरु जी ने सोचा कि अब यह भटक गया है अर्थात् भ्रमित्व हो गया है इसी लिये अब यह सतसंग से नहीं समझेगा। कोई प्रत्यक्ष घटना दिखाने पर ही यह समझेगा। गुरु जी ने कहा कि बेटा नाव लाओ। उस नदी के पार जा कर तुम्हारे को बड़ा सा मन्त्र बतायेंगे। चेले ने मलाह को कहा और नाव लाई गई। तब गुरु जी ने नाव को देख कर कहा कि यह नाव तो लम्बी है। चेला दूसरी नाव ले आया तब गुरु जी ने कहा कि यह छोटी फिर चेला तीसरी नाव और ले आया तब भी गुरु जी ने कहा कि इसके फटे टूटे हुए हैं। इसके बाद चेला चौथी नाव लेकर आया तब गुरु जी कहा कि इस की कीलें निकली हुई हैं। इस प्रकार चेला जो भी नाव ले कर आता गुरु जी उसी में कोई न कोई नुक्स निकाल ही देते। अन्त में चेला तंग आ कर कहने लगा। गुरु जी मैं आप से एक बात पूछूं आप ने पार होना है या नावों को देखना है तब गुरु जी कहने लगे भाई ! हम ने पार होना है। चेला कहता है गुरु जी आप जिस नाव पर बैठोगे वही नाव आप को पार ले जायेगी छोटी, बड़ी और चौड़ी से क्या मतलब तब गुरु जी ने चेले को कहा कि अरे पगले मैंने तो यह सब आप का भ्रम दूर करने के लिए ही किया है। जिस प्रकार हर नाव भवसागर से पार कर सकती है। उसी प्रकार प्रभु का हर नाम भी सागर से पार कर सकता है। तुम को छोटे बड़े से क्या मतलब है। चेले का भ्रम दूर हो गया और विश्वास पूर्वक भक्ति करने लगा। प्रभु प्रेमियों सनातन प्रक्रिया के अनुसार हमारे धर्म ग्रन्थों में भगवान् के दो रूप बताये हैं एक निर्गुण दूसरा सर्गुण। सर्गुण भक्ति

ा विषय है और निर्गुण ज्ञान का विषय है। स्थिति बनने पर सर्गुण निर्गुण
क हो जाते हैं यानिकि भक्ति और ज्ञान में कोई अन्तर नहीं रह जाता है।
गर कोई अन्तर समझता है तो वो अज्ञानता के कारण है। सुलझे हुए
हापुरुषों ने कहा है कि :-

'ज्ञान ही भक्ति नहीं कछु भेदा।"

क्ति की स्थिति ऐसे होनी चाहिए कि वो सब जगह और सब में अपने इष्ट
ो ही देखे और ज्ञानी को चाहिये कि वो सब में अपनी ही आतमा जाने। जैसे
ी स्वामी तुलसी दास जी ने रामायण में लिखा है :-

"सिया राम में सब जग जानि।
करहू प्रणाम जोर युग पानि ॥"

ब लो ज्ञान के विषय की बात ? शास्त्र यह कहता है :-

"आतमवत सर्व भूतेषुयो पश्यति सः पण्डित।"

अर्थात् ज्ञानी उसे कहते हैं जो अपने जैसी आतमा सब में जानने वाला
होता है। प्रभु प्रेमियों ज्ञानी और भक्त इसी तरह स्थिति मैं एक हो जाते हैं
फिर यह झगड़ा खतम हो जाता है कि भक्ति बड़ी या ज्ञान बड़ा, निर्गुण
बड़ा या सर्गुण बड़ा। बनानी तो स्थिति है। असली स्थिति को वही प्राप्त
करता है जो प्रथम भक्ति को अपनावे। जो लोग सर्गुण की निन्दा करते हैं
समझो उन के पल्ले ही कुछ नहीं है और उनकी संगत ही नहीं करनी
चाहिये। उनकी संगत करना महान पाप है। महापुरुष तो वो होता है जो
सर्गुण और निर्गुण का समन्मय करे। भक्ति और ज्ञान को एक जाने तभी
जीव अपने लक्ष्य तक पहुंचता है अन्यथा नहीं। अगर कोई कहे कि सर्गुण
की पूजा जड़ पूजा होती है और जड़ पूजा करने वालों की जड़ समाधि लगेगी
और वह जन्म-मरण में आयेगा केवल चेतन की उपासना करने वाला
जन्म-मरण से छूट सकता है। परन्तु कहने वाले को यह तो पता ही नहीं कि
सर्गुण को चेतन से पकड़ा जाता है। जैसे मिसाल के रूप से बच्चे स्कूल
पढ़ने के लिए जाते हैं, उनका मास्टर बच्चों को बोर्ड पर निर्गुण शब्द का
बोध कराने के लिए सर्गुण अक्षर आ, ई लिख कर बताता है कि यह आ है
वो ई है। जो बच्चा उस का आधार बना ले, श्रद्धा जमा ले वो विद्यार्थी
निर्गुण अक्षर को जरुर पकड़ लेगा और समझ भी जायेगा। इस प्रकार
जो उस सर्गुण अक्षर को नहीं मानता है वह उस निर्गुण शब्द से वंचित रह

जायेगा गो कि मास्टर जिस हाथ से लकीर खींचता है वो हाथ और लाकीर (अक्षर) नाशवान है लेकिन उन पर विश्वास बना कर और उन नाशवान अक्षरों का आधार बना कर उस सत्य अथवा निर्गुण शब्द को प्राप्त किया जा सकता है बस इसी प्रकार सर्गुण का आधार बना कर ही उस सत्य परम तत्व निर्गुण को जाना जाता है। सर्गुण सत्य का प्रतीक है यानि कि जो ऐसा समझ कर सर्गुण की उपासना करता है वह ठीक है जो ऐसा न समझ कर सर्गुण की निन्दा करता है वह गलत है। ऐसे व्यक्तियों की संगत करना महान् पाप है। प्रभु प्रेमियो ! निर्गुण और सर्गुण को ऐसे समझना चाहिए जैसे बर्फ और पानी। बर्फ ठोस है पानी व्यापक है लेकिन बर्फ पिघलने पर भी पानी बनता है। इस प्रकार सर्गुण उपासना बर्फ की तरह स्थूल है परन्तु निर्गुण हर एक में समाया हुआ है जो कि पानी की तरह दिखाई नहीं देता। सर्गुन को पकड़ने से निर्गुण स्वंय पकड़ा जाता है अथवा सर्गुण से ही निर्गुण को प्रत्यक्ष किया जा सकता है। यह मैं ही नहीं कहता स्वामी राम तीर्थ जी से भी किसी ने यह प्रश्न किया कि स्वामी जी, आप निरगुण को श्रेय नहीं देते बल्कि सर्गुण को श्रेय देते हो। सब कुछ तो निर्गुण है इस लिये आप को निर्गुण को ही भजना चाहिए तब स्वामी जी ने क्या उत्तर दिया कि गुरमुखो ! मैं जो कुछ भी कहता हूं ठीक है। वो कैसे ? स्वामी जी ने एक दिष्टान्त दे कर समझाया जैसे कि हम पृथ्वी का एक टुकड़ा खरीदते हैं उसी टुकड़े के पैसे देने हैं और रजिस्ट्री करवाते हैं परन्तु जमीन के उपर वाला भाग जानि आकाश तो बिना खरीदे ही अपना हो जाता है उस आकाश की न रजिस्ट्री करवानी पढ़ती है, न ही पैसे खर्चने पढ़ते है। इस प्रकार प्रेमी गुरमुखों वो सर्गुण अपासना उस भूमि के टुकड़े की तरह है जो खरीदा गया परन्तु सर्गुण की भक्ति करने से निर्गुण स्वयं प्रत्यक्ष हो जायेगा अर्थात् सर्गुण निर्गुण में बदल जायेगा यानि सर्गुण से निर्गुण अपने आप ही अपना हो जायेगा। विद्वान, पंडित व ज्ञानी पता कौन है जो सब में उस सत्य परम तत्व को समझ कर उपासना करता है वही ज्ञानी है। जो मत मजब के झगड़े में पड़ता है कोई कहता है कि मैं आर्य समाजी हूं, कोई कहता है कि मैं वैरागी हूं, कोई कहता है कि मैं त्यागी हूं, कोई कहता है कि मैं सनातनी हूं इत्यादि ! क्या भगवान् ने इन सभी के माथे पर लिख कर भेजा है कि तू वैरागी है या त्यागी। यह तो यहां पर आकर जीव ने स्वयं मत महजब बना लिये हैं। लेकिन ऐसी बात नहीं है बह सब अज्ञानता की बातें हैं

जिन को सत्य का बोध हो जाता है वो कभी किसी धर्म की निन्दा नहीं करता है बल्कि वो यह समझता है कि मंजिल तो सब की एक है परन्तु पहुंचने के साधन अथवा प्रक्रिया अनेक हो सकती है। भगवान् किसी मत अथवा महजब के नहीं हैं बल्कि हर मत और महजब उस भगवान् तक पहुंचने का एक रास्ता है। जो सुलझे और समझे हुए महापुरुष होते हैं वे इन पचड़ों में नहीं आते बल्कि हर एक के पचड़े निकाल देते हैं जैसे कि एक दृष्टान्त है कि एक बार स्वामी विवेकानन्द जी मद्रास में प्रचार के लिये गए वहां पर स्वामी जी का एक सप्ताह सतसंग चलता रहा। उनका सतसंग सत्य परम तत्व पर हुआ जिन को सुन कर सारी जनता बड़ी प्रभावित हुई। स्वामी जी का प्रवचन सुनने के लिये काफी संख्या में जनता आया करती थी। जनता में एक राजा भी सतसंग सुनने के लिये आता था जो कि आर्य समाजी ख्याल का था। वो भी स्वामी जी का सतसंग सुन कर बड़ा प्रभावित हुआ कि यह कितने महान महापुरुष हैं जो कि किसी भी मत महजब की अथवा धर्म की निन्दा नहीं करते केवल उसी सत्य परम तत्व का प्रचार करते हैं। ऐसे महापुरुष तो पूज्नीय हैं। स्वामी जी के भाषण को सुनकर राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने स्वामी जी को अपने घर में भोजन के लिए निमन्त्रण दिया। स्वामी जी ने उसका प्रेम भाव देख कर निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और कहा कि अच्छा राजन कल हम पहूंच जायेंगे। लेकिन जब शाम को स्वामी ने सतसंग किया तो मूर्ति पूजा सिद्ध की अर्थात् अवतार वाद पर बोले जबकि पहले सात दिन में उन्होंने निर्गुण तत्व पर प्रवचन दिए थे परन्तु जब राजा ने स्वामी जी का इस समय सतसंग सुना तो उसको बड़ा शंस्य हो गया कि स्वामी जी मूर्ति पूजा भी करते हैं यह तो बहुत नीचे की मंजिल है। वो अपने मन में कह रहा था कि स्वामी जी को कहूं कि स्वामी जी जो आप ने पहले सात दिन सतसंग किया वह तो बहुत अच्छा था परन्तु जो आज का सतसंग किया वह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा जिस को सुन कर मन बड़ा दुःखी हुआ क्योंकि वह आर्य समाजी था यानि मूर्ति पूजा को नहीं मानता था। स्वामी जी ने तब कहा हे राजन तुम्हारे को जो अच्छा लगा है उसी पर विचार करो। मैंने तो सभी बातें ठीक ही कही हैं केवल तुम्हारे समझने में अन्तर है। अच्छा कोई बात नहीं जब कल तुम्हारे आयेंगे तब तुम्हारा शंस्य दूर करेंगे। यह बातें सभी जनता ने भी सुनी कि कल स्वामी जी ने इस प्रश्न को हल करना है।

राजा ने स्वामी के लिए एक बड़े से हाल में सुन्दर सा आसन

लगाया। जब स्वामी जी पधारे तो उसी हाल में बहुत सी जनता जुट गई क्योंकि वो राजा तो था ही। उसी समय स्वामी जी का ध्यान एक दीवार पर गया यहां पर उसी राजा की फोटो लगी थी स्वामी जी ने किसी को कहा कि अरे भक्त जरा उस तस्वीर को नीचे उतारना। भक्त ने राजा की तस्वीर उतार कर स्वामी जी को दे दी। स्वामी जी ने वो ही फोटो पकड़कर नीचे फर्श पर मार दी। उसी समय राजा सहित प्रजा आश्चर्य में पड़ गई। उनकी प्रसन्ता निराशा में बदल गई। सभी मन में सोचने लगे कि आज स्वामी जी के दिमाग को क्या हो गया? कोई बूटी तो नहीं उलांघ आये। प्रजा कहने लगी कि इतने बड़े राजा की फोटो नीचे फैंक दी। इतने में स्वामी जी ने कहा कि कोई भक्त आगे आओ और इस फोटो पर डंडे लगाओ, जब कोई न आया तो स्वामी जी ने कहा कि हे राजन, तुम्हारा कोई अनुयायी इस फोटो पर डंडे मारने के लिए नहीं आता क्या बात है? जब राजा ने कहा कि स्वामी जी जनता जानती है कि राजा की फोटो है भला डंडे लगाने की किस में हिम्मत है, कोई ऐसा नहीं कर सकेगा। स्वामी जी ने कहा कि हे राजन यह तो फोटो है राजा की। परन्तु राजा तो कुर्सी पर बैठे हैं फिर राजा ने कहा कि स्वामी जी यह फोटो है लेकिन किस की राजा की। जिस से सभी भय खाते हैं। तब स्वामी जी ने सारी प्रजा तथा राजा को समझाया कि जैसे सारी जनता राजा की फोटो को डंडे लगाने से डरती है क्योंकि सभी समझते हैं कि इस फोटो में हमारे राजा विद्यमान हैं। ऐसे ही हम भी फोटो की पूजा थोड़े करते हैं बल्कि उस फोटो में चेतन सता को समझ कर पूजा की जाती है। तब कहीं राजा सहित प्रजा का शंस्य दूर हुआ और वह राजा आर्य समाजी होते हुए भी स्वामी विवेकानन्द जी का शिष्य बन गया? प्रभु प्रेमियों जो लोग ज्योति अथवा तत्व से सम्बन्ध रख कर साधना करते हैं उनकी भक्ति अथवा जीवन की उन्नति, रुहानियत की सफलता दिन प्रति दिन होती है।

महापुरुष और वेद शास्त्र गलत नहीं है। गलत वो ही है जो भक्ति को समझ कर नहीं करता है जैसे लिखा :—

"वेद कतेव न झूठे, झूठा कौन जो न विचारे।"

आज कल योग Theory मैं तो महान बन जाते हैं परन्तु परेक्टीकल (Partical) में अधूरे रह जाते हैं। यदि एक जीवन में कमी रह जाती

और वह जीव कहीं भी जायेगा उनकी कमी साथ ही रहेगी। उनका क्या हाल होगा ? इधम तीर्थम, उधम तीर्थम" यानि "गंगा गए गंगा राम, जमुना गए जमुना दास" बहुत घरों का महमान भूखा रहता है।" जगह-2 भटकने वाला प्राणी कभी मोक्ष को प्राप्त नहीं होता । सभी शास्त्र अथवा सभी महापुरुष उस सत्य परम ज्योति के लिए ही कहते हैं । वो ज्योति सब के भीतर है फिर बाहर अथवा जगह-जगह भटकने से क्या मतलब ? जैसे लिखा भी है :-

"घट में है उजियारा साधो, घट में है उजियारा रे।
पास बसे और नजर न आवे, बाहर फिरत गवारा रे॥
बिन सतगुर दे भेद न जाने, कोटि जतन कर हारा रे।
आसन पद्धम बांध कर बैठो, उल्ट नैन का तारा रे॥
त्रिकुटि देश में ध्यान लगाओ, देखो खेल अपारा रे।
न सूर्य न चांद चांदनी, न बिजली चमकारा रे॥
जगमग ज्योति जगे, निश वासर पार ब्रह्म विस्तारा रे।
जो जोगि जन दर्शन पावे, उगड़े मोक्ष द्वारा रे॥
ब्रह्मानन्द सुनो यह अबधो, वो है देश हमारा रे॥

प्रभु प्रेमियों ! मोक्ष अथवा अपने निज देश को प्राप्त करने के लिए शास्त्र और गुरु की बताई युक्ति अनुसार, दृढ़ पूर्वक श्रद्धा अनुसार निष्टा रख कर नाम का अभ्यास करें। आज लोग अभ्यास तो करते नहीं हैं अनेक तरह की किताबें पढ़ कर पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। बातों बातों में ही इतने हुशियार बन जाते हैं और लोगों को ऐसे भड़काते हैं अरे तुम जाप क्या करते हो अन्दर सीधे ज्योति का ध्यान करो लेकिन उनके पल्ले तो कुछ होता नहीं और दूसरों का भी अहित कर देते हैं। जैसे लिखा है :—

जुवां से बात करने में हुशियार हर एक काफी है।

मगर रखता है कोई, गुफतार पर रफतार काफी, ऐसे लोगों से बच कर रहना चाहिये, धारणा एक होनी चाहिये, इष्ट एक होना चाहिये तब कहीं साधक अपनी मंजिले मकसूद पर पहुंचता है । देखो प्रभु प्रेमियों शरीर छूटने पर आदमी नहीं छूटता अथवा मुक्त नहीं होता। मुक्त तब होता है जब जीव जीते जी तीनों शरीरों से छूट जाये। शरीर तीन किस्म के होते हैं। स्थल सूक्ष्म और कारण। स्थल शरीर पच्चीस तत्वों करके रता हुआ है यानि एक एक तत्व की पांच पांच वस्तुयें मिली हुई हैं । । आकाश के

पांच तत्व हैं काम क्रोध लोभ, मोह हंकार। पवन के पांच तत्व हैं दौड़ना, उछलना, पसरना, सकोचना, हिलना यानि फिरना। अग्नि के पांच तत्व हैं काम, भूख, प्यास, नींद, आलस क्रान्ति शगल। जल के पांच तत्व हैं खून, वीर्य कफ, पेशाब, पशीना। पृथ्वी के पांच तत्व हैं हड्डी, गोश्त, चर्म, नाड़ी, रोम यानि बल है। इन पच्चीस प्रकृतियों से जो मुकम्मल है उस को स्थूल शरीर कहते हैं। सूक्ष्म शरीर 17 तत्वों से रचित है। पांच ज्ञान इन्द्रियां यानि नाक, कान, आंख, जबान, खाल और पांच कर्म इन्द्रियां यानि हाथ, पांव, गुदा लिंग और वाक। पांच प्राण यानि प्राण- अपान, व्यान-उदान, समान और दो अन्ताकरण यानि मन और बुद्धि। इन 17 के मजमूआ समूह को सूक्ष्म शरीर कहते हैं। कारण शरीर यह एक मरकजे नूर प्रकाश केन्द्र होता है। उस शरीर में मिस्ल समान सूक्ष्म शरीर से हवास जुदा गान नही होते सिर्फ एक ही कुव्वते हिस होती हैं जो कुल हवास का काम देती है। ख्यालात का इनहार इस आलम में अल्फाज शब्दों के जरिये से नहीं होता बल्कि एक शुशनमा खुशरंग खूब सूरत तस्वीर के जरिये से पूरा उदा हो जाता है और यह शरीर और शरीरों की बुनियाद अदम व खजाना है। इन तीन शरीरों के मुताबिक तीन अवस्थायें भी हैं। जागृत स्वपन और सुषुप्ति जब चौदह त्रिपुटि यानि इन्द्रिय विचार अन्ताकरण काम करे यानि चित की वृति इन्द्रियों को लेकर बहिमुख हो। उसको जागृत अवस्था कहते हैं। इस का ताल्लुक स्थूल शरीर से है। जब सूक्षम शरीर जो 17 तत्वों से बना है मौजूद हो जाने चित-वृति, तन्मत्राओं को लेकर ऊर्ध्व-धातु अन्तर मुखी मन में फिरती है उसको स्वपन अवस्था कहते हैं।

जब स्थूल व सूक्ष्म समाज अज्ञान में लय हो कर केवल आनन्द घन अवस्था में रहे वह सुषुप्ति अवस्था है। जब इन्सान सोता है और स्वपने में जाता है तो उसका स्थूल शरीर बेकार हो जाता मगर अपनी तमाम पिछले दिन की खवाहिशात और अफआल कर्मो के मुताबिक तरह 2 के स्वपने देखता है। जब इंसान मरता है तो उसका स्थूल शरीर नाश हो जाता है अगर हालते जिन्दगी के अलयाल कर्म जिसमानी व खवाहिशात के मुताबिक सूक्षम शरीर से दुःख या सुख भोगता है इसी को नरक स्वर्ग और ऐराफ के नामों से मौसूस किया गया है। जब हालते स्वपन रफा हो कर स्वपन गिराताही होता है तो सुपने वगैराह मुताबिक नहीं दिखाई देते बल्कि इन्सान को ऐसा आनन्द व सुख मालूम होता है कि जागने पर कहता है कि आज

तो बड़े आराम से सोये। रात एक मिन्ट के बराबर मालूम हुई और बड़ी खुशी हासिल होती है। दूसरे दिन के लिए तरोताजा हो कर मुस्तैद हो और प्राकृतिक आचरण में लगता है। हंकार में तमाम संसार फंसा हुआ है। जीव की पांच अवस्थायें होती हैं। जागृत, स्वपन, सुषुप्ति, तुरिया अतीत। साथ ही इनकी पांच देह है जैसे स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण और कैवल्य। यह सब हंकार के बन्धन के कारण हैं। स्थूल देह का अभिमानी अपने को बड़ा बुद्धिमान समझता है और तमाम कला कौशल का प्रकाशक और सब का ज्ञान बन जाता है मगर जब यह स्वपन अवस्था में प्रवेश करता है तो अक्लमंद से अक्लमंद जीव भी मूर्ख और अज्ञानियों जैसे काम करता है जिस से अल्प बुद्धि वाला जीव भी घृणा करता है तमाम विद्या और धन के अभिमानियों को विचार करना चाहिए कि ज्ञान उनकी जड़ यानि विद्या और धन का दूसरी ही अवस्था मे नाश हो जाता है। तीसरी चौथो अवस्था में उनकी क्या गती होगी। जैसे जागृत अवस्था का हंकार असत्य है वैसे ही स्वपन अवस्था की तमाम समग्री और उनका हंकार मिथ्या है इसी तरह तमाम वस्तुओं के पदार्थ और हंकार मिथ्या है। इन पांच शरीरों के परे छट्ठा परम हंस स्वरुप है जिस में प्राप्त हो कर हंकार नष्ट हो जाता और जीव अपने यथार्थ स्वरुप को प्राप्त हो जाता है।



।। मानव का रक्षक अपना धर्म ।।

प्रभु प्रेमियों ! हम सब की रक्षा करने वाला हमारा अपना धर्म है। जो मनुष्य धर्म को त्याग कर अपना ध्येय धन समझ बैठता है यानि धर्म दे कर धन कमाता है वो मनुष्य, मनुष्य नहीं है उसका जीवन पशु से भी निकृष्ट है। मनुष्य उसे कहते हैं जो मानव धर्म को प्राप्त करता है। सभी शास्त्र भी यह कहते हैं .

"धर्मो रक्षति रक्षता।"

अर्थात जो धर्म की रक्षा करता है। धर्म भी उसकी रक्षा करता है और जो धर्म को मिटाता है वह खुद ही मिट जाता है। एक दृष्टांत है कि एक समय का जिकर है भगवान श्री कृष्ण दुर्योधन को धर्म का उपदेश देते हुए कहने लगे कि दुर्योधन, राज्य तुम ले लो और पांच गांव पांडवों को दे दो इस वक्त तुम्हारा यही धर्म बनता है। दुर्योधन बोले "सूई अग्र भागे न दातव्यम्"

अर्थात आप तो पांच गांव कहते हैं मैं तो सूई की नोक के बराबर जगह देने के लिए तैयार नहीं हूं तब कहीं भगवान कहने लगे दुर्योधन यह तेरा धर्म के विरुद्ध आचरण है। यह धर्म नहीं कहलाता तो दुर्योधन बोला :

" जानामि धर्मो न च मेवप्रवृति।"

अर्थात दुर्योधन कहता है कि मैं धर्म को भी जानता हूं लेकिन मेरी प्रवृति धर्म में नहीं लगती यानि मेरी बुद्धि धर्म का आचरण नहीं करती। उस समय भगवान कृष्ण जी बोले यह भी पाप है, तब दुर्योधन कहने लगा कि "जानामि पापम् न चमे निवृत्ति" अर्थात पाप की तरफ से मेरा छुटकारा नहीं होता। तब भगवान् बोले कि तुम मनुष्य हो इस लिए मनुष्य होने के नाते अगर धर्म में आचरण न करके पाप में ही रत रहोगे तो विनाश होगा। तब दुर्योधन बोला देखा जायेगा। आज भी बहुत से लोग संसार में है जो कि दुर्योधन जैसी बुद्धि रखते हैं और कहते हैं कि हमें सन्त दर्शन, सतसंग अथवा शास्त्र के उपदेश से कोई लाभ नहीं मिला। समझो ऐसे लोग दुर्योधन के ही भाई

हैं। सन्त दर्शन, सतसंग अथवा शास्त्रों का उपदेश उन्हीं को फलीभूत होता है जो आस्तिक बुद्धि वाले हों। नास्तिक अथवा मूर्ख बुद्धि वालों को नहीं। संसार में एक तो षट्ठ बुद्धि वाले व्यक्ति होते हैं और दूसरे मूर्ख बुद्धि वाले। षट्ठ और मूर्ख में बड़ा अन्तर है। षट्ठ बुद्धि वाले सतसंग के द्वारा सुधर जाते हैं मूर्ख बुद्धि वाले दुर्योधन की तरह वंचित रह जाते हैं। मैं नहीं कहता गो स्वामी तुलसीदास जी कहते हैं:

"षट्ठ सुधरे सत संगत पाई।
पारस परस कुधात सोहाई।"

अर्थात षट्ठ बुद्धि वाले लोग वो होते हैं जो अपनी बुद्धि से नहीं, बल्कि शास्त्र और संत वचन अथवा सतसंग से धर्म आचरण कर लेते हैं, वो सुधर जाते हैं। मूर्ख वो होते हैं जो सतसंग और संत वचन को नहीं मानते बल्कि ढोंग समझते हैं और अपने आप को समझदार समझते हैं, ऐसे व्यक्ति कभी नहीं चेत सकते। जैसे लिखा है कि :

"मूर्ख हृदय न चेतहि, गुरु मिले विरंचि सम।"

अर्थात मूर्ख का हृदय का कभी नहीं चेत सकता चाहे गुरु साक्षात ही ब्रह्म के तुल्य क्यों न हो। बहुत से लोग प्रश्न कर देते हैं कि हमने तो बीस साल गुरुजनों की संगत की, सतसंग, वचन सुने और सेवा भी की। लेकिन हमारे पल्ले अभी तक कुछ नहीं पड़ा यानि शान्ति नहीं मिली तो वह सतसंग या गुरुजनों का दोष थोड़ा है। यह दोष तो नीजि उनका है जैसे किसी जंगल में चन्दन का पेड़ होने से आस-पास के सभी पेड़ों से चन्दन की सुगन्ध आने लगती है परन्तु बांस का पेड़ पास होने पर भी वैसा ही रहता है उस से चन्दन की सुगन्ध नहीं आती। यह कसूर चन्दन का थोड़ा है, बांस का अपना ही है। फल तो जीव को अपनी श्रद्धा का होता है। कल्याण अथवा भक्ति के रास्ते में सब से बड़ी आवश्यकता श्रद्धा और विश्वास की होती है। बहुत से व्यक्ति तर्क कर देते हैं कि जो जलता दीपक हो तो दूसरे दीपक को जला सकता है और जो स्वयं ही बुझा हो वो दूसरों को क्या जलायेगा। तात्पर्य यह है कि उन लोगों में बेहूदा तर्क ही तर्क है। वो अपने इष्ट अथवा गुरुजनों पर श्रद्धा विश्वास तो रखते नहीं, दिखावे की भक्ति में लगे रहते हैं उल्टा महापुरुषों को दोष देते हैं अरे! इनकी संगत से तो हमारा कुछ नहीं बना, जिन का अपना ही ज्ञान दीपक नहीं जला वो हम को रोशनी कैसे देंगे।

लेकिन वो मूर्ख जलते दीपक के पास तो आये परन्तु श्रद्धा रूपी बत्ती और विश्वास रूपी तेल साथ तो लाए नहीं फिर दीपक का क्या दोष ? यानि महा-पुरुषों का क्या दोष ? "गुरु बेचारा क्या करे जब हृदय भया कठोर"

ऐसे महादुष्टों की संगत में कभी नहीं आना चाहिए बल्कि बच कर रहना चाहिए क्योंकि उनका यह हाल है कि वह आप तो डूबते ही हैं साथ दूसरों को भी डुबा कर छोड़ते हैं। गो स्वामी तुलसी दास जी ने कहा है :—

"दुष्ट संग यानि देहि विधाता।
बरु बल वास नरक करि त्राता"

अर्थात स्वामी जी कहते हैं कि मुझे नरक में भले ही भेज देना परन्तु दुष्ट का का संग न देना। और भी लिखा है :—

"जाके प्रिय न राम विदैही
सौ त्यजियों कोटि बेरी सम यदपि परम सनेही।"

अर्तथ जिस के हृदय में भगवान् की प्रीती नहीं है अथवा भगवान की भक्ति से प्यार नहीं है उन को करोड़ बैरीयों के तुल्य समझना चाहिए। चाहे वो कितना भी स्नेही क्यों न हो। जैसे प्रह्लाद को पिता, वभीषण को भाई, भरत को माता तथा बलि को गुरू त्यागने पर भी पाप न लगा बल्कि वे सब मंगल को प्राप्त हुए। इस लिए प्रभु प्रेमियों ! भक्ति निष्ट्ठा पूर्वक करनी चाहिये तभी हम जीवन को आदर्श बना सकते हैं अथवा धर्म के रास्ते पर आगे वढ़ सकते हैं। संसार में बड़ा व्यक्ति वो ही माना है जो धर्म को महत्व देता है।

धर्म ही मुख्य है बाकी संसार में सभी पदार्थ गौण है। खाना, पीना चलना, फिरना, सोना, जागना संसार की वासना को प्राप्त करना यह पशुवत जीवन है। मैं नहों कहता शास्त्र कहता है :-

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहि तेषाम् मधु को विशोषो धर्माणहीना पशु भिसेमानाम्॥

प्रभु प्रेमियों इन बातों का विचार करते हुए पशु वृत्ति को त्याग कर मानवता अथवा ज्ञान को प्राप्त करनी है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए

सतपुरूषों की संगत श्रद्धा युक्त करनी चाहिये जैसा लिखा भी है :—

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ज्ञानात् देवत्य कैवल्यम् ।

अर्थात् संत जनों अथवा सतसंग की शरण जो जीव श्रद्धा विश्वास रख कर जाता है उन्हीं को ज्ञान प्राप्त होता है । श्रद्धा हीन जीवों को नहीं । जैसे पक्षी केवल दो पर सही सलामत होने से ही आकाश को उडारी सुलभ मार सकता है ठीक उसी प्रकार साधक रूपी पक्षी के दो पर श्रद्धा और विश्वास है ।

जिन का श्रद्धा विश्वास परिपक्क हो जाता है बस उनको चलते फिरते संसार में रहते हुए मोक्ष अथवा निज धाम की प्राप्ति हो जाती है । साधक को चाहिये कि गुरु बचनों पर श्रद्धा, ईश्वर पर विश्वास, अपने पर भरोसा रखे । ऐसा साधक कभी नहीं भड़क सकता बल्कि अपनी मंजिले मकसूद पर अवश्य पहुंच जाता है ।

जो अपने धर्म के रास्ते से पथ भ्रष्ट हो जाते हैं वे भक्त लोभी अथवा स्वार्थी होते हैं । तब तक उनका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता तो वे अपने इष्ट को त्याग कर और ही रास्ता अपना लेते हैं । ऐसे जीवों की सद्धगति नहीं होती बल्कि अधोगति को जाते हैं ।

प्रभु प्रेमियो ! अधोगति को ले जाने वाली बातें क्या हैं ।

यह :- 1. चोरी 2. हिंसा 3. झूठ 4. दम्भ 5. भेद-भाव 6. इर्षा 8. मद 9. क्रोध 10. काम 11. दुश्मनी 12. शराब 13. व्यभिचार और 14. अविश्वास है । यह सभी चीजें इन्सान को अधोगति में ले जाती है । इन सब का त्याग करके अपने इष्टदेव की शरणगत हो जाना चाहिए ।

मानव के चार पुरुषार्थ हैं । वो कौन से हैं ? अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष । जो मानव सुखी होना चाहता है वह सन्तोष रूपी धन प्राप्त करे । सन्तोषी सदा सुखिया होता है । सब से पहले अपने में मानवता लानी चाहिये । अगर हम में मनुष्तव धर्म नहीं है तो समझो हम मनुष्य होते हुए भी पशु है, जो धर्म को, ईश्वर को, मौत को भूल कर संसार की माया में लिप्त हैं । जो कहते है :—

"एह जग मिट्ठा, अगला किन डिट्ठा ।

ऐसे व्यक्तियों को हम पशु ही कह सकते हैं ? महापुरुषों का कथन है :

"पशु घड़न्ते नर घटे, भूले सींग और पूंछ।
नाम बिना नरके गए, धृग दाढ़ी, धृग मूंछ ॥"

अर्थात मूर्ख लोग घर गृहस्ती के कामों में लगे रहते हैं। असली उद्देश्य को भूल जाते हैं और दुनियां की झूठी माया में फंस कर बेखबरी में ऐसे डूबे रहते हैं मानो ईश्वर से अमर रहने का पट्टा लिखवा लाए हैं लेकिन अज्ञानी मूर्ख जीव यह नहीं जानते कि सिर पर मौत खड़ी है न जाने कब कूच का डंका बजने लगेगा इसको हम भूल जाते हैं। देखो कितनी अज्ञानता की बात है कि जिस ईश्वर के साथ सब कुछ है उसको न चाह कर संसार अथवा संसार की वस्तुओं को चाहते हैं। यही सब से बड़ी भूल है जैसे लिखा है :—

"खुदा को भूल गए लोग फिकरे रोजी में।
निजक का ख्याल है, रिजाक का ख्याल नहीं ॥"

जिस तरह नीचे गिरना या उतरना आसान होता है और ऊपर चढ़ना कठिन। उसी तरह गंदे, मलीन और नापाक विचारों का असर भी शीघ्र होता है क्योंकि वो इन्सान की गिरावट होती है। अच्छे, पवित्र और परमार्थी विचार बड़ी देर के बाद दिल में स्थान पाते हैं क्योंकि वो इन्सान के जीवन को ऊंचा और श्रेष्ठ बनाने वाले होते हैं। यही कारण है कि इन्सान बुरे विचारों और बुरे कर्मों की तरफ जल्दी झुकता है। इस लिए प्रभु प्रेमियो यदि आप हृदय को मालिक के बैठने का स्थान बनाना चाहते हो तो सब प्रकार की झूठी कामनाओं को त्याग कर हृदय को मालिक के बैठने के लिए निर्मल और पवित्र स्थान बनाओ यहां तक कि मोक्ष की भी चाह नहीं होनी चाहिए। देखो भरत जी भी कहते हैं :—

"धर्म न अर्थ न काम रुचि, गति न चाहूं निर्वाण।
जन्म जन्म सिया राम पद, यह वरदान न आन ॥"

प्रभु प्रेमियों बात समझने की है यदि हम ने कल्याण करना है तो किस वस्तु का करना है। शरीर का तो कल्याण होता ही नहीं क्योंकि वह जन्मने मरने वाला है अर्थात नाशवान है लेकिन आत्मा अजर अमर अविनाशी कल्याण

स्वरुप जो कि सदा सत्य है जिस का कभी नाश होता ही नहीं फिर बताओ कल्याण किस वस्तु का करना होगा वो है मन यानि मन का अमन कर देना ही कल्याण है। मैं नहीं कहता बल्कि भगवान श्री कृष्ण जी ने भी अर्जुन के प्रति यहि कहा था। जिस समय अर्जुन ने भगवान जी से प्रार्थना कर रहा था कि प्रभु अब मैं अपना कल्याण चाहता हूं तो उस वक्त भगवान जी ने अर्जुन को कहा था अगर तुम अपना कल्याण चाहते हो तो मन का अमन कर तुम्हारा कल्याण होगा लेकिन अर्जुन ने जवाब दिया था कि मन का अमन करना तो अभी मेरे लिये बहुत मुश्किल है अगर कहो तो समुन्द्र की लहरें रोक सकता हूं पवन का वेग रोक सकता हूं लेकिन मन रोकने के लिये असमर्थ हूं ये मेरे बसकी बात नहीं है।

आप ही मुझ पर कृपा करो तो हो सकता है अन्यथा नहीं तब भगवान जी ने कहा था कि अर्जुन मन का अमन करने का एक उपाय है अभ्यास करो लेकिन वैराग्य सहित।

"मन जीते अभ्यास सो, ओर जतन कोई नाहीं।
जग से वैराग्य कर, यह समझो मन माहि ॥"

लेकिन नाम के अभ्यास में वो ही मन लगाता है जो पवित्र अथवा शुद्ध हो। मन की शुद्धि के लिये सेवा सतसंग, भक्ति उपासना करनी चाहिए लिखा भी है :—

"सतसंग में जाय के मन को कीजिये शुद्ध।
पलटू वहां न बैठिये, यहां उपजे कुबुद्ध ॥"

अर्थात कुसंग का त्याग करके सतसंग धारण करें। सतसंग में ही जीव को ज्ञान अथवा निज नाम का ज्ञान होता है जो सबके अन्दर, हर घट भीतर स्वांस प्रति स्वांस में चौबीस घण्टे निरन्तर चलता रहता है उस निज नाम का निरन्तर अभ्यास करने से जीव को मानसिक शान्ति मिलती है उस आद नाम शब्द ब्रह्म का भेद जानने के लिये संत सतगुरु की शरण जाना पड़ता है जैसे लिखा भी है :—

बिना गुरू के निज ज्ञान नहीं मिलता।
जिस ध्यान से हो मुक्ति, वह ध्यान नहीं मिलता ॥"

प्रभु प्रेमियों जन्म मरण से मुक्त जीव तभी हो सकता है जो प्राणों में शब्द ब्रह्म को गुरु कृपा से जान लेता है। गुरु बाणी में भी नोवे पातशाही गुरु तेगबहादुर जी ने फरमाया है :—

"मन मन्दिर तन भेष कलन्दर, घट ही तीर्थ नावै ।
एक शब्द मेरे प्राण वस्त है, बौहड़ जन्म न आवे ॥"

अर्थात गुरु द्वारा मन मन्दिर में परम ज्योति अवनाशी तत्व, परिपूर्ण प्रमात्मा को प्राण में शब्द से जानने वाला फिर जन्म मरण में नहीं आता। मानसिक शान्ति के लिए जीव को निरन्तर मन का अभ्यास करना चाहिये वाहरी नाम से मानसिक शान्ति कभी नहीं मिलेगी । जैसे लिखा भी है :

बांबी कूटे बांबरे साप न मारियां जाये"

अर्थात सांप तो बिल के अन्दर रहता है। बाहर बिल के ऊपर डंडे मारने से सांप नहीं मरेगा। सांप तो तभी मर सकता जबकि कोई बारीक यानि सूक्ष्म औजार ले कर बिल के भीतर चोट लगावे। ठीक इसी प्रकार मन रूपी सांप तो शरीर रूपी बिल के अन्दर रहता है और हम बर्हिमुख नाम तो बहुत जपते हैं लेकिन मन को शान्ति नहीं होती इतने होते हुए भी बैचेन और अशान्त ही रहते है इसलिए हमें चाहिए अभ्यन्तर अजपा-जाप का मन से अभ्यास करें जिससे परम शान्ति को प्राप्त हो। परम पूजनीय श्री सतगुरु हीरा नन्द महाराज जी ने ईश्वर स्वरुप दर्शन ग्रन्थ में भी फरमाया है कि :-

'सुख शान्ति चाहत यदि, कर अजपा का जाप ।
परम तत्व को पाईये, सोहं आपे आप ।"

और भी कहा है कि :—

स्वासों की कर सुमरणी, कर अजपा का जाप ।
निज धाम को जायेगा, जपे जो सोहं जाप ॥"

प्रभु प्रेमियों मन को स्थिर करने का सहज उपाय अजपा नाम जो स्वांस प्रति स्वांस में मन से निरन्तर होता रहता है जो लोग कहते है कि क्या करें मन भजन में लगता नहीं उन्होंने निरन्तर शब्द-ब्रह्म मन के अभ्यास को पहचाना ही नहीं तो मन कैसे टिके। जैसे एक दृष्टान्त के द्वारा हम समझ

हैं :— एक राजा के दरबार में ऐसा नियम था कि उसके शहर में जो भी वस्तुयें बिकने के लिये आती थी। अगर किसी वस्तु का कोई खरीदार न बने तो राजा को स्वयं खरीदने पड़ जाती थी। एक रोज ऐसा हुआ कि उसी शहर में एक आदमी भूत बेचने आया। तो लोगो ने पूछा कि इसमें क्या गुण हैं तो उन्होंने कहा कि इसको हमेशा काम चाहिये यदि इसको काम न मिला तो यह मालिक को ही खायेगा यह सुनकर लोगों ने लेने से इन्कार कर दिया। कि इस बलाह को कौन गले डाले। आखिरकार राजा को ही खरीदना पड़ा। राजा ने भूत को कठिन से कठिन काम बताये जो काम हजारों वर्षों में होना था वो एक मिन्ट में करके आता है और राजा को कहता काम बताओं नहीं तो में तुझे खाऊंगा राजा को अपने प्राणों की चिन्ता पड़ गई कि मैंने तो वलाह डाल ली है। राजा यह सोच ही रहे थे कि उधर से एक महात्मा आ पहुंचे और बोले राजन ! उदास क्यों हो। राजा ने महात्मा के सनमुख भूत का सारा ही वृतान्त सुना दिया तो महात्मा जी ने कहा कि आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें हम ऐसा काम बतायेगें कि भूत समाप्त हो जायेगा, काम कभी समाप्त न होगा। तब राजा साहब होश में आये तो महात्मा जी के चरणों में नमन करके बोले कि महात्मा जी वो काम बताईयेगा। महात्मा जी उसी समय बोले राजन ! भूत को कहें कि एक बांस लाईये ! राजा ने भूत को हुकम दिया कि एक बांस लाओ वह उसी समय बांस ले आया। महात्मा जी ने कहा कि इसको कहो बांस आगन में गाड़ दो। राजा के कहने पर भूत ने बांस गाड़ दिया। महात्मा जी ने कहा कि राजन ! इसको कहो कि चड़ो और उतरो। राजा ने ऐसा कहा अब भूत ऊपर चढ़ता है तो उतरना बाकी है। अगर उतरता है तो चड़ना बाकी है यह सब काम समाप्त होता नहीं तो वह परेशान होकर बोला राजन ! मुझे इस काम से मुक्त करो। मैं आपकी आज्ञा अनुसार ही चलूँगा जो काम बतायोगे वोही करूंगा लेकिन राजा साहिब ने कहा कि तुम्हारे जिम्मे यही काम है बस अब क्या था यानि वो अब टिकाने पर आ गया। खाली बैठने का मौका ही नहीं।

प्रभु प्रेमीयों यह तो मिसाल हैं लेकिन इसका सार समझना है कि मन ही तो भूत है जो इधर उधर भागता रहता है और हर वक्त व्यक्ति को परेशान रखता है, स्थिर होता ही नहीं इसीलिये जीव महान दुःख में पढ़

जाता है। जब किसी तरह पेश नहीं जाती तो संत सतगुरु कृपा करके म भूत को स्थिर शब्द रुपी बांस हृदय रुपी आंगन में गाड़ देते हैं यानि निरन्त घट भीतर मन का अभ्यास बता देते है। उस अभ्यास को करने से मन इध उधर नहीं जाता और स्थिर हो जाता हैं । तभी मानव आत्मिक उन्नति और मानव धर्म की प्राप्ति कर पायेगा यही मेरा प्रथम विषय था।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति



तीसरा भाग

।। भगवान् का निर्गुण व सर्गुण स्वरूप ।।

प्रिय सतसंगियो हमारे शास्त्रों में सनातन फिलासफी के मुताबिक भगवान् के दो रुप माने गए हैं। एक सर्गुण, दूसरा निर्गुन। सर्गुन स्वरुप भगवान् का भक्ति के द्वारा देखा जाता है। निर्गुण स्वरुप को ज्ञान के द्वारा जाना जाता है। वास्तव में इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है जैसे लिखा है :—

"ज्ञान ही भक्ति नहि कछु भेदा।"

अर्थात् शास्त्र यह कहता है कि ज्ञान ओर भक्ति में कुछ भेद नहीं माना जाता विचारशोल महापुरूष सुर्गुण और निर्गुण को ऐसा समझते हैं जैसे बर्फ और पानी अर्थात् बर्फ पिघलने से पानी ही बन जाता है ठीक इसी प्रकार सर्गुण की उपासना करने से निर्गुण की प्राप्ति होती है।

जैसे मिसाल के रूप में कोई आदमी जमीन का टुकड़ा खरीदता है तो ऊपर का हिस्सा उसे खरीदना नहीं पड़ता। वह बिना खरीदे ही उसका हो जाता है। इसी प्रकार जो भक्त सर्गुण स्वरुप को इष्टमान कर दृढ़ पूवर्क भक्ति करता है तो निर्गुण अपने आप पकड़ में आ जाता है। अपनी भावना के अनुसार भगवान को जिस रूप में ही याद करे भगवान् उस भक्त के भाव की पूर्ति के लिए उसी रुप में प्रकट हो जाते हैं जैसे लिखा है :-

"भक्तों में भुत बन जाता है, वर है तो इतनी हस्ती है।।"

भक्ति और ज्ञान पर ही झगड़ा कर लेते हैं। भक्ति बड़ी है या ज्ञान बड़ा है। वाद विवाद, तर्क-वितर्क में पड़कर किसी भक्त की धारणा को बिगाड़ने की कोशिश करते हैं। यह सब अज्ञानता है और फजूल की बातें हैं। भगवान् तर्क का विषय नहीं है। भाव और प्रेम का विषय है। किसी की बनी हुई श्रद्धा और भावना को तोड़ना महान पाप है चाहे वह कितना भी अपने आप को विद्वान ज्ञानी समझता हो।

भगवान् ऐसे व्यक्ति पर कभी प्रसन्न नहीं हो सकते ? जैसे एक उदाहरण है एक गड़रिया जंगल में भेड़े चरा रहा था और कह रहा था कि मैं दो चार सौ भेड़ों की सम्भाल-देखभाल करने से कितना व्यस्त रहता हूं तो भगवान् का क्या हाल होगा ? वह तो सारे संसार का ही ग्वाला है। बड़ा व्यस्त रहता होगा बिचारे को नहाने की फुर्सत भी नहीं होती होगी। शरीर में धूल जम गई होगी, वस्त्र मैले कुचेले होंगे ऐसी हालत में उसके सिर में जुयें भी पड़ गई होंगी। अगर भगवान तू मेरे पास आ जावे तो मैं तेरे को स्नान कराऊं और वस्त्र साफ कर दूं। सिर में पढ़ी जुयें निकाल दूं। इतने में क्या होता है कि मूसा इस्लाम उधर से निकला वह रोज कोहतूर पहाड़ पर खुदा की नमाज, भजन अभ्याम किया करते थे और नमाज में खुदा के नूर को पाते थे और खुदा से बातें भी करते थे। उस मूसा पैगम्बर ने गड़रिए की सब बात सुनी तो उस को डांट फटकार देने लगा कहा अरे काफिर तू खुदा को ऐसे मैला कुचेला वाला कहता है वो तो नूर है यानि ज्योति स्वरुप उज्जवल अथवा पवित्र है तेरे को पाप लगेगा और तू नरक को जायेगा। इतना कह कर मूसा इस्लाम कोहतूर पर चले गए भजन करने के लिए। इधर गडरिया बेचारा रोता है पछताता है कि मैंने खुदा को कैसे-2 कहा है। मूसा जी कहते हैं कि तुम नरक में जाओगे अब मैं क्या करूं। ऐसे कह रहा था। उधर कोहतूर पर मूसा इस्लाम को आज खुदा के दर्शन नहीं होते तो मूसा इस्लाम बोला है खुदा मुझ से आज कौन सी गलती हो गई है जो आपका दीदार नहीं होता। इतने में मूसा पैगम्बर को खुदा का इल्हास होता है कि मूसा इस्लाम तूने मेरे प्रेमी भक्त भेड़ चराने वाले गडरिये का भाव तोड़ दिया है इस लिए तुम्हारे को आज मेरा दर्शन नहीं हुआ। यदि तुम मेरा दर्शन करना चाहते हो तो जाओ उस गडरिये के पास उस से क्षमा मांगो और जैसा वह मुझे समझता था वैसा ही उसका विश्वास भाव कायम करो क्योंकि कोई जिस रुप में भी याद करता है मैं उससे भाव अनुसार उसी रुप में प्रकट हो जाता हूं। मूसा पैगम्बर झट उठा और गडरिये के पास पहुंच कर उसे कहने लगा कि तुम सच्चे हो मैं झूठा हूं। तुम जैसा खुदा के लिए कहते थे मैंने ठीक इसी तरह मैले कुचैले वस्त्र पहने हुए कुरुप सा चेहरा सिर जुयें पढ़ी हुई, वदन में मिट्टी धूल जमी हुई ऐसी हालत में देखा है उस पहाड़ के पार। मैंने खुदा से पूछा "कि तुम कहां जा रहे हो तो वह कहने लगा

अपने अनन्य प्रेमी गडरिये के पास जा रहा हूं । गडरिया कहने लगा यार मैंने तो अपने कारोबार से अन्दाजा लगा कर ही कहा था कि जब मेरी यह हालत है तो सारे संसार का ग्वाला खुदा है उसका क्या हाल होगा ।

मूसा इस्लाम बोले कि आप बिल्कुल ठीक कहते थे मैं ही गल्त समझता था । उसकी श्रद्धा व भावना ज्यों की त्यों बन गई भगवान् उसके पास उसी रुप में गए और दर्शन देकर गडरिये को कृतार्थ कर दिया । प्रभु प्रेमियो यह कथा सुनाने का मतलब यह था कि भगवान् को भक्त जिस रूप में भी देखना चाहे अपनी भक्ति भाव के अनुसार देख सकता है। शिव रुप में, विष्णु रुप में, देवी रूप में, गुरु रुप में आदि, जिस रुप में चाहे यह तो भक्त की अपनी भावना के ऊपर निर्भर होता है क्योंकि वह सर्व शक्ति मान है। श्री रामायण में भी लिखा है :—

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूर्त तिन देखी तैसी ।"

जो भक्ति के रहस्य को समझ लेता है वह फिर भटकता नहीं है जैसा लिखा भी है "इष्ट देवाय नम:" अर्थात निष्टावान सच्चा भक्त अपने ही इष्ट को सर्व देवता में समझ कर प्रणाम करता है। जैसे गोस्वामी, तुलसीदास जी वृन्दावन गए तो वहां भगवान् श्री कृष्ण जी की मूर्ति के आगे सिर झुका कर बड़े प्रेम से दण्डवत प्रणाम करते हैं तो मन्दिर के पंडित जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी को कहा है :—

" अपने-अपने इष्ट को नमन करे सब कोय ।
इष्ट पराया परसराम नमे सो नीवा होय ।।"

अर्थात् पंडित जी बोले ऐ तुलसीदास अपने-2 इष्ट को दण्डवत प्रणाम करना चाहिये क्योंकि तुम्हारा इष्ट तो राम है, कृष्ण तो मेरा इष्ट है । इस लिए पराये इष्ट को जो प्रणाम करता है अथवा सिर झुकाता है वह नीच भाव का भक्त कहलाता है। गोस्वामी जी पंडित के बचन सुन कर बड़े हैरान हुए कि यह मेरे दिव्य भाव को जानते ही नहीं है मैंने तो अपने इष्ट राम को ही श्री कृष्ण के रुप में समझ कर प्रणाम किया है और यह पंडित जी अभी

खुद अज्ञानी है । की अभी वो स्थिति नहीं बनी जिस के द्वारा अपने इष्ट को सर्व रुपों में जाना जाता है। पंडित जी का भ्रम दूर करने के लिए तुलसीदास जी प्रभु के प्रति कहते हैं :-

"क्या कहू छवि आज भले भये बृज नाथ ।
तुलसी मस्तक तब निवे, जब धनुष बान लो हाथ ॥"

तुलसीदास जी प्रण करते हैं कि हे श्री कृष्ण जी यदि मैं आपकी छवि के दर्शन राम रुप में मानता हूं तो आप के हाथ में धनुष बाण होना चाहिये तब मैं सिर झुकाऊंगा तो होता क्या है भगवान् अपने भक्त के भाव की पूर्ति करते हैं :—

"कित मुरली कित चन्द्रमा कित गोपिन के साथ।
अपने जन के कारने श्री कृष्ण भये रघुनाथ ॥"

भगवान् अपने भक्त की लाज रखने के लिये धनुष बाण धारण करके कृष्ण से राम रुप बन गए यह थी सच्ची भावना और एक विश्वास का फल आज हमें भक्ति में आनन्द क्यों नहीं आता। उसका मतलब यह है कि हमारी धारणा, हमारा विश्वास, हमारी निष्ट्ठा, सारी श्रद्धा पूर्ण परिपक्कव अपने इष्ट पर नहीं बनी है और दुनियां की नाना प्रकार की बातों में आकर हम अपनी भावना तोड़ बैठते हैं। परिणाम क्या होता है कि मन अपने रास्ते से भटक जाता है लिखा भी है :-

"भटका फिरता जग में प्राणी देख देख हर्षाया ई ।
कदी न सोच विचार कीतो व्यर्था समय गवाया ई ॥"
बिन विचारे जो करे फिर पाछे पछताए ।
काम बिगाड़े अपना जगत में होत हंसाए ॥

अर्थात जो लोग बिना विवेक विचार काम करते हैं । मनमुख निगुरे पुस्तक निन्दक चापलूस लोगों की संगत में आ कर भक्ति भावना त्याग देते हैं और मानव धर्म को भुला देते हैं अन्त में फिर पछताते हैं । लेकिन कुछ नहीं बनता, जैसे लिखा है :—

आछे दिन पाछे गए गुरु से किया न हेत ।
अब पछताया क्या करे जब चिड़िया चुग गई खेत ॥

गया वक्त हाथ आता नहीं, सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं।
यहां के नाते यहां रहेंगे, वहां पर नाता न कोई रहेगा ॥

लोक और परलोक दोनों और से वंचित हो कर चौरासी लाख नाना प्रकार की योनियों में पढ़ दुःख भोगता है इसी लिए हम को चाहिए कि कुसंग अथवा नास्तिकों की संगत त्याग कर सतसंगी सत्यपुरूषों की संगत करे जिस से हमारे को ज्ञान हो। जैसे लिखा है :-

संगत ऐसी कीजिए जिस में उपजे ज्ञान।
पल्टू वहां न बैठिये घर को होत यहां हान ॥"

अर्थात् सन्त पल्टू जी कहते हैं ऐसी संगत करो जिस में ज्ञान मिले और वहां पर मत बैठो यहां नाम की निन्दा हो उससे हानि होती है। शास्त्र में तो यहां तक कहा गया है :-

"जाके प्रिय न राम विदेही सो त्याजियो।
कोटि वैरी सम यदपि परम स्नेही ॥"

कहने के तात्पर्य यह है कि जिस आदमी के हृदय में भगवान् का प्यार नहीं होता उसको करोड़ बैरी के तुल्य समझ कर त्याग दे चाहे वह कितना भी रिस्तेदार हो अब सवाल होता है कि ऐसा किसी ने किया है तो लिखा है।

'त्योजयो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु त्यजियो, कन्त बृज बनिता भ्ये सब मंगल कारी ॥

अर्थात् प्रह्लाद ने पिता को त्यागा भगवान् को नहीं, विभीषण ने भाई रावण को त्यागा भगवान् को नहीं। राजा बलि ने लालची गुरु को त्यागा भगवान् को नहीं। बृज की औरतों ने नास्तिक पतियों को त्यागा भगवान् को नहीं इस सब को ऐसा करने से कोई पाप नहीं लगता बल्कि इनका नाम मंगलमय हो कर सभी का कल्याण हुआ। ऐसा शास्त्र कहता है सतसंग अथवा शास्त्र का बचन आस्तिक के लिए होता है नास्तिक के लिए नहीं। जैसे अकबर बादशाह ने बीरबल को कहा था कि हिन्दुओं का फजूल डोंग है जो मन्दिरों में भजन कीर्तन करते हैं। भगवान मूर्ति में या मन्दिर में थोड़ा आते है। यह सब हिन्दुओं का अन्ध विश्वास है। बीरबल बोले

सरकार भक्त की भक्ति तभी सम्पन्न होती है जबकि अपने इष्ट पर को
शंका न रखकर अन्ध विश्वास की तरह लगा रहे बादशाह कहने लगे कि
हम इस बात को नहीं मानते। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पेश करो तब माने
ऐसे नहीं। बीरवल ने सोचा कि अगर राजा को ऐसा प्रमाण मिला तो य
भगवान् की मूर्ति पूजा की निन्दा रोज करेगा यह ठीक नहीं है। बीरवल
क्या किया वह मोची के पास गया और उसको कहा कि मुझे तीन गज लम्ब
जूता बना दो और जूते के ऊपर हीरे जवाहरात जड़ति कर दिये जा
मोची ने कहा "सतवचन'। कुछ समय बाद जूता बनकर तैयार हो गया
तो बीरवल ने एक जूता यहां मुसलमान लोग कलमा पढ़ते थे उस से थोड़
दूरी पर रख दिया और दूसरा जूता अपने घर बक्से में रख लिया। उध
क्या होता है जब सब लोग कलमा पढ़ के नमाज अदा करके उठे तो साम
क्या देखते हैं तीन गज लम्बा जूता हीरो से जड़ित चमक रहा था। स
मुसलमान बोले कि यह खुदा का जूता है इतना लम्बा जूता तो और कि
का हो नहीं सकता खुदा जरुर मस्जिद में आया होगा जब हम नमाज प
रहे थे वह जाते समय एक पांव का जूता मस्जिद में छोड़ गया है।

अब सभी लोगों ने पालकी में जूते को रख कर शहर में जलू
निकाला। यह खबर अकबर बादशाह तक भी पहुंची। वह यह सुन क
बड़ा हैरान हुआ वह कहने लगा कि वह जलूस हमारे महलों
सामने भी गुजारा जाए हम भी उस जूते को देखेगें। हम विना दे
विश्वास नहीं करेगें। आखिर होता क्या है अब जलूस महल के पास
गुजरने लगा तो अकबर बादशाह बीरबल को साथ लेकर महल से नी
आये राजा ने जब यह जूता देखा तो वह भी कहने लगा कि ठीक यह खु
का ही जूता है। बादशाह जूते को चूमता है और अपने सिर ऊपर रखत
है। इतने में बीरवल बोल उठे "जनाव! यह जूता तो मेरे दादा का
गुम हो गया था अब मिल गया है। बादशाह बीरवल को बड़े क्रोध
कहने लगे कि यह इतना लम्बा जूता तुम्हारे दादा का कैसे हो सकता
यह तो खुदा का ही है। यदि यह जूता तुम्हारे दादा का है तो इसके सा
का दूसरा जूता भी होना चाहिये। वह तो बीरवल ने पहले ही घर प

रखा हुआ था। बीरवल घर गया और जल्दी से जूता ला कर राजा के सामने पेश कर दिया और बीरवल ने बादशाह को उसी बात का बोध कराया कि आप कहते थे हिन्दुओं का अन्ध विश्वास है। भगवान प्रकट नहीं होते उस का प्रत्यक्ष प्रमाण यह जो आप ने मेरे दादा के जूते को खुदा का जूता समझ कर सिर पर झुकाया और चूमा फिर इतनी श्रद्धा से उसको सिर के उपर रखा। क्या यह अन्ध विश्वास आपने नहीं किया अकबर बादशाह बड़ा लज्जित हुआ। मन ही मन सोचता है कि यह बात ठीक है। सर्गुण की उपासना विश्वास पूर्वक करने में उस निर्गुण तत्व सत्य स्वरुप की प्राप्ति की जाती है।



चौथा भाग

गुरू महिमा

प्रभु प्रेमियों धर्म ग्रन्थ अथवा शास्त्रों में गुरु की उपमा बहुत क
गई हैं। जैसे लिखा है :—

गुरुब्रह्म गुरुविष्णु: गुरुर्देवो महेश्वरा: ।
गुरु:साक्षात् परब्रह्मा स्तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

अर्थात शास्त्र यह कहता है कि गुरु को ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तथा साक्षा
पारब्रह्म रुप समझ कर दण्डवत प्रणाम करनी चाहिए। गुरू में ब्रह्मा वि
शंकर इन तीनों देवों के गुण भी मौजूद होते हैं जैसे ब्रह्मा उत्पति करता अ
गुरु भी शिष्य के अन्दर शुभ संस्कार पैदा करता है। विष्णु पालन क
है और गुरु भी शिष्य के धर्म की रक्षा करता है। शंकर संहार करता
गुरू भी अपने शिष्यों के जन्म जन्मांतरों के पाप कर्मों ज्ञान द्वारा नाश क
हैं। गुरू को साक्षात ब्रह्म कहा क्योंकि इसलिये कि उनकी हर बात
सत्य परम तत्व पारब्रह्म में होती है। ब्रह्मवेता होने के नाते साक्षात ब्र
माना गया है जैसे लिखा है "ब्रह्मविद ब्रह्म भवति" अर्थात उस ब्रह्म
जानने वाला ब्रह्म रूप ही हो जाता है गुरू के बगैर आतम ज्ञान नहीं ह
और बिना आतम ज्ञान के मनुष्य का जन्म निष्फल चला जाता है। मैं न
कहता भगवान श्री कृष्ण अपने अन्नय प्रेमी भक्त अर्जुन के प्रति कहते
कि हे अर्जुन संसार में सबसे श्रेष्ठ वस्तु आतम ज्ञान है जो उसकी प्राप्ति
लेता है उसी का मनुष्य जन्म सफल होता है। अर्जुन बोले आतम ज्ञ
कहां मिलता है भगवान कहते हैं तत्ववेता ब्रह्म निष्ठ महातमायों की श
जाने से लेकिन सन्तों के पास किस भाव से जाना चाहिए तो गीता में भग
श्री कृष्ण जी कहते हैं :—

तद्विधि प्रणिपातेन् परि प्रश्नेन् सेवया ।
उप्देक्ष्यन्ति तेज्ञानं ज्ञानिनां तत्वदर्शनम् ॥

अर्थात भगवान कहते हैं सन्त महात्मा के पास श्रद्धापूर्वक लाठी की त

नम्रता से साष्ठांग दण्डवत प्रणाम करनी चाहिये और सच्चे दिल से सेवा करे तथा अपने कल्याण के लिये प्रश्न करे। ऐसी श्रद्धा को देखकर ज्ञानीजन महात्मा तत्व वस्तु का उपदेश करते हैं। अवतारों ने भी गुरू की महिमा की है, लिखा है :—

"राम कृष्ण ते बड़ा, तिन ही को गुरु कीन।
तीन लोक के जो धनी, गुरू आगे अधीन ॥

कहने का मतलब यह है कि राम कृष्ण से तो कोई बड़ा नहीं या तीन लोकों के मालिक अवतार होते हुए भी गुरु के आगे नतमस्तिक हुए। लिखा भी हैं :—

"श्री गुरु को रथ पर बैठाई,
रुक्मिण संग खैंच यादो राई"

अर्थात भगवान कृष्ण और रुक्मणी दोनो अपने गुरू महाराज दुर्वाशा ऋषि जी को रथ में बैठा कर सेवा में रथ को खींचते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि अवतारों ने भी सेवा की तो हमारो अज्ञानी कुकर्मी आलसी जीवों की बात ही क्या है इसलिये सबका परम कर्त्तव्य बनता है, गुरु की शरण में जाना। लिखा भी है :—

"गुरु बिना ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिले न भेव।
गुरु बिना संशय न मिटे, जय जय जय गुरुदेव ॥"

अर्थात बिना गुरु के भ्रम दूर नहीं होता और भ्रम की निवृति हो जाने पर ज्ञान होता है। जैसे मर्यादा पुरुषोतम भगवान राम संसार की मर्यादा को कायम रखने के लिये आत्मज्ञान के लिए गुरु वशिष्ट्ठ जो के पास गए। होता क्या है बशिष्ट्ठ जी ने उस समय किवाड़ बन्द किया हुआ था, राम जी दरवाजे को खटखाते रहे कि कभी तो दरवाजा खुलेगा ही। वशिष्ट्ठ जी अन्दर से बोले कि तुम कौन हो? तो राम जी ने कहा यही तो मैं पता लेने आया हूं कि मैं कौन हूं। बशिष्ट्ठ जी ने प्रसन्न होकर दरवाजा खोल दिया कहा कि तुम वह हो जिसका कभी नाश नहीं होता। नाशवान तो पंच भौतिक शरीर है यह जन्म लेने व मरने वाला है। तुम शरीर नहीं हो शरीर

तुम्हारा है। तुम तो सुख स्वरूप अजर अमर अजन्मा अविनाशी आत्म हो इसी का नाम है भ्रम की निवृति अथवा कल्याण। दरवार साहव में भी लिखा है :—

"ज्ञान अंजन गुरु दियो, अज्ञान अन्धेर विनाश।
हरि कृपा ने सन्त भेटियो, नानक मन प्रकाश ॥"

अर्थात ज्ञान रुपी अंजन गुरू दे कर अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करता है। ऐसे सन्त सतगुरु का मिलाप भगवान की कृपा द्वारा होता है। जब गुरू से भेंट होती है तो मन में प्रकाश उत्पन्न हो जाता है जैसे गुरू नानक देव जी की बाणी जपजी साहब में लिखा है :—

"कोटि चन्दा ऊगही सूरज चढ़े हजार।
एते चानन हुन्दियां गुरू बिना घोर अन्धार ॥"

कहने का तात्पर्य यह है कि करोड़ चन्द्रमा उत्पन्न हो जाए और हजार सूर्य चढ़ जाए इतना प्रकाश होते हुए भी बगैर गुरू के घोर अन्धेरा होता। सुखमनि साहब में लिखा है :—

"मत कोई भूले भ्रम संसार, गुरू बिना कोई न उतरस पार।
भूले को गुरू मार्ग पायो, अवर त्याग हरि भक्ति लाओ ॥
जन्म-मरण की गुरू त्रास मिटाई, गुरू पूरे की बेअन्त वडिआई ॥"

अर्थात जन्म मरण की त्रास गुरु ज्ञान से मिट जाती है। तत्ववेता ज्ञानी गुरू की बेअन्त वडियाई शास्त्रों में कही। शास्त्र कहता है :—

"ध्यान मूलम गुरू मूर्ति, पूजा मूलम गुरू पदम।
मंत्र मूलम गुरू वाक्यज्ञ, मोक्ष मूलम गुरू कृपा ॥"

अर्थात प्रथम ध्यान गुरू की मूर्ति का और पूजा के चरणों की श्रेष्ठ होती है। मंत्र गुरू के मुख से जो निकला हो और मोक्ष को मूल वस्तु गुरू की कृपा है यानि बिना गुरू के किसी का मोक्ष नहीं होता। सुखमनी साहब में दर्शाया है :-

"कोऊ नानक प्रभु ऐहो जनाई, बिन गुरूमुक्ति न पायो भाई।"

सृष्टि आदि से लेकर आज दिन तक जिसका भी उद्धार हुआ सो गुरु कृपा से हुआ। गुरमुख स्त्री हो या पुरुष, गृहस्थी हो या ब्रह्मचारी बान प्रस्त हो या सन्यिासी किसी भी जाति वर्ण आश्रम का क्यों न हो । गुरमुख की सतगति होती है जैसे भिलनी कितनी सच्ची गुरमुख थी एक ऋषि ने राम को कहा था कि आप किसी सच्चे गुरमुख का शीत प्रसाद खाओगे तो रावण के ब्रह्म अस्त्र से बच सकते हो अन्यथा नहीं । उस समय भगवान राम को केवल सच्ची गुरमुख भक्त भिलनी ही मिली थी जिसकी झोंपड़ी में जाकर भगवान ने बेरों का शीत प्रसाद खाया था। लक्ष्मण जी ने यह बेर नहीं खाये थे जाति-पाति छूत-अछूत के विचार मन में लाकर भीलनी के प्रति नफरत करके बेर फैंक दिये थे। उसी के स्वरुप लक्ष्मण को ब्रह्म अस्त्र लगा था और मूर्छित हुए थे। उन्हीं बेरों की संजोवनी बूटी हनुमान जी ने लाकर लक्ष्मण के मुख में डाली थी। तब मूर्छा टूटी और जिन्दा हुए थे भीलनी के गुरु महाराज मतंग ऋषि थे पंपास आश्रम में आकर भिलनी ने उनसे गुरू दीक्षा ली थी और गुरू की आज्ञा में रहती हुई मंत्र का जाप किया करती थी। उसी फलस्वरूप भगवान राम के दर्शन समझती थी। सन्त कबीर जी कहते है :-

गुरू गोबिन्द दोनों खड़े, किस के लागू पाए।
बलिहारी गुरू अपने जिन गोबिन्द दियो मिलाए॥"

अर्थात् सन्त कबीर जी फरमाते हैं कि गुरू और भगवान् यदि दोनों एक जगह खड़े हों तो उस समय पहले किस के चरण छूने चाहिये तो कहा गुरू जी के। क्योंकि बलिहारी गुरुदेव है जिनकी कृपा से भगवान् मिले, सहजो बाई गुरू की बड़ी अनन्य प्रेमी थी उन्होंने गुरू की महिमा अथवा उपमा को यहां तक कहा है :—

"हरि को त्यंजू, गूरू को न विसारू।
गूरू के सम हरि को न निहारू॥"

अर्थात् सहजो बाई कहती है भगवान् को मैं त्याग सकती हूं गूरू को मैं नहीं विसार सकती। किसी व्यक्ति ने सहजो भाई से प्रश्न किया कि आप ने भगवान से भी बड़ा बड़ा दर्जा गुरू को दिया वह किस उद्देश्य से तो वह उत्तर में कहती है :—

हरि ने जन्म दिय जग माँही ।
गुरू ने कृपा की आवागमन छुटाहिं ।।"

अर्थात सहजो ने कहा कि भगवान ने मुझे संसार के माया जाल में जन्म दे फंसा दिया और गुरू ने कृपा करके मुझे दुनियां की झूठी माया अथ जन्म-मरण आवागमन के चक्कर में छुड़ा दिया इस लिए मैं श्री गुरु महारा जी को भगवान से बढ़ कर मानती हूं। प्रश्न करने वाला आदमी सह के आगे नतमस्तिक हुआ। गुरु की महिमा को जान कर वह भी गु भक्ति के रास्ते को अपना कर भक्ति करने लगा । शास्त्र तो यहां त कहता है :—

तीन लोक नव खण्ड में गुरूसे बड़ा न कोय।
करता करें सो कर न सकें, गुरू करे सो होय ।।"

अर्थात शास्त्र का कथन है कि गुरू का दर्जा नवो खण्ड और तीनों लोकों भी बढ़ कर है। भगवान् सृष्टि के रचियता जो काम नहीं कर सकते व गुरु करे तो हो सकता है। इस पर एक प्रमाण मिलता है । एक व्यक्ति ने गुरु धारण किया हुआ था । गुरु जी कभी-2 उस के यहां आ क ठहर जाते थे और कुछ दिन सतसंग करके फिर चले जाते थे। इसी तर कई साल बीत गए भक्त के घर सन्तान नहीं थी । गुरु जी ज आते थे सतसंग ही करते थे सन्तान के विषय में गुरु जी ने भक्त को कभ नहीं पूछा और न ही भक्त जी ने कभी गुरु जी से सन्तान के लिए कह क्योंकि भक्त जी बड़े बिचार शील थे समझता था कि गुरु लोगों से यह चीज मांगने योग्य नहीं होती इन से तो सेवा भक्ति, दर्शन और अभ्यास ह मांगना चाहिये। जैसा लिखा है :-

"तुद बिन ओर जो मांगना सिर दु:खां दे दु:ख।
दे नाम सन्तोषिए उतरे मन दी भुख ।।"

अर्थात् बिना भगवान के ओर जो भी मांगेंगे उस में अति दु:ख होगा । इस लिए अपने इष्ट से यही कहना चाहिए कि मुझे अपनी भक्ति ही दीजिए जिस के करने से सन्तोष मिलता है और मन की कामना मिट जाती है ऐसे दिव्य ख्याल रखने वाला वह भक्त था एक दिन उसके घर नारद जी ठहर गए। भक्त और भक्तिनी दोनों ने नारद जी की बड़ी सेवा की ।

नारद जी उन पर बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे तुम्हारे घर कोई बच्चा नहीं देखा क्या तुम्हारे सन्तान नहीं है ? भक्त बोला हां जैसे प्रभु की मौज है वैसे ही रहना है। नारद जी कहने लगे मैं अभी भगवान के पास जाता हूं और तुम्हारे लड़का उत्पन्न होने का वर मांगता हूं नारद जो ने ब्रह्म, विष्णु, शंकर तीनों देवों के पास जा कर भक्त के सन्तान का प्रश्न रखा कि उनके एक लड़का जरूर दीजिये। उन तीनों देवों ने उत्तर दिया कि उसके भाग्य में लड़का नहीं है। नारद जी ने सोचा कि जब उस के भाग्य में लडका नहीं है तो क्या किया जा सकता है, वापिस आते हैं और उस भक्त को बता आते हैं कि तुम्हारे कर्मों में सन्तान नहीं है। नारद जी पुनः भक्त जी के घर आकर कहने लगे कि भक्त जी मैं ब्रह्मा लोक, विष्णु लोक तथा तथा शिवलोक गया, तीनों देवतों ने कहा कि तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है। भक्त जी कहने लगे ठीक हे। हमें इस बात का कोई दुःख नहीं है जैसी देव इच्छा है, हम वैसे ही राजी हैं। जैसे लिखा है :-

"राजी हूं उसी में जिस में तेरी रजा है।
या यूं भी वाह वाह है। वू भी वाह वाह है।

ठीक मौज में ही मौज होती है। फिर क्या हुआ नारद जी के जाने के बाद उसी दिन भक्त के गुरु जी पहुंच गए। भक्त जी बड़ी खुशी मनाता है कि आज नारद जी गए थे तो घर सूना-2 लग रहा था। गुरु जी आ गए तो फिर रौनक हो जायेगी और सतसंग सुनने को मिलेगा। हमारे धन्य भाग हैं सन्तों के दर्शन बड़े भाग्य में होते हैं। गुरु जी ने भक्त जी से पूछा कि नारद जी से कोई वातचीत तुम्हारी हुई थी। भक्त जी ने कहा कि हमने तो किसी तरह की बात नारद से नहीं की। सेवा यथा योग्य कर सकते थे की थी और वह सेवा से प्रसन्न हो कर कहने लगे तुम्हारे सन्तान नहीं है हम भगवान के पास जा कर सन्तान के लिए कहेंगे। वह तीनों लोक घूम कर यहां आये थे और इतनी बात कह गए थे कि तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है बस इतनी ही बातें उन्होंने की। हम ने तो कुछ नहीं कहा। गुरु जी भी उनकी भक्ति पर बहुत प्रसन्न थे कि इनको सन्तान का कोई लालच नहीं है और मुझे इतनी देर यहां आते हो गई है कभी कुछ नहीं मांगा, इलावा सेवा भक्ति के। गुरू जी अपनी मौज में आये, खाना खाते ही चावलों के दाने भक्त और भक्तनी को दिये और कहा कि इसे खा लो तुम्हारे एक की बजाय दो लड़के होंगे। गुरु जी कुछ दिनों के बाद चले

गए और समय-2 अनुसार उनके घर दो बच्चों का जन्म हुआ । चार पांच सालों के बाद नारद जो उस भक्त के घर आये तो आंगन में दो बच्चों को खेलते देखा । वह भक्त जी से पूछने लगे कि यह बच्चे किस के हैं उस ने उत्तर दिया कि श्री गुरु महाराज जी के। नारद बड़े हैरान हुए बोले कि कौन गुरु महाराज। उन्होंने अपने गुरु महाराज जी की सारी घटना सुनाई कि किस प्रकार गुरू महाराज जी ने अपनी कृपा से यह दो बच्चे दिये हैं। यह सुन कर नारद जी को तीनों देवों पर क्रोध चढ़ा। कहता है कि मैं वहां जाकर पूछता हूं कि यह बच्चे कहां से आ गए । नारद तीनों देवों से जा कर पूछने लगे कि आप तो कहते है कि उनके भाग्य में सन्तान है ही नहीं। उन के घर गुरू जो ने दो बच्चों का वरदान दिया है । दो बच्चे आंगन में खेलते हुए देखे हैं । यह कैसे हो गए । तीनों देव बोले भाई गुरु जी का दर्जा हम से भी बड़ा है। जो हम नहीं कर सकते वह गुरू अपनी कमाई द्वारा कर सकता है इस लिये शास्त्रों में गुरू की महिमा कही गई है। सुखमनी साहिब में लिखा है :—

"गुरु कर्ता गुरु करने योग, गुरु प्रमेश्वर है भी होग।"

बाणी में भी लिखा है :—

"गुरु गुरु करो मन मोर।
गुरु विना मैं नाहि ओर॥

बाणी में और भी लिखा है :-

"बीस विसत्रै गुरु का कहा माने।
सो सेवक प्रमेश्वर की गति जाने॥"

अर्थात् हर समय गुरू की के बचन को हृदय में धारण जो करता हे उसी सेवक की परम गति होती है। वह प्रमेश्वर के धाम को प्राप्त होता है। गुरू अपने शिष्य का हित ही करता है, अहित कभी नहीं करता है जैसे मिसाल के रूप में एक गुरू और शिष्य दोनों रास्ते में जा रहे थे। गुरु जी ने चेले को कहा, "बेटा" थोड़ा कहीं विश्राम कर ले । चेले ने कहा "सत बचन" जैसी आज्ञा। चेले ने एक पेड़ के नीचे गुरू जी का आसन लगा दिया । गुरू जी आराम करने लगे, चेला सेवा करता रहा । गुरु जी ने चेले को भी कहा, बेटा तुम भी आराम कर लो

क्योंकि सवेरे सफर करना है। गुरु जी की आज्ञा पाकर चेला सो गया। तो थोड़ी देर के बाद क्या होता है कि एक विषधर सांप चेले को काटने के लिए चला आ रहा था। गुरूजी देख कर बोले अरे मेरे चेले को काटने काहे को जा रहे हो। तब सांप बोला कि पिछले जन्म का यह मेरा बैरी है इस ने मेरे गले का खून निकाला था इसका बदला लेने के लिये मैं भी इसके गले का खून पीने जा रहा हूं। गुरू जी बोले ठहर जा चेले को डंग मत मारना यदि डंग मारोगे तो जहर चढ़ने से चेला मर जायेगा। तुम ने गले का खून ही पीना है हम गले का खून निकाल देते हैं। पियो और मौज करो। सांप ने कहा, ठीक है। चेला सोया हुआ था उस को कोई पता नहीं कि गुरु जी की सांप से क्या-2 बातें हुई। गुरु जी चेले की छाती पर वैठ कर गले का मांस काटने के लिए छुरा फेरने लगे, चेले की नीद टूट गई। चेले ने आंखे खोली और गुरु जी के हाथ में छुरा लिए देख कर, आंखे दोबारा बन्द कर ली क्योंकि वह जानता था कि महांपुरुष जो भी काम करते है दूसरों के हित के लिए करते हैं। इसलिए इस में भी मेरी भलाई जरुर है। गुरु जी ने एक डूना खून निकाल कर सांप को दिया, सांप ने पिया और चल दिया? बाद में गुरू जी ने चेले से कहा कि बेटा जब मैं तेरी छाती पर वैठे हुए गले पर छुरा चलाने लगा था तुम ने उस समय आँखे खोल कर देखा था लेकिन मेरे को तुमने रोका नहीं यानि कुछ नहीं कहा। क्या कारण था? चेला बोला मैं समझता था कि गुरु शिष्य के साथ कभी अहित नहीं करता बल्कि हर बात में हित ही करता है। इस लिए मैंने कुछ नहीं कहा।

तब गुरु जो ने सांप के पूर्व जन्म की कुल घटना चेले को सुनाई तो चेला गुरु के आगे नतमस्तिक होता है कहने लगा कि आप जी ने मुझे युक्ति से बचा लिया है। यदि मैंने गुरू धारण न किया होता तो सांप आज मुझे जान से खतम कर देता लिखा भी है :—

"गुरू जिहा न समर्थ ओर कोई,
आप तरे जो शिष्य नू तार छड्डे।
खुशी बिच जद आ के मेहर करन,
जम काल तो गुरु छुड़ा छड्डे।"

जैसे लिखा है :—

गुरू बिन गत नहीं शाह बिना पत नहीं

और भी लिखा है :—

"गुरु बिना भव निधि तरे न कोई।
जो विरुचि शंकर सम होई ।।"

अर्थात बिना गुरु भव सागर से कोई पार नहीं हो सकता चाहे ब्रह्मा और शिव जी के तुल्य क्यों नहीं। जैसे लिखा भी है :—

"बिना गुरु के योग तप ऐसे, बाबे फरीद को भक्ति जैसे।"

यानि इसका मतलब है कि बाबे फरीद ने भजन तो बहुत किया लेकिन बिना गुरू के योग, तप किसी काम न बना। एक समय बाबा फरीद जंगल में एक पेढ़ के नीचे बैठ कर भजन कर रहे थे और पेढ़ के नीचे ऊपर चिड़ियों ने शोर मचाया हुआ था बाबा फरीद को उन पर बड़ा क्रोध आया और बोला चिड़ियो मर जाओ" चिड़ियां मर गई और पेढ़ से नीचे गिर गई। बाबा फरीद कहने लगा चिड़ियो उड़ जाओ तो वह चिड़ियां जिन्दा होकर उड़ गई तो बाबा फरीद मन में कहता है कि मैं बहुत बड़ा सिद्ध योगी बन गया हूं मेरे वचन में इतनी ताकत हो गई है जिस को चाहूं मार दूं और जिस को चाहूं जिन्दा कर दूं। उस समय बाबा फरीद को 12 वर्ष तप करते हो गए थे सोचा कि अब घर चलते हैं अब तप करने की क्या जरुरत है। मारना और जीवित करना यह ताकत तो मुझ में आ ही गई है। बाबा फरीद वहां से घर को चल दिये। रास्ते में जोर की प्यास लगी सोचता है सामने जो बस्ती है वहां पानी पीयेंगे। जब वहां पहुंचा तो देखा सामने कुयें पर एक मईया पानी निकाल रही थी। बाबा फरीद जी ने कहा माता जी मुझे प्यास लगी है थोड़ा पानी पिला दीजिए। मईया कुछ नहीं बोली, पानी निकालती थी और जमीन पर गिरा देती थी। बाबा फरीद बड़े क्रोध से बोले कहने लगे मईया मुझे तो पानी पिलाती नहीं और व्यर्थ गवाई जाती है मईया बोली बाबा क्रोध काहे करता है यह जंगल की चिड़िया थोड़ी है जिसे मार देगा और जीवित कर देगा। मैं पानी व्यर्थ नहीं गिराती, मेरी बहन की झोंपड़ी को आग लगी हुई है। यहा से वह झोंपड़ी 40 मील दूर है उस आग को बुझाने के लिए यह पानी वहां पहुंचा रही हूं। बाबा फरीद के होश गुम हो गए और अपने तप का मान टूट गया कहने लगा कि मैंने 12 साल जंगल में तप करके इस राज को पाया और वह मईया घर बैठे ही दूरदर्शी बन गई बाबा फरीद घर नहीं गए पुनः फिर जंगल को तप करने निकल गए। 12 साल और तप

किया, शरीर भी सुखा दिया हालत ऐसी बन गई कोवें भी उसके शरीर का मांस नोचने आते थे वह कहता था :—

> "कागा करन्ग टडोलिया सगला खाओ मास।
> एह सो नैना न छुईयो, मोहे पिया मिलन की आस॥"

और भी कहा है :—

> "तन सुक्का पिंजर थीयां तलीयां खूड़े काग।
> अजे सू रब्ब न बौड़ेया देख बन्दे दे भाग॥"

अर्थात कहने का मतलब यह है कि इतनी कठिन तपस्या करने से भगवान की प्राप्ति नहीं हुई वो दुःखी होकर एक लोहे का संगल यानि जंजीर लाया और एक तरफ अपने पांव बांध कर व जंजीर का दूसरा सिरा कुएं की दीवार से बांध कर कुएं में उल्टा लटक गया और कहने लगा मेरी कठिन से कठिन तपस्या को देख कर अब तो भगवान प्रकट हो जाएंगे। इतने में एक गडरिया पानी पीने के लिए कुएं की तरफ आया तो कुएं में झांकते ही उसने एक बड़ी-बड़ी जटों वाला बाबा सिर नीचे पांव उपर किए लटकते हुए देखा। गडरिये ने पूछा बाबा जी आप कुएं में उल्टा किस लिए लटके हुए हो। बाबा जी बोले भगवान की प्राप्ति के लिए। गडरिया बोला बाबा जी यदि ऐसा करने से भगवान की प्राप्ति हो जाती है तो आज्ञा हो, मैं पेड़ के साथ उल्टा लटक जाऊं। बाबा जी कहने लगे लटक जाओ। गडरिये ने झट जंगल में घास फूस इक्ट्टा किया और उसके बेड़ बनाए और पांव उससे बांध कर पेड़ की डाल के साथ उल्टा लटक गया तो क्या होता है बेड़ टूटने लगा तब भगवान प्रकट हो गए और कहने लगे कि भक्त जी तुम्हारी भक्ति पूरी हो गई है, दर्शन करो। गडरिया बोला मेरे गुरू जी को दर्शन दिये हैं। भगवान जी बोले कौन गुरू, गडरिया बोला जो कुएं में लटके हुए हैं। भगवान कहने लगे उसको हमारे दर्शन नहीं हो सकते क्योंकि वह बिना गुरु के भक्ति कर रहा है भला यह कहां लिखा है उल्टा लटकने से भगवान की प्राप्ति होती है उसने तो लोहे के जंजीर का सहारा लिया है, न संगल टूटे न जान छूटे। लेकिन तूने तो मेरा सहारा लिया है बेड़ तो झट टूट जाता है इसलिए तुम्हें दर्शन देने आया हूं। गडरिया बोला कि यदि आप ने मेरे गुरू को दर्शन नहीं देने तो आप जाईए हम मरे चाहे जीएं। भगवान को उस भक्त के वश में आ कर बाबा फरीद को भी दर्शन देने पढ़े और भगवान ने बाबा फरीद को कहा

कि मेरे दर्शन तो तुम्हारे को जरूर हो गए लेकिन तुम्हारी मुक्ति नहीं यदि मुक्ति चाहते हो तो जाओ किसी गुरू की शरण । बाबा फरीद ने फिर गुरू धारण किया और 12 साल तक गुरू की सेवा करते रहे एक दिन गुरू जी ने बाबा फरीद की परीक्षा लेने अपने योग तप बल से रात को दियासलाई उठा ली और कहा देखेंगे सुबह मेरे को स्नान कराने के लिए गर्म पानी कैसे करेगा । उस रात वर्षा भी बड़े जोर से हो रही थी सुबह बाबा फरीद ठीक समय पर उठे तो दियासलाई ही नहीं । सोचा अब क्या करे यदि गर्म पानी गुरू जी को न मिला तो 12 साल की सेवा भक्ति निष्फल हो जाएगी । 14 साल पहले बिना गुरु के जंगल में व्यर्थ गवा दिये थे । अब 36 साल की भक्ति निरर्थक चली जाएगी । यदि आज गुरु जी को स्नान न करवाया तो बाबे फरीद ने सोचा गांव में चलते हैं शायद कोई माई सुबह तीन चार बजे उठकर दूध मथने के लिए जागी हो इसलिये उसने चूल्ले में आग भी जरुरी रखी होगी । यह सोच कर सुबह के समय वर्षा होते ही गांव में चले गए । देखा तो एक मईया दूध मथ रही थी । बाबा फरीद जी ने मईया से कहा मुझे आज अग्नि की भिक्षा चाहिए । मईया की जुबान पर गुरू जी ने सरस्वती का वास करा दिया क्योंकि वह फरीद की परीक्षा लेना चाहते थे। मईया कहने लगी आग ले जायो लेकिन आग के बदले एक आंख का आना देना पड़ेगा । फरीद ने सोचा कि यदि तन, मन, धन गुरू महाराज जी का है तो आंख भी तो गुरु जी की है । बाबा फरीद ने जेब से चाकू निकाला आंख में मारा और आना निलाल कर मईयां को दे दिया फरीद ने आग ली और कम्बली में लपेट कर कुटिया पहुंच गए । चूल्ले में कम्बली को रख कर अग्नि प्रचन्ड करके पानी गर्म किया । जब गुरू जी उठे तो स्नान करा दिया गुरू जी ने कहा फरीद आज एक आंख में पट्टी बांधी हुई है फरीद जी बोले आंख आई हुई है गुरु जी ने कहा, "खोल के देख दूसरी से भी सवाई होई है जब बाबे फरीद ने पट्टी खोली तो वाक्य ही उसमें पहली आंख से भी ज्यादा सवाया दिखाई देता था । गुरु जी ने बाबे फरीद को आर्शीवाद दिया कि तुम परीक्षा में पास हो । आज भी बाबे फरीद का नाम दुनियां नतमस्तिक होती है । फरीद जी का नाम भी गुरु की कृपा से जग-मगाया था । लिखा भी है :—

"विना गुरू के निज ज्ञान नहीं मिलता।
जिस ध्यान से हो मुक्ति वह ध्यान नहीं मिलता ॥

सन्त दया सिंह ने भी बहुत ही सुन्दर कहा है।

" वसदा अन्दरे रब्ब करीम साडे।
करना विच्च उजाड़ दे भाल कित्थे।
लखां वर्ष तू जंगली फिरे भौंदा।
भला लबना दीन दयाल कित्थे ॥
चाहे लख समाधियां ला छड्डी।
मिलना गुरू तो बिना गोपाल कित्थे ॥

अर्थात सन्त दया सिंह का कहना है कि ईश्वर हमारे अन्दर ही बास करता है लेकिन मन मुख निगुरा अज्ञानी जीव बाहर जंगल में ढूंढता फिरता है। बिना गुरू के चाहे लाख समाधियां क्यों न लगा लें, भगवान कभी नहीं मिल सकेंगे। जैसे लिखा भी है :—

"कस्तूरी तो नाभि में वसे मृगा ज्ञानत नाहीं।
ऐसे ही ब्रह्म घट में बसे, नर ढूंढे वन माही।"

अर्थात कस्तूरी हिरण की नाभि में होती है लेकिन बेचारा जानता नहीं, उस की खोज में दौड़ लगाता है इस प्रकार ब्रह्म स्वरूप परमात्मा हृदय में वास करता है परन्तु अज्ञानता के कारण प्रमात्मा को बाहर बनों में ढूंढता है। प्रभु प्रेमियों उस प्रमात्मा को पाने का रूहानी इलम गुरू की शरण जाने से प्राप्त होता है। इस लिए श्री रामायण में गुरु की महिमा का वर्णन किया है :—

"एक बार मुनि वशिष्ट जी आये, जहां राम सुख धाम सुहाये।
अति आदर रघुनायक कीना, पद पखार चर्णोदक लीना।

अर्थात् एक बार जहां सुखो के घर भगवान राम विराजमान थे वहां वशिष्ट मुनि जी आए। रघुनायक भगवान् राम ने बहुत आदर के साथ मुनि जी के चरणों को धोकर चरणामृत लिया। आगे भी भगवान् राम स्वयं अपने श्री मुख से भगबान की उपमा कहते हैं :—

"गुरू वशिष्ट कुल पूज्य हमारे।
जिन की कृपा दनुज रण मारे।।"

अर्थात हमारे कुल के पुज्य गुरदेव, श्री वशिष्ट जी है जिन की कृपा से हमने रण क्षेत्र में राक्षसों का वध किया। सर्व धर्म ग्रन्थों में गुरू की उपमा गाई गई है। जैसे लिखा है :—

दयासिंह सतसंग दे संग बाजो।
चित समझना भला चण्डाल कित्थे ॥
"सर्व श्रेष्ठ है गुरू की महिमा, गीता कहे रामायण।
जो जाने सो मोक्ष पद पावे कहते वेद पुराण ॥
गुरु की महिमा जो कोई गावे।
जन्म मरण का दुःख न आवे ॥"

अर्थात प्रभु प्रेमियों सब से श्रेष्ठ गुरू की उपमा सर्व शास्त्र धर्म ग्रन्थ गीता, रामायण वेद पुराण आदि सभी में कही गई है। जो प्राणी गुरू की महिमा गाते है वह जन्म मरण के महान दुखों से छुटकारा पा कर मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं। यही हैं गुरु की महिमा का रहस्य। यही मेरा प्रथम विषय था

इति शुभ ओम शान्ति,, शान्ति शान्ति।



।। मन की एकाग्रता ।।

प्रभु प्रेमियों ! आज दुनियां भर में सब की यही शिकायत है कि मन भजन में नहीं टिकता क्या कारण है ? कारण यह है कि हमारा आहार गलत हो गया है बाणी में लिखा है :—

जैसा खाईये अन्न, वैसा बने मन ।
जैसा पीये पानी, वैसी बने बाणी ।

अर्थात जैसा हम अन्न खायेंगे बैसा ही हमारा मन बनेगा । एक प्रमाण है कि गुरु नानक देव जी का एक अनन्य प्रेमी भक्त भाई लालो हुआ है वह बहुत गरीब था । नेक नियत द्वारा किरत कमाई करके धन कमाता था और उस धन से अन्न प्राप्त करके रोटी खाता था । उस से उनका मन शुद्ध रहता था भजन सुमिरण भी नियम द्वारा किया करता था । यदि कोई अतिथि अव्यागत घर के दरवाजे पर आता था तो उनको भी यथा योग्य सेवा करता था । गुरु नानक देव जी उस की श्रद्धा और भाव प्रेम को देख कर उसके घर महीनों ठहर जाया करते थे । एक समय गुरू नानक देव जी गुरमुख भक्त भाई लालो के घर ठहरे हुए थे तो उस शहर के लाला मलिक भागो को पता चला तो वह भी गुरू नानक देव जी के दर्शनों को गया तथा गुरू नानक देव जी को भोजन के लिए निमन्त्रण दे आया । इधर भाई लालो के घर बाजरे की रोटी भी बनी हुई थी और लाला मलिक भागो ने हलवा पूरी तसमई आदि पकवान बना कर तैयार किए हुए थे । इधर भाई लालो के घर जो बाजरे की रोटी बनी थी गुरु नानक उसी का भोग लगा रहे थे । में मलिक भागो वहां पहुंच गए और बाबा गुरू नानक देव को बड़े क्रोध से बोला, 'बाबा आप का भोजन तो हमारे घर बना हुआ है और आप यहां ही खा रहे हैं । भला यह किधर की बात है । हमारे हलवा पूरी तसमई माल पूड़े छोड़ कर इस के सूखे टिक्कड़ एवं बाजरे की रोटी को खा रहे हो यह कोई सन्तों का बचन है । गुरू नानक देव जी कहने लगे, देख भाई क्रोध काहे करता है मैं तो भाई लालो के प्रेम की बाजरे की रोटी खा रहा हूं ।

इस प्रेम भाव की सूखी रोटी में भी मुझे बहुत आनन्द आ रहा है। लाला मलिक भागो बोला, मेरी रोटी में कौन सा जहर भरा हुआ था, उसमें भी तो मेरा प्रेम ही था। गुरु नानक जी कहने लगे हल्ला मत करो, जाओ अपनी रोटी थाली में रख कर ले आओ अभी फैसला हो जाता है इस में क्या है और उस में क्या है ? मलिक भागो झट से गया और रोटी थाली में परोस कर ले आया। गुरु नानक देव जी ने एक हाथ में भाई लालो की बाजरे की रोटी को ले लिया और दूसरे हाथ में मलिक भागो की हलवा पूरी को ले लिया और दबाया जिस हाथ में भाई लालो की बाजरे की रोटी थी उस से दूध निकल रहा था और जिस हाथ में मलिक भागो की हलवा पूरी थी उस से खून की धार निकल रही थी। यह दृश्य देख कर मलिक भागो का क्रोध शान्त हो गया और कहने लगा इसका क्या कारण है। गुरु नानक देव जी बोले कारण यह है कि भाई लालो की नेक नियत एवं किरत कमाई का अन्न है उस में दूध निकला और जो तुम्हारी पाप की कमाई का अन्न यानि लोगों का खून चूस कर कमाये हुए धन से बनाई गई रोटी से खून निकला है इस लिए मैंने तुम्हारा भोजन नहीं किया, लिखा भी है :—

"जैसा खाईये अन्न, वैसा बने मन।"

इस कथा को सुनाने का तात्पर्य यह था कि तामसो भोजन करने से तमों गुण उत्पन्न होता है और तमों गुणी आदमी का मन भजन में स्थिर नहीं होता है इसलिए लिखा है :—

"जब लग मन स्थिर नहीं, तब लग दर्शन होय।
दादू मनुआ स्थिर भया, सहज मिलेगा सोय॥"

अर्थात जब तक एक एकाग्र नहीं होता तब तक उस परम ज्योति का दर्शन नहीं हो सकता। दादू जी फरमाते हैं कि जब मन स्थिर होगा तो वह सहज ही मिल जायेगा। जैसे लिखा है :—

"मन की गति है अटपटी, झटपटी लखे न कोय।
जब मन की खटपट मिटे झटपट दर्शन होय॥"

अब देखना यह है कि मन को शुद्ध बनाने के लिए और मन की खटपटी चंचलता आदि को दूर करने के लिए उपाय क्या है ? तो लिखा है :—

"आहार शुद्ध हो जाने से, मन शुद्ध हो जाये।
तभी यह सुमिरण में लगे, सबसे बड़ा उपाय ॥"

अर्थात शुद्ध सात्विक भोजन करने से मन शुद्ध हो जाता है और शुद्ध मन भजन में ही लगता है। यही एक सबसे बड़ा उपाय शास्त्रकारों ने बताया है। लेकिन ऐसा हम करते नहीं हैं। हम सब तो इस के उल्टे चलते हैं जैसे मांस, अण्डा, शराब, मुर्गी खाना, सट्टा, धड़ा, जुआ ताश खेलना, निंदिया, चुगली, बैर विरोध, ईर्ष्या करना, चोरी, ठगी, ब्लैक मार्किट करना, खटाई मिर्च वाले तीक्ष्ण पदार्थ खाना आदि यह सब मन को अशुद्ध बनाते हैं। इस से जीव की तामसी प्रकृति हो जाती है। ऐसे लोगों का मन भजन सेवा, अभ्यास सतसंग धर्म अथवा सत्य कार्य में नहीं लगता। कुछ लोग ऐसे भी प्रश्न कर देते हैं कि मांस, शराब, अण्डा, मुर्गी नहीं खाते फिर भी हमारा मन भजन में नहीं लगता। इसका मतलब यह है कि धर्म युक्त नेक नियत किरत कमाई से धन उपार्जन नहीं किया गया। चोरी ठगी करने से ब्लैक मार्किट करने से सट्टे दढ़े से और धर्म को बेच कर धन कमाया गया है। उस धन से खरीद कर जो अन्न खाया जाता है उसका असर मन पर पढ़ता है इस लिये यह मन भजन में नहीं टिकता। मिसाल के रूप में एक सुनार था उस ने एक महात्मा जी को भोजन के लिये निमन्त्रण दिया महात्मा जी आ गए। उस सुनार भक्त ने बड़े प्रेम से भोजन करवाया। महात्मा जी भोजन करने के बाद जब चले तो सामने क्या देखते हैं दिवार के साथ खूंटी में सोने की जंजीर टंगी हुई थी। महात्मा के मन में आया कि यहां इस समय कोई नहीं देखता, यह हजारों रुपयों की जंजीर होगी ले चलते हैं। महात्मा जी ने झट से जंजीर को उतारा और जेब में डालकर चल दिये और इधर सेठ सुनार के घर पहुंच गये। उन्होंने सुनार से अपनी जंजीर मांगी।

सुनार खूंटी पर देखता है तो जंजीर गायब थी। सुनार ने अन्दर सब जगह ढूंढा लेकिन जंजीर न मिली। बड़ा दुःखी होता है उसे फिकर पढ़ गया कि सेठ को अब क्या जुबाब दूं। उसने मुझे सोना जंजीर बनवाने के लिए दिया था। इधर सुनार यह सोच रहा है उधर वह महात्मा मन्दिर में जा कर आरती पूजा करके फिर भजन पर बैठता है तो मन में सोचता है कि मैंने बहुत पाप कर दिया है जो कि सुनार के घर से मैं सोने की जंजीर

ले आया हूं। उस बिचारे ने कितनी श्रद्धा से प्रेम पूर्वक भोजन कराया और मैंने कितना बुरा किया जो आते समय उसकी जंजीर उठा लाया। यह ठीक नहीं है चलो उसकी जंजीर घर जा कर उस को दे आवे, महात्मा जी सुनार के यहां पहुंच गए और कहा भक्त जी तुम्हारी जंजीर गुम हुई है। बोले जी हां। महात्मा जी बोले, बेटा गुम नहीं हुई। तुम्हारी जंजीर हम उठा ले गये थे, यह लो अपनी जंजीर। सुनार बोला, महाराज आप को जंजीर का कोई लालच नहीं था मेरी परीक्षा के लिये आप जंजीर उठा कर ले गए होंगे कि देखें भक्त का मन मेरे ऊपर शंका करता है या नहीं। महात्मा जी बोले, ऐसी बात नहीं है यह तुम्हारा अपना भाव है लेकिन जब मैंने तम्हारा अन्न खाया उसी समय मेरा मन लोभ लालच चोरी-ठगी करने की बात सोचने लग पड़ा था। या तो तुम्हारा वह अन्न शुद्ध कमाई का नहीं होगा, सुनार बोला महात्मा जी आप ने जो कहा है बिल्कुल ठीक है। वह अन्न मेरी नेक कमाई का नहीं था वह पाप की कमाई का था। वह कैसे ? मैं लोगों से शुद्ध सोना लेता था और नकली सोने के जेवरात बना कर देता था। इस ढंग से पाप युक्त कमाई का वह अन्न था।

महात्मा जी समझ गए कि ठीक अन्न का ही दोष था जो कि हमारे मन में ऐसा असर पड़ा। एक समय का वृत्तांत है जिस समय द्रोपदी को दुशासन पकड़कर दुर्योधन के दरबार में भरी सभा में ले गया और उसे नग्न करना चाहा। उस समय द्रोपदी ने पांडवों की ओर देखा और कहा कि आप मेरे पति हैं मेरी लाज बचाओ तो वह भी मुख फेर गये क्योंकि वह तो पहले ही जुए में हार चुके थे। द्रोपदी ने सोचा कि जिन पर मैं बड़ा मान करती थी वह पांच पति भी मेरी रक्षा न कर सके। तो वहां से भी मन हटा फिर उस ने अपने दादा भीष्म पितामह की ओर देखा और द्रोपदी ने उन से कहा, ऐ दादा आप ही इन दुष्टों से मेरी रक्षा करो तो भीष्म पितामह ने जबाब दिया कि बच्ची इस समय मैं भी तेरी रक्षा नहीं कर सकता क्योंकि दुर्योधन का अन्न खाने से मेरा मन भी वैसा हो चुका है इस लिये मेरी तपस्या तुम्हारे लिये कोई काम नहीं कर सकती है। यह होता है निगुरे मनमुख कुसंगी के अन्न का मन पर प्रभाव, आखिर होता क्या है कि दुर्योधन दुशासन को आज्ञा देता है है कि द्रोपदी की साड़ी को उतार दो देखे अब इस की कौन रक्षा करता है और इस को यह भी पता लग जाये कि कौन अन्धा है और कौन आंख वाला है। जब दुशासन साड़ी उतारने लगा तो

द्रोपदी अपने बाजुओं के बल से अपनी रक्षा करने लगी लेकिन पेश कहां जाये उन दुष्टों के आगे। अन्त में द्रोपदी ने अपने इष्ट भगवान श्री कृष्ण को पुकारना शुरू किया हे श्याम मुरारी, रखो सभा में लाज हमारी। दुष्ट दुर्योधन कहता है कौन इसकी रक्षा करने वाला है। द्रोपदी कहने लगी मेरे तो कृष्ण ही आंख वाले हैं वही मेरी रक्षा करेंगे। उस समय द्रोपदी भगवान पर पूर्ण भरोसा रखकर दुर्योधन को ताना देती हुई कहती है :—

"मेरे लिये दुर्योधन तुम सभी अन्धे,
मेरे लिए कुल दरबार अन्धा।

मेरे लिये पांडव वी होये अन्धे,
मेरे वास्ते कुल संसार अन्धा॥

लाज रखेगा द्वारिका वासी मेरा,
नहीं है वह कृष्ण मुरार अन्धा॥"

अब होता क्या है द्रोपदी की सच्ची भावना की पुकार ध्यान वाले कृष्ण ने स्वीकार की और ध्यान वाले कृष्ण ने आगे द्वारिका वाले कृष्ण को खबर दी और द्वारिका वासी कृष्ण ने सर्व व्यापी कृष्ण को खबर कर दी। सर्वव्यापी साड़ी की तार-तार में था। भगवान द्रोपदी की लाज रखने के लिए प्रकट हो जाते हैं ओर साड़ियों के अम्बार लगा देते हैं। दुशासन साड़ी खींचता हुआ हार गया लेकिन साड़ी का इंच कोना भी कम न हुआ लिखा हैं :—

"दस हजार हाथी बल घटियो।
घटियों न दस गज चीर॥"

उस समय स्थिति यह बन गई थी कि :—

"साड़ी विच नारी है, यां नारी विच साड़ी है?
साड़ी है कि नारी है, नारी है कि साड़ी है?

कहने का मतलब यह है कि जब सच्चे हृदय से अथवा शुद्ध मन द्वारा प्रभु का चिनवन होता है तब कहीं भगवान दर्शन देते हैं। जब तक दोपदी का मन संसार में कभी किसी का, कभो किसी का सहारा ढूंढता रहा तब तक वह दु:ख और ठोकरें खाती रही, भगवान भी रक्षा के लिये नहीं आये। कारण क्या था क्यों नहीं आए? इस का कारण यह था कि अभी दोपदी

का मन दुनिया में था। जब उस ने देख लिया कि यहां तो मेरी रक्षा कोई नहीं करेगा। तब मन इधर से हट कर भगवान की तरफ लगाया। जब द्रोपदि का मन भगवान के ध्यान में लीन हुआ तब भगवान उसी समय प्रकट हो गए। अब सबाल यह है कि ध्यान की परिपक्वता और मन की एकाग्रता कैसे करनी चाहिए और कहां जाना चाहिये।

एक समय पल्टू जी महाराज के पास एक आदमी आकर पूछने लगा कि मन बड़ा चंचल है। यह इष्ट की ओर अथवा भजन में लगता ही नहीं है। इसका क्या उपाय करना चाहिये तो उन्होंने कहा :—

"सतसंग में जाय के, मन को कीजै शुद्ध।
पल्टू वहां न बैठिए, यहां उपजै कुबुद्ध।"

अर्थात पलटू जी फरमाते है कि कुसंगती को त्याग कर सतसंग में जाना चाहिए क्योंकि वही पर मन की गति को समझा जा सकता है और मन शुद्ध होता है। महापुरुषों का कथन है :—

"मन की चाल है। है विकट अति, करने न दे विचार।
इसकी गति जो समझ ले, भवनिधि उत्तरे पार।।"

अर्थात मन की चाल अति विकट है इसको रोकने के लिए निरन्तर जप करना चाहिये जैसे लिखा है :—

"करो मन जाप स्वासों का सदा, जो आप होता है।
चले, बैठे उठे मन में गुप्त यह जाप होता है।।"

परम पुज्य श्री सतगुरु हीरानन्द जी फरमाते हैं :—

"स्वासों की कर सुमरणी, कर अजपा का जाप।
परम तत्व को पाईये, सोहं आपे आप।।"

बाणी में भी दर्शाया गया है :—

"जानत योगी ए रस बाता, सोहं शब्द अमिरस माता।
आत्म उपदेश भेस संमय को, जाप सो अजपा जापै।
सदा रहे कंचन सी काया, काल कबहूं न व्यापै।।"

शास्त्र डंके की चोट से कहता है :—

"अजपा नाम गायत्री मुनि नाम मोक्ष दायंनी।

अर्थात सभी अनुभवी महापुरुष, सन्त जन, धर्म ग्रन्थों की बाणिया अथवा वेद वेद शास्त्रों ने निर्णय कर दिया है कि मन को स्थिर करने के लिए और परम तत्व की प्राप्ति के लिए निरन्तर भजन मन ने अजपा नाम गायत्री को जान कर करना चाहिये जो मुनियों को भी मोक्ष देने वाली है। प्रभु प्रेमियों वाह् मुख के जाप का असर मन पर नहीं पढ़ता। जैसे सांप बिल के बीच रहता है। हम बिल के ऊपर लाठियां मारते रहे तो सांप को एक चोट भी नहीं लगेगी। उस को मारने के लिए कोई सूक्ष्म औजार चाहिये जो बिल के बीच चोट करे तब साँप मरता है। ठीक उसी प्रकार मन रूपी सांप भी शरीर रूपी बिल में रहता है। इस को भी अन्दरूनी नाम के अभ्यास की चोट लगे तो यह मरता है। अन्दरूनी नाम की पहचान सन्त सतगुर द्वारा होती है जो उस रास्ते के भेदी है। शास्त्र का कथन है :—

"सतगुर ऐसा कीजिए पूर्ण होवे युक्त।
हंसते खेलते पहनते बीच में होवे मुक्त॥"

और भी लिखा है :—

सतगुर ऐसा कीजिए, पढ़े निशाने चोट।
सुमिरण ऐसा कीजिए, जीभ हिले न होंठ॥

अर्थात सतगुरू ऐसा चाहिये जो ब्रह्म सत्यम शब्द को मन में चोट लगावे सुमिरण ऐसा हो जिस के करने से जीभ और होंठ भी न हिलें। ऐसी पूर्ण युक्ति हो हंसते खेलते वस्त्र पहनते संसार में रहते हुए और सब काम करते हुए भी मुक्त करा दे। पूर्ण अनुभवी सन्त सतगुरू ऐसा भेद बता देते हैं। काम करते रहो, स्वांसों की माला दिन रात रटते रहो। वाणी में भी लिखा है :—

चलते फिरते सोवत नाम।
कऊ नानक तिसके सद काम॥"

सन्त कबीर जी से किसी ने कहा कि मन का निरन्तर जाप किस समय करना

चाहिये। उन्होंने उत्तर दिया इसका जाप हर समय कर सकते हैं लिखा है :—

"नाम नरिंजन रटता रहो, उठदा बैंदा सौंदा।
लव न फड़कन जाहिर न होवे, दिल बिच रहीं करेंदा॥"

यह हे अभ्यास मन द्वारा करने की असली युक्ति। क्योंकि बिना युक्ति के मुक्ति नहीं होती। कई लोग इस भेद को तो प्राप्ति नहीं किए होते वह तो बस इतना ही समझते हैं कि किसी गुरू से कान में फूँक भरा लो तो हो गई मुक्ति। लेकिन बात ऐसी नहीं है। यदि कान फूँकाने से ही मुक्ति होती तो जब हम छोटे-छोटे बच्चे थे उस समय कई लोग हमारे कानों में कहा करते थे, कन्ना मुन्ना कुर्र। फिर जब हम भैंस या गाय का दूध दोहते हैं उस समय गाय भैंस भी हमारे कान की तरफ मुंह करके फूंकर देती है यानि इन सभी ने हमारे कितनी दफा कान फूँके लेकिन आत्म ज्ञान और मुक्ति क्यों नहीं हुई। मुक्ति तभी होगी, जब हम अनुभवी और भेदी सन्तों के द्वारा निरन्तर मन के अभ्यास की युक्ति अथवा रहस्य को जानेगे। एक समय अर्जुन ने भगवान कृष्ण से कहा कि प्रभु अब मेरे में किसी की कोई शंका नहीं है। मुझे तो केवल कल्याण की बात बताओ कि मैं क्या करूं। भगवान कहने लगे, अर्जुन मन को स्थिर कर लो अभी कल्याण हो जायेगा। अर्जुन बोले, प्रभु मैं समुन्द्र की लहरों को रोक सकता हूं, हवा के वेग को भी रोक सकता हूं लेकिन मन को रोकने मैं असमर्थ हूं। यह मेरे बस की बात नहीं है। यह तो आप ही कृपा करे तो हो सकता है। तब भगवान ने कहा, अर्जुन मन को स्थिर करने के लिए एक उपाय है। वह है अभ्यास। लेकिन अभ्यास भी वैराग्य सहित हो तब मन एकाग्र होगा। और कोई उपाय नहीं है, लिखा है .—

मन जीते अभ्यास सों कोई यत्न और कोई नाहीं।
जग से बैराग्य कर यह समझो मन माहि॥"

अभ्यास का मतलब क्या है जिस में एक ही चीज को बार-2 किया जाता है उसी का ही नाम अभ्यास है। जैसे महापुरुषों का कथन है :—

"करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात है, शिल पर पड़त निशान॥"

अर्थात रोज लगातार स्वांस स्वांस में नाम का जप करने से मन के उपर

असर पढ़ता है जैसे कुयें में लज्ज रस्सी के उपर नीचे आने जाने से पत्थर भी घिस जाता है। प्रभु प्रेमियों! मेरा इन सब बातों का मतलब यही था। वो क्या? मन की शुद्धि और शुद्ध मन ही भजन में लगता है। भजन में मन लगाने से एकाग्रता होती है और एकाग्र मन हो जाने से अपने इष्ट को अथवा सतगति को प्राप्त होता है। यही मेरा शुरू से विषय था।

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।



।। नाम का महत्त्व ।।

प्रिय सत्संगियो हम सभी अपना कल्याण चाहते है लेकिन देखना यह है कि आज कलियुग में हमारा कल्याल कैसे हो सकता है तो लिखा है :-

"कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिर-सुमरि नर उतरहिं पारा ।।"

अर्थात कलियुग में केवल नाम के सुमिरण द्वारा हो जीव भव सागर से पार हो सकते हैं। प्रभु प्रेमियों ! शास्त्रों में नाम की बहुत बड़ी उपमा की गई है। रामायण में तो यहां तक लिखा गया है :—

"कहां कहूं लग नाम बढ़ाई।
राम न सकहिं नाम गुण गाई ।।
राम एक तापस्तिये नारी।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ।।"

यानि कहने का मतलब यह है कि नाम की इतनी महान महिमा है कि राम भी उस नाम का पार न पा सके। राम ने तो एक अहल्या का उद्धार किया और नाम से करोड़ों अहल्लाओं का उद्धार हुआ। लिखा भी है :—

"राम से बड़ा, राम का नाम।"

कोई लोग शंका कर लेते हैं कि राम से भी बड़ा नाम कैसे होता है।

एक समय का जिकर है कि भगवान राम जी सभा में सब ऋषि मुनि पधारे हुए थे उन में गुरु विश्वामित्र भी विराजमान थे। इतने में एक स्वास्तिका नाम का राजा वहां आया। उस की प्रथम भेंट देव मुनि नारद से हुई। नारद जी ने उस राजा से कहा कि तुम सभी ऋषियों को प्रणाम करना लेकिन एक ऋषि की मत करना वह जो ऊंचे सिहासन पर बैठे हुए हैं बिश्वामित्र जी। राजा ने कहा, "सत बचन।" उसने ऐसा ही किया, जब ऋषियों को प्रणाम कर दिया लेकिन बिश्वामित्र को प्रणाम नहीं किया

तो विश्वामित्र जी को उस पर बड़ा क्रोध आया। कहने लगा कि इस का फल अभी इस को दिलाता हुं। विश्वामित्र जी ने राम को बुलाया और कहा कि इस राजा का सिर काट दो। इस ने हमारा भरी सभा में अपमान किया है। राम जी ने कहा जो आज्ञा। गुरू विश्वामित्र भगवान राम को कहते कि संसार में जो तुझें सबसे प्यारा है उस की सौगन्ध ले कर मेरे से बचन करियेगा। राम भगवान बोले मुझे सबसे प्यारा हनुमान है। मैं सौगन्ध लेता हूं कि मैं राजा स्वास्तिक का सिर काटूँगा लेकिन तीसरे रोज। यह बचन जब राम जी ने गुरू विश्वामित्र को दिए उस समय राजा स्वास्तिक ने सभी बातें सुन ली थी। वह घबरा कर नारद मुनि के पास गया और कहने लगा आप ने कहा था कि विश्वामित्र को प्रणाम नहीं करना मैंने वैसा ही किया था। लेकिन विश्वामित्र जी मुझ पर नाराज हो गए हैं उन्होंने हमारे को जान से मरवाने के लिए राम जी को आज्ञा दी है। और राम जी ने हनुमान को साक्षी रख कर प्रतिज्ञा कर ली है। हम को वह दो दिन पश्चात अर्थात तीसरे रोज खत्म कर देगें अब क्या करें। मुझे किसी तरफ बचाईये क्योंकि यह सारा कसूर भी आप का ही है। नारद जी बोले, चिन्ता मत करो। मैं तुझे मरने नहीं दूंगा। तुम ऐसा करना हनुमान जी के जा कर चरण पकड़ लेना वह कितना भी तुझे हटाये लेकिन तुमने चरण नहीं छोड़ने। आखिर वह पूछेगा कि तुम क्या चाहते हो तो उस वक्त तुम ने कहना महाराज मुझे किसी ने जान से मारने का प्रण किया है वह मुझे परसों मार देगा इस लिए मैं आप की शरण में आया हूं मेरे प्राणों को रक्षा करियेगा। जब हनुमान जी कहेंगे हम तुम्हें बचायेंगे तो तुम कहना कि मुझे वचन दो और जो दुनियां में सब से आप को प्रिय है उसकी सौगन्ध लीजिये तब मुझे विश्वास होगा। नारद जी की आज्ञा पा कर राजा स्वास्तिक हनुमान जी के चरणों में जा कर लिपट गया। हनुमान जी उसको बहुत पीछे हटाते हैं लेकिन वह चरण छोड़ता ही नहीं क्योंकि नारद जी ने पक्का किया हुआ था आखिर हनुमान जी ने कहा भाई क्या चाहते हो तो उसने वैसे ही कह दिया जैसे नारद ने समझाया था। हनुमान जी कहने लगे कि तुम चिन्ता मत करो हम तुम्हें बचा लेंगे। राजा ने कहा मुझे बचन दो और दुनियां में आप को जो सब से प्यारा है उसकी सौगन्ध लो। हनुमान जी ने कहा मुझे सबसे प्रिय भगवान राम है मैं उनकी सौगन्ध लेता हूं तुम्हें अवश्य बचाऊंगा। अब राजा स्वास्तिक निश्चिन्त हो

गया उधर ठीक तीसरे दिन अपने गुरु विश्वामित्र जी के वायदे को पूरा करने के लिए भगवान राम राजा स्वास्तिक को मारने के लिए आ पहुंचे हनुमान जी देखकर बड़े हैरान हुए और राजा स्वास्तिक को कहने लगे कि तुम तो कहते थे कि मेरे को मारने के लिये किसी राजा ने प्रण किया हुआ है यह तो मेरे ही इष्ट राम हैं। मैं क्या करूं। राजा कहने लगा या तो मेरे को बचाईये या बचन वापिस दीजिए। हनुमान जी बोले ऐसा तो हो नहीं सकता जो कि बचन को वापिस करूं क्योंकि लिखा है :-

"रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाये पर बचन न जाई ॥"

इधर राम जी ने भी विश्वामित्र को बचन दिया हुआ था इस राजा को मारने का, होता क्या है ? राम जी राजा स्वास्तिक की ओर धनुष बाण लेकर तीर छोड़ने लगे तो इधर हनुमान जी ने राजा स्वालितक को कहा घबराओ मत तुम्हारी रक्षा भगबान का नाम करेगा। इस लिए तुम विश्वास पूर्वक इस मन्त्र का जाप करो। "जय राम, जय राम, जय जय राम।" राजा स्वास्तिक इस मन्त्र को प्रेम से खूब जपने लगा। होता क्या है भगवान राम ने जितने भी तीर छोड़े राजा स्वास्तिक को एक भी न लगा। नाम के आगे सब तीरों की शक्ति समाप्त होती है। राम जी चकित हो कर कहने लगे यह क्या कारण है इन्हीं तीरों से मैंने ताड़िका जैसे बड़े-2 राक्षसों का का संहार किया था लेकिन राजा स्वास्तिक के सामने इन तीन तीरों की कोई बुक्त न रही तो अन्त में भगवान उस तीर को छोड़ते हैं जिस से रावण को मारा गया था इधर हनुमान जी ने राजा स्वास्तिक को डबल नाम का जाप शुरु करा दिया क्या ? "जय राम जय राम जय सिया राम" इस मन्त्र के जाप का असर क्या हुआ जो भगवान राम ने अन्त में भयंकर तीर छोड़ा था वह भी नाम के आगे ठण्डा हो गया। उसकी शक्ति भी कोई काम न कर सकी। आखिर भगवान राम कहने लगे कि यह क्या बात हैं ? मैंने तीरों की कुल शक्ति इस्तेमाल कर ली लेकिन राजा स्वास्तिक मरा ही नहीं। इतने में हनुमान जी बोले इधर आप हैं उधर आप का नाम है जो इसकी रक्षा करने वाला है प्रभु प्रेमियों इस कथा से सिद्ध होता है कि राम से बड़ा राम का नाम है। धर्म ग्रन्थों में भी नाम की कितनी महिमा की है

लिखा हैं :—

"नाम की महिमा अपार है, करके देखो जाप।
करके क्षमा दुर्गुण सभी, हृदय वसे प्रभु आप॥"

अर्थात नाम की महिमा बेअन्त है जो जीव दुर्गुणों को त्याग कर अनन्य भाव से नाम का जाप करते हैं उन के हृदय में अपने इष्ट का तसब्बर आ जाता है। जो लोग नाम के रहस्य को समझ कर नहीं जपते उनकी हालत ऐसी है जैसे पानी-पानी कहने से प्यास नहीं बुझती और रोटी-रोटी कहने से भूख नही मिटती, वह तो तभी मिटेगी जब पानी को पीयेंगे और रोटी खायेंगे। ठीक इसी प्रकार खाली भगवान-भगवान कहने से कुछ नहीं बनता। साथ हृदय में उसका तसब्बर भी लाना चाहिये। नाम से नामी को पाया जाता है जैसे हम किसी आदमी का नाम लेकर आवाज लगाते है तो उस समय उस आदमी का रुप भी मन में लाना होता है। ठीक इसी प्रकार भक्ति की बात है। नाम से नामी को पकड़ा जाता है, पूजनीय सतगुर हीरा नन्द जी फरमाते हैं :—

"नाम रूप हृदय बसे, नित मगन हो खेल।
हीरा आवागमन मिटे, होवे ब्रह्म संग मेल॥"

अर्थात नाम और रूप की हृदय में एकता हो जाने पर मन अभ्यास में मगन हो जाता है। उस स्थिति में पहुंच कर जीव का ब्रह्म संग मेल हो जाता है। जिस हृदय में इष्ट का तसब्बर नहीं है वह हृदय शमशान के तुल्य होता है। मैं नहीं कहता परम सन्त कबीर जी कहते हैं :—

"जो घट नाम न संचरे, सो घट जान समान।
जैसे खाल लुहार की सांस लेत बिन प्राण॥"

प्रभु प्रेमियों नाम के रहस्य को तो हनुमान जी ने समझा हुआ था। एक समय को बात है कि समुन्द्र से मिला तोहफा मोतियों की माला जो रावण को मिली थी वो माला विभिषण ने राम भगवान को भेंट दी। राम जी ने वह माला सीता जी को दे दी। सीता जी को हनुमान बहुत प्यारे थे। उन्होंने वह माला हनुमान जी के गले में डाल दी। हनुमान जी क्या करते हैं। माला के एक एक मनी को दातों से तोड़ ते हैं और देख कर फैंक देते हैं

लोगों ने कहा हनुमान जी यह क्या करते हैं कराड़ों रुपयों की एक-एक मनी का सत्यानाश कर दिया है। हनुमान जी बोले कि मैं इस में राम को देखता हूं लेकिन इसके बीच राम नहीं हैं तो बेकार समझ कर फैंक देता हूं। उन लोगों ने कहा यह अच्छी बात है बिल्कुल मूर्खपन है। क्या तुम्हारे अन्दर भगवान का वास है? हनुमान जी कहने लगे यदि मेरे हृदय में राम विराजमान नहीं है तो यह शरीर किस काम का। तब वो लोग कहने लगे दिखाईये। हनुमान जी ने छाती फाड़ कर दिखाया। देखा तो राम और सीता विराजमान थे। वह लोग हनुमान के आगे नतमस्तिक हुए। प्रभु प्रेमियो यह राम का नाम और नामी की ऐकता का परिणाम है। आज सभी राम नाम का भजन तो करते हैं लेकिन क्रोध मरता ही नहीं। ईर्ष्या द्वेष जाता ही नहीं। जीवन में परिवर्तन होता ही नहीं। मन को शान्ति मिलती ही नहीं। यह क्या कारण है तो इस का मतलब यह है कि अभी तक नाम के भेद को ही नहीं समझा। जैसे लिखा है :—

राम नाम सब कोई कहे कहने का विचार।
वही राम साधू कहे, वही कहे संसार।।"

अर्थात राम नाम सब कहते तो हैं लेकिन कहने का भी विचार अथवा भेद होता है। जैसे वही राम दुनियां कहती है, वही राम संसार कहता है लेकिन विचार शील साधू सदा आनन्द में रहते हैं और संसारी लोग दुःखी व बेचैन रहते हैं। नाम भी दो प्रकार के होते हैं एक जाति और एक सिफाती। सिफाती नाम उसे कहते हैं जो भगवान के स्थूल शरीर दिव्य विग्रह नर लीला के रूप में काम किये। उन सिफतों के उपर सिफाती नाम रखे गए जैसे धनुष धारण किया तो धनुष धारी कहा गया। बन में विचरे तो बनवारी कहा गया। मुर्र नाम के राक्षस को मारा तो मुरारी कहा गया। गोवर्धन पर्वत को ऊंगली से उठाया तो गिरधारी कहा गया। मोर मुकुट पहना तो मोर मुक्टधारी कहा गया। यह सब सिफ़ाती नाम में आ जाते है जाति नाम किसे कहते हैं। जो निज नाम होता है, आदि युगादि से जो चला आ रहा है वह सब के घट में चलता है उसे स्वासों की माला और परावाणी कहा गया है। वह एक ही ब्रह्म सत्य शब्द सभी के हृदय में विराजमान है। जैसे बाणी में भी लिखा है :—

"सब घट बसियों साईयां, सूना घट न कोय।
बलिहारी जा घट के जा घट प्रकट होय॥"

अर्थात वह सब घट में वास करता है कोई भी घट सूना नहीं है। बलिहारी उसी जीव पर जाया जाता है जिस घट में वह प्रकट होता है। अर्थात जो जीव अपने भीतर उस नाम को जान लेता है। यदि कोई पूछे कि उस नाम को जपने का अधिकार किन-2 लोगों को है क्योंकि ऐसे-ऐसे भी तर्क करने वाले मिल जाते हैं। इस पर आप को आप बीती घटना सुनाते है। मैं सतसंग करने गया हुआ था वहां एक आदमी ने हमारे से प्रश्न किया कि स्त्री को नाम जपने का अधिकार है? हम ने कहा जी हां। वह जो निज नाम है उसे सभी जप सकते हैं। वहां सतसंग में एक तरफ मातायें बैठी हुई थी और पुरुष एक तरफ बैठे हुए थे। मैंने माताओं की तरफ ईशारा करके कहा, बताओ इन में स्वांस की गति और तुम में जो स्वांसों की गति है दोनों में क्या भिन्नता है? उसने कहा कि कोई फर्क नहीं है। तब मैंने कहा कि स्त्री और पुरूष दोनों में जब प्राणों की गति एक जैसी है तो नाम जपने का अधिकार दोनों का ही है। दोनों ही नाम जप सकते है। तब उसने कहा महात्मा जी यह मेरा प्रश्न तो हल हो गया और मेरी शंका का समाधान हो गया लेकिन अब दूसरा प्रश्न है। क्या मैं और मेरी पत्नी दोनों एक ही गुरु से दीक्षा ले सकते हैं। हम ने कहा कि जी हां जरुर ले सकते हैं वह व्यक्ति बोला, जी इस पर तो हमें शंका है। हमने पूछा। कौन सी शंका? तो वह बोला जब हम और हमारी पत्नी एक ही गुरु से दीक्षित हुए तो मैं गुरू का शिष्य हुआ और मेरी पत्नी भी गुरु को शिष्य हो गई तो फिर हम दोनों भाई बहन बन जायेंगे और स्त्रो पुरूष का नाता खतम हो जायेगा। हम ने उसको कहा भाई ऐसी बात नहीं है। गुरू महाराज जी का नाता तो आत्मा से है यानि सत्य में है लेकिन वह बोला कि मेरी शंका का अभी समाधान नहीं हुई। मैं ने पूछा कि आप का जन्म किस सृष्टि में हुआ। वह बोला, जी ब्रह्म में हुआ। वह बोला कि ब्रह्म की सृष्टि में। फिर मैंने कहा कि तुम ब्रह्म के बेटे और वह ब्रह्म की बेटी, तब तो तुम दोनों बहन भाई हुए। तब वह व्यक्ति बड़ा लज्जित हुआ और कहने लगा, महात्मा जी मेरी शंका का समाधान हो गया अब हम दोनों एक ही गुरू से दीक्षा ले सकते है। तो इस नाम के लिए यह सवाल पैदा नहीं होता वाणी में लिखा है:—

"जात पात पूछे न कोय, हर को भजे सो हर का होये।"

अर्थात इस निज नाम के लिए जात पात आदि नहीं पूछे जाते। जो भी भगवान का भजन करता है, भगवान भी उसी का हो जाता है। इस प्राण में बसे हुए जाति नाम को जपने का सब को अधिकार है चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष हो और चाहे बालक, चाहे वृद्ध, चाहे गृहस्थी हो, चाहे सन्यासी, चाहे ब्रह्मण हो, चाहे क्षत्रिय, चाहे वैश्य हो चाहे शूद्र आदि किसी भी जाति का क्यों न हो वह शब्द तो सभी के हृदय मन्दिर में एक ही है। जैसे वाणी में नौवीं पातशाही गुरु तेहबहादुर जी ने कहा :—

मन मन्दिर तन भेस कलन्दर, घट ही तीर्थ नावैं।
एक शब्द मेरे प्राण बसन है, बोड़े जन्म नहीं आवे॥

अर्थात उस हृदय की पराबाणी प्राण में शब्द को जानने से घर में ही तीर्थ हो जाता हैं फिर वह जन्म मरण में नहीं आता।

"कोटि नाम संसार में, ताते मुक्ति न होय।
आदि नाम जो गुप्त है, जाने गुरमुख कोय॥"

कहने का मतलब यह है कि संसार में करोड़ नाम दुनिया जपती है आद नाम को नहीं जाना इसलिए मुक्ति नहीं होती। उस को गुरमुख ही जानता है, मनमुख नहीं। जैसे एक उदाहरण है एक समय सन्त कबीर जी रास्ते में जा रहे थे और आगे से पंडित जी आ रहे थे। कबीर जी ने कहा, पंडित जी राम-राम। पंडित जी बोले ही नहीं, कबीर जी ने फिर कहा पंडित जी राम-राम। पंडित जी फिर नही बोले। कबीर जी ने तीसरी बार फिर कहा, पंडित जी राम-राम लेकिन पंडित जी फिर नहीं बोले। कबीर जी पंडित जी के पीछे चल पड़े, सोचा कहीं तो राम का नाम लेगा ही। होता क्या है आगे एक कुआं आता है उस कुयें से पंडित जी ने पानी लिया, लोटा साफ किया और हाथ भी खूब मिट्टी से मांज कर साफ किये। इतने में कबीर जी वहां आकर कहते हैं, पंडित जी राम-राम, अब पंडित जी बोले राम-राम।

सन्त कबीर जी ने कहा कि पंडित जी आप ने अब राम-राम बोला है पहले जब हम ने तीन बार राम-राम बुलाया तो बोले ही नहीं उसका क्या कारण है तो पंडित जी ने कहा कि उस समय मैं शौच क्रिया से निपट कर आ रहा था, सोचा कि मैं अभी अशुद्ध यानि अपवित्र हुं। इस समय राम नाम

जपना ठीक नहीं है। अब मैं हाथ मांज कर शुद्ध जल से पवित्र हुआ हूं तब राम का नाम लिया तो कबीर जी बोले पंडित जी आप पानी से शुद्ध हुए तो पानी कैसे शुद्ध होता है। पंडित जी ने उत्तर दिया, पानी हवा से शुद्ध होता है तो कबीर जी ने कहा कि हवा किस से शुद्ध होती है। पंडित जी उत्तर देते हैं कि शेषनाग जब सहत्र मुख से राम नाम जपता हैं तो हवा शुद्ध होती है तब कबीर जी कहने लगे सारी रात रोते रहे, मरा कोई भी नहीं। वही बात तुम्हारी है। अन्त में भी बस यही फैसला हुआ भगवान का नाम लेने से ही सभी पवित्र हुए और यही बात मैंने तुझे पहले कही थी। पंडित जी सन्त कबीर से अपनी गल्ती के लिये क्षमा मांगते हैं और असली आदि नाम की विधि उनसे प्राप्त करते हैं। जो शुद्ध, अशुद्ध, पवित्र, अपवित्र, छूत-अछूत आदि इन चीजों से परे है, जो हर समय चौबीस घण्टे घट में चलता है उस सार शब्द को जान करके बहुत प्रसन्न हुआ। प्रभु प्रेमियों जो भी जीव सुखी बनना चाहता है वह सच्चा सुख उस जानि नाम से ही मिल सकता है अन्यथा नहीं। बाणी में भी लिखा है :—

"जो सुख को चाहे सदा, शरण राम की लेह।
कऊ नानक भज रे मना दुर्लभ मानुष देह॥"
नाम सकल सुख खान है जिसका अन्त नहीं कोय।
जो जाने निज नाम को, जीवन मुक्ति होय॥

अर्थात संसार में सभी को सुख देने वाली वस्तु नाम ही है। जो प्राणी अपने निज नाम को जान लेता है उसकी जीवन मुक्ति हो जाती हैं। नाम की महिमा पर एक प्रणाम मिलता है। एक सेठ के शरीर में कुष्ट पड़ गया। बहुत ईलाज करवाया लेकिन यह ठीक नहीं हुआ आखिर वह सेठ दुःखी हो कर कहने लगा कि यह दुःख मेरे से सहा नहीं जाता है इस लिए मुझे गंगा नदी में जिन्दा ही लेजा कर डुबा दिया जाये। मैं गंगा में डूब कर मर जाऊंगा और शरीर के महान दुःख से छुटकारा पा जाऊंगा। घरेलू लोगों ने पालकी में लाला जी को बैठाया और नौकरों से पालकी उठवा कर, गंगा की ओर चल दिये। रास्ते में राम नाम का कीर्तन भी होता जा रहा था। कुछ दिन के बाद जब हरिद्वार में पहुंचे तो लाला जी पालकी से बाहर निकले इतने में कबीर का लड़का कमाला जी वहां पहुंच गए और बोले लाला जी क्या करने लगे हो। तब लाला जी बोले शरीर से दुखित होकर

गंगा में प्राण त्यागने लगा हूं। कमाले ने कहा आप हत्या से क्यों मरते यदि तुम्हारा कोढ़ ठीक हो जाये तो फिर। लाला जी बोले, फिर मुझे क्या जरूरत आत्म हत्या से मरने की। कमाले ने कहा, आओ मेरे साथ गंगा में। लाला जी चले गए। कमाले ने कहा राम कहो और गोता लगाओ, तुम्हारा कुष्ट ठीक हो जाएगा। लाला जी ने राम कह कर गोता लगाया। जब बाहर निकला तो कुष्ट अभी उसी तरह ही रहा। कमाले ने कहा, अभी तुम सच्चे हृदय से नाम नहीं लिया। फिर कहो राम। उसने फिर उसी तरह कहा लेकिन कुष्ट ज्यों का त्यों ही रहा। कमाले ने फिर कहा बोलो राम। लाला जी फिर राम कह कर गोता लगाते हैं। कुष्ट फिर भी नहीं छूटा। कमाला बोला अरे मनमुख तेरा अशुद्ध मन वाला राम तेरा कोढ़ नहीं हटा सकता है। कमाले के राम से तुम्हारा कुष्ट दूर होगा तो लाला जी ने कमाले के राम कह कर गोता लगाया। जब बाहर निकला तो एक दम देही पवित्र हो गई। लाला जी कमाले को साष्टांग प्रणाम करके सुखी मन से घर को वापिस हो गया। वह कमाले की महिमा करते जा रहे थे। जब कबीर जी को इस बात का पता चला कि कमाले ने राम कहलवाया और एक सेठ का कोढ़ दूर हो गया यह सुनकर कबीर जी कमाले के पास आ कर कहने लगे, बेटा तुमने एक बार राम का नाम कहलवा कर एक ही कोढ़ी का कुष्ट दूर किया है अभी तुम नाम के महत्त्व को समझे नहीं हो।

जाओ वहां एक मील की दूरी पर एक महात्मा जी बैठे होंगे। उन्हें कहना कि कबीर जी ने मुझे भेजा है। आप से नाम की महिमा समझाने के लिये। कमाला जी वहां पहुंच गए और उसी तरह नाम की महिमा समझने के लिये कह दिया। महात्मा जी ने कहा ठीक है। उन्होंने एक तुलसी के पते पर राम का नाम लिख कर पानी की बाल्टी में घोल दिया और कमाले को कहा, बेटा शहर में जितने लंगड़े, लुले, कोढ़ी पढ़े हुए हैं उनको इकट्ठे करके यह जल थोड़ा 2 पिला दिया जाये। सब का कोढ़ दूर हो जायेगा। कमाले जी ने ऐसा ही किया नगर के जितने भी कोढ़ी थे। सब बुला लिये। महात्मा जी उन सब को जल पिलाते गए उनका कुष्ट दूर हो गया। कमाला जी यह नाम की कमाई का चमत्कार देख कर बड़े हैरान हुए और उन्होंने महात्मा जी को प्रणाम किया और जाने

लगे तब महात्मा जी बोले बेटा नाम की महिमा और भी समझनी है तो एक मील आगे जाओ वहां एक महात्मा होंगे। वह मेरे से ज्यादा जानते हैं। उनके पास जाईये।

कमाला जी आगे उन के पास पहुंच गए। महात्मा जी ने कहा बेटा कैसे आए ? कमाला बोला महाराज नाम का महत्त्व समझने के लिए। इतने में पास ही नदी में एक मरे हुए आदमी की लाश बहती जा रही थी। महात्मा जी ने उस मुर्दे को बाहर निकाल कर उसके कान में शब्द कहा तो मुर्दा जिन्दा हो कर उठ के बैठ गया। कहा बेटा यह है नाम की महिमा। कमाला जी इस कौतक को देख कर दंग रह गये बोला बताओ इस ने पूरा राम शब्द भी नहीं कहा। आधा ही शब्द कहने से मुर्दा जीवित हो गया। कहने का मतलव यह है कि नाम की महिमा बेअन्त है। जिन लोगों ने नाम के रहस्य को जान कर नाम की कमाई की है उस का बहुत महान फल है। बाह्‌ नाम और अभयन्तर नाम में बड़ा अन्तर कहा गया है लिखा है :—

"कोटि बहतर जाप जवानी,
अजपा तुलत न कहन मुनि ज्ञानी ॥"

अर्थात बहतर करोड़ से जपा हुआ नाम, अभयन्तर अजपा जाप जाति निज नाम एक दफा युक्ति से कहा जाये तो बराबर हो जाता है ? यह है नाम का रहस्य अथवा नाम का महत्त्व। यही मेरा प्रथम विषय था।

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति ।



।। मानव का परम पुरुषार्थ ।।

प्रिय सत्संगियो, मैं यह बताऊंगा कि मनुष्य जन्म का परम पुरूषार्थ क्या है। वह है मोक्ष। मैं नहीं कहता हमारे धर्म शास्त्र भो कहते है :-

अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष यह चार पुरूषार्थ बताए है। अर्थात् शास्त्र कहता कि मनुष्य तुम धन कमाओ लेकिन धर्म युक्त कमाओ उस से वुद्धि शुद्ध सात्विक बनेगी और शुद्ध सात्विक बुद्धि वाला आदमी ही उस सत्य परमतत्व, आत्मदेव का चिंतन कर सकता है और जो आदमी धर्म को त्याग कर केवल धन के उपार्जने में ही लगा रहता है उन की कभी भी वुद्धि शुद्ध नहीं होती। ऐसे लोगों को भक्ति भजन में आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता जैसे हिल रहे पानी में हम अपना मुख नहीं देख सकते। जब पानी एक जगह स्थिर हो जाये तो मुख देखने में फिर देर नहीं लगती। इसी प्रकार जिस का मन संसार की वासनाओं का चिन्तन करता है उन को निज स्वरुप की पहचान कैसे हो? मन की चंचलता को रोक लेना ही मोक्ष की प्राप्ति है। मन को रोकने के लिये अभ्यास और वैराग्य है। अभ्यास का मतलव है एक ही चीज को बार बार याद करना यानि मन को नाम अथवा निज रुप में—एक जगह केन्द्रित कर देना असली अभ्यास है। जैसे लिखा भी है :—

"करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात है, सिल पर पढ़त निशान।।"

लेकिन आज सब से बड़ी कमी यह है कि मनुष्य अर्थ और काम के लिये खूब पुरुषार्थ करता है। धर्म मोक्ष के लिये कोई पुरूषार्थ नहीं करता। कितनी अज्ञानता छा गई है। धर्म और मोक्ष को प्रारब्ध पर छोड़ दिया है, अर्थ और काम को पुरुषार्थ पर। यह कितनी भूल है। जो लोग कहते है कि भक्ति-भजन क्या करना है हमारे प्रारब्ध में होगा तो करेंगे न ? लेकिन संसार के पदार्थों के लिये तो ऐसा नहीं कहते कि हमारे रुपया, पैसा, खान-पान कपड़ा-लता यह सब भाग्य में होगा तो मिल जायेगा। चिंता अथवा मेहनत

करने की क्या जरूरत है ? लेकिन इन चीजों के लिए तो रात दिन रोते हो। ठीक इसी प्रकार निज स्वरूप को पाने लिये अपने अन्दर तड़प पैदा करनी चाहिए। जब से हम संसार में जन्म लेकर आये है दुनिया के लिये ही रोते रहे फिर भी कुछ नहीं बना लेकिन कभी अपने निज रूप-इष्ट भगवान के लिये भी आंसू बहाये ? काश ! जितना दुनिया के लिये रोना रोया उतना भगवान से मिलने के लिए रोता तो तेरे लिये बैकुण्ठ रिर्जव हो जाता एक कवि ने कहा है :—

तेरी अख दी सिपदा इक मोती।
जे कर प्रभु चरणां ते डुल जावे।
तां फिर ओस दी दया दा सब सागर।
तेरे इक कतरे तो तुल जावे॥

महापुरूषों का कथन है :—

"जितना प्रेम कुटुम्ब से, उतना हरि में होय।
चला जात बैकुण्ठ में, पल्ला न पकड़े कोय॥"

भगवान् तो यहां तक कहते हैं कि :—

"प्रेमी के मैं कर बिकूं यह मेरा असूल,
चार मुक्ति दूं ब्याज में दे न सकूं मूल॥

मुक्ति चार प्रकार की है जिन के नाम निम्नलिखित हैं :—

1. सालोक्य 2. सामीप्य 3. सारूप्य 4. सायुज्य।

प्रभु प्रेमियों, यह प्रेमा भक्ति का फल है। शास्त्र या भगवान यह थोड़े कहते हैं कि कि तुम कर्त्तव्य को त्याग दो। नहीं ! कर्त्तव्य करो लेकिन उसका फल प्रभु अर्पण करना चाहिये। उस में आसक्ति नहीं होनी चाहिए श्री गीता में भगवान कृष्ण जो ने अर्जुन को कर्त्तव्य पर दृढ़ करने के लिए उपदेश किया और यहाँ तक कहा है। कर्त्तव्य का त्याग करना कायरता है। कई लोग कहते हैं कि यदि कर्त्तव्य का पालन करे तो भक्ति भजन नहीं हो सकता। यह अज्ञानी लोगों की बात है। सन्त महात्मा की संगत करने से इस का भेद मिल जाता है। जैसे नाव नदी में रहते हुए हजारों को पार करती है बशरते उस में पानी न आवे। ठीक इसी प्रकार संसार रूपो नदी में जीव की तरह रहे। मोह अथवा आसक्ति रूपी पानी

अपने अन्दर न आने दे तो अपना कल्याण हो सकता है। श्री गीता में बताया है अहम का त्याग ही कल्याण है। श्री रामायण में दर्शाया है :-

"कर से कर्म करो विधि नाना।
मन राखो जहां कृपा निधाना॥"

गुरवाणी में भी लिखा :—

मन बेचे सतगुर के पास।
तिस सेवक के कार्ज रास॥"

श्री कृष्ण भगवान ने भी अर्जुन के प्रति यही तो कहा था :—

मन और बुद्धि को मेरे अर्पण करके तुम अपने कर्त्तव्य को करो फिर न तुझे पुण्य और न पाप का फल लगेगा। कर्म करता हुआ भी अकर्ता होगा। इस सिद्धान्त से सब का उद्धार हो सकता है। अगर जीव आलस्य-प्रमाद को त्याग कर उत्साह पूर्वक साधन भजन के लिए पुरुषार्थ करे तब, अन्यथा नहीं। जो लोग आलस्य-प्रमाद के मारे हुए कहते हैं कि संसार में रहते हुए भजन कैसे हो सकता है। मैं एक कथा के माध्यम से समझा देता हूं। एक आदमी घोड़े पर सवार हुए जा रहा था और घोड़े को प्यास लगी हुई थी। देखा तो रास्ते में एक रहट चल रहा था तब वह घोड़े को रोक कर पानी पिलाने लगा। घोड़ा रहट के खड़ खड़ टन टन की आवाज से डरता था तो घोड़े वाला बोला। "रहट वाले खट-खट की आवाज को बन्द कर। घोड़ा इस आवाज के डर से पानी नहीं पी रहा है। तो रहट वाला कहने लगा। भाई! खट खट में ही पानी पिला ले अगर पिलाना है तो, खट खट बन्द होने से पानी भी बन्द हो जायेगा। घुड सवार इस बात को समझ गया ठीक इसी प्रकार दुनियां रूपी खट खट में ही रहता हुआ जीव भजन सुमिरण द्वारा तर सकता है। इन्सान हिम्मत और कोशिश करे तो क्या नहीं हो सकता। आ के दुनियां में बसर को रहना वाजिब किस तरह। जिस तरह तालाब के पानी में रहता कमल। पाके दौलत फिर वसर को रहना बाजिब किस तरह।

जिस तरह झुक कर रहे डाली वह जिस में आये फल, विचार शील आदमी संसार में रहते भी संसार से परे होता है। संसार उसका कुछ नहीं विगाड़ सकता। जैसे श्री रामायण में बताया है :—

विधि वस सुजन कुसंगत परहि ।
फनि-मनि-सम निज गुण अनुसरहि ॥

अर्थात विधि बस अगर कुसंग मिल भी जाये तो उनका रंग अपने में न ले बल्कि अपना सद्विचार, ज्ञान का प्रभाव उन पर डाले । मिसाल के रूप में जैसे सांप के मुख में जहर होता है और उसी तरह पास ही जहर के मनी भी होती है लेकिन मणि उस जहर को न ले कर अपना प्रकाश उस पर डालती है । और जहर मणि का कुछ नहीं विगाड़ सकता । इसी प्रकार सच्चे गुरमुख भक्त के ऊपर दुनियां का रंग चढ़ सकता । फकत भक्त की निष्ठा परिपक्व हो । विश्वास पूर्वक दृढ़ होकर अपनी साधना में लगा रहे । किसी की न सुने कौन क्या कहता है और कौन क्या करता है, अपनी निभावे । जैसे भी लिखा है :—

कौन कहता है चाह मुश्किल,
चाह नहीं मुश्किल निभा मुश्किल ।

कहने का मतलब यह है कि दुःख-सुख, निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, परिस्थितियां अपने अनुकूल न होते हुए भी भक्ति भजन, धर्म कार्य को नहीं छोड़ता चाहे प्राण भी चले जायें । इस तरह की धारणा रखने वाले प्रेमी भक्त के लिये कुदरत भी सहायता करती है यानि उसके ऊपर सत्य स्वरूप का राज खुल जाता है । इस पर एक कथा है :-

एक "टटीरी" पक्षी के अण्डे समुन्द्र के किनारे पर थे । एक समय समुन्द्र में बाढ़ आई और अण्डे उस में बह गए । "टटीरी" समुन्द्र पर बड़ी बिगड़ी कहने लगी कि मेरे अण्डे बाहर निकाल दे ! भला वहां कौन सुने उस की । तब उसने प्रण किया और कहने लगी, 'ए समुन्द्र देव तूने मेरे अण्डे वापिस नहीं लौटाये तो मैं भी तुझे सूखा दूंगी और तुम्हारा नामोनिशान मिटाऊंगी । बस फिर क्या था ? 'टटीरी' अपनी चोंच द्वारा समुन्द्र का पानी लगी बाहर फैंकने । कई दिन इसी तरह लगातार हो गए कुछ चिड़ियों ने उसे देखा तो वे कहने लगी यह तेरे बस का नहीं है समुन्द्र सुखाना ।

इस कार्य को छोड़ दो, नहीं तो मर जायेगी और समुन्द्र भी सूख नहीं पायेगा । टटीरी ने उत्तर दिया कि तुम मेरी कैसी बरादरी हो ! मेरी

सहायता अथवा मेरे दिल में उत्साह को न बढ़ा उल्टा मेरे विश्वास को तोड़ने और गिराने के लिए सब आई हो। तुम अपने घर जाकर काम करो मुझे ऐसा उपदेश मत सुनाओ। मेरे प्राण भी अगर निकल जाये तो भी मैं इस कार्य को नहीं छोड़ंगी। कहने लगी।

'मर जाऊ छोड़ं नहीं, जब तक तन में प्राण।
होना है सो होने दो, लाज रखे भगवान ।।"

जब इतनी बड़ी धारणा टटीरी की देखी तो वह चिड़िया बहुत लज्जित हुई ओर सब एका एक सहायता को जुट गई वे भी समुन्द्र से पानी चोंच भर कर बाहर फैंकने लगी। लिखा भी है।

"यहां सुमति तहं सम्पति नाना।
यहां कुमति तहं विपति निधाना।"

परिणाम क्या हुआ कुल संसार के पक्षी (चिड़ियाँ) वही इकट्ठे हो कर टटीरी की सहायता में लग पड़ी। होते होते पक्षियों के राजा (गरुढ़) को भी खबर पहुंची तो गरूढ़ जी ने आकर देखा तो उन पर बड़ी दया आई। वे झट विष्णु भगवान के पास गए और कहने लगे प्रभु सब दुनियां भर के पक्षी टटीरी के अण्डों के लिए समुद्र सुखाने में प्राणों की बाजी लगाई हुई है इस लिये आप कृपा करके टटीरी के अण्डे समुन्द्र से वापिस दिलवा दीजिए। भगवान विष्णु उनकी धारणा परिपक्व देख कर बड़े प्रसन्न हुए और उसी वक्त समुन्द्र देवता को कहा कि टटीरी के अण्डे वापिस करो। उसी वक्त समुन्द्र देवता वहां प्रकट होकर हाथ में टटीरी के अण्डे ले कर आये और उन्हें कहने लगे यह लो अपने अण्डे। तुम्हारी जीत हमारी हार।

प्रभु प्रेमियों ! मेरे इस कथा सुनाने का मतलब था विश्वास अथवा अपनी धारणा को परिपक्व करके साधन भजन में दृढ़ हो कर लगना चाहिए तभी तृप्ति होगी। देखो जमीन के नीचे पानी सब जगह होता लेकिन हम पी नहीं सकते। पी तो तभी सकेंगे जब कोई नल या कुआं खोदेंगे। ठीक इसी प्रकार भगवान हम सब में है लेकिन प्राप्त तभी कर पायेंगे जब हम साधन अभ्यास करेंगे। अब रहो बात साधन अभ्यास की। उसे कैसे करना है ? उसके लिये सन्त सतगुर के पास जाकर युक्ति प्राप्ति करनी

चाहिये। जैसे लिखा है :—

ज्यों पारस के स्पर्श सों लोहा कंचन होये।
त्यों संतन के संग सों, जड़ से चेतन होये॥

लेकिन ऐसा किन के लिए होता है जो लोग श्रद्धा पूर्वक सन्तों का संग करते हैं उन को मैं नहीं कहता, हमारे शास्त्र अथवा धर्म ग्रन्थ कहते है :—

"श्रद्धावान लभ्यते ज्ञानम्-ज्ञानात् देवत्य कैवल्यम्।

अर्थात श्रद्धावान को ही ज्ञान होता है, ओर ज्ञान से ही कैवल्य पद की प्राप्ति होतो है फिर जीव अधोगति, जन्म मरण आदि महान दु:खों से छूट कर परमानन्द को प्राप्त होता है। यही एक मानव जीवन का सच्चा लाभ अथवा परम पुरुषार्थ है। यहो मेरा प्रथम विषय था।

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।



।। गुरुमुख धर्म ।।

प्रभु प्रेमियों ! देखना यह है कि गुरुमुख का धर्म क्या बनता है। आज हमें कोई गुरुमुख या भक्त कह कर पुकारता है तो हम बड़े खुश होते है और फूला नहीं समाते लेकिन गुरू की आज्ञा को टाल देते हैं जैसे गुरू कहता है बेटा ; मांस नहीं खाना, शराब नहीं पीना, सिनेमा नहीं देखना, जूआ ताश नहीं खेलना, किसी की बुराई अथवा निन्दा नहीं करना, कुसंग को छोड़ कर सतसंग में जाना, दीन दुःखी की सेवा करना यह सब गुरू अथवा शास्त्र की आज्ञा है लेकिन हम यदि इन सब बातों के उल्ट ही चलें और अपने आप को गुर मुख ही समझे तो यह बात गलत है वह गुरमुख नहीं होते उसे मनमुख हो कहते हैं। गुरु मुख का तो अपना मन ही नहीं होता। जो मन की बात पर गुरु को चलाता है उसे गुरमुख नहीं कहते। गुरमुख वह होता है जो गुरू के मुखारबिंद से आज्ञा होती है उस के मुताबक चले अथवा वही करे। यदि गुरु अपने सेवक से दिन को रात कहे और रात को दिन तो सेवक का धर्म बनता है सत वचन जो कह रहे हो ठीक है जैसे एक उदाहरण है :—

भक्त एकनाथ को गुरु जी ने कहा बेटा तुम्हारे को आज्ञा है तुम हमारी हजूरी में रहना और मन्दिर में जो चड़ावा चढ़े उस को अपने पास रखो और गिन कर पूरा हिसाब हमें दिया करो। भक्त एकनाथ जी कई साल उस सेवा को सच्चाई और बफादारी से करते रहे। एक दिन गुरू जी ने भक्त लोकनाथ की थैलो से अपने योगमाया से एक पाई निकाल ली। जब भक्त एकनाथ जी गुरू जी को थैली में से पैसे देने लगे तो हिसाब में एक पाई घटती थी। भक्त एकनाथ जी फिर गिनने लगे लेकिन एक पाई फिर घटती थी। इसी प्रकार भक्त जी ने बहुत बार गिनती की लेकिन एक पाई घटती ही नजर आई। आखिर गुरु जी ने पूछा, बेटा ! आज क्या बात है जो इतनी बार पैसे गिन रहे हो तो भक्त एकनाथ जी ने कहा गुरूदेव हिसाब से एक पाई कम हो गई है। गुरू जी ने कहा तुम सेवा में फेल हो गए हो। एकनाथ बड़ा घबराया। पश्चाताप करते हुए रोने लगा इसी

हालत में दिन के 12 बजे तो गुरु जी ने कहा बेटा एकनाथ जाओ आराम करो अब रात के 12 बज गए हैं। भक्त जी कुछ नहीं बोले। गुरू जी ने कहा तुम बोलते नहीं हो क्या मैंने रात के बारह बजे हैं कहीं गलत तो नहीं कह दिया। भक्त एकनाथ जी बोले नहीं गुरुदेव आप दिन को रात रात को दिन बना सकते हैं। इसलिये जो कहते हो ठीक है। गुरू जी एकनाथ चेले पर बड़े प्रसन्न होकर कहने लगे बेटा! आज तुम्हारी गुरू भक्ति की परीक्षा थी तुम पास हो। वह पाई भी मैंने चुरा रखी थी। इसलिये तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। तुझे मैं आर्शीवाद देता हूं जो योगीजन जंगलों में घोर तपस्या यानि प्राणायाम करके मोक्ष को प्राप्त हैं तुम्हारे को सच्चाई वफादारी व सेवा से ही प्राप्त हो सकती है। शास्त्र भी कहता है :— "आज्ञा सम न सुसाहिव सेवा" परम पूजनीय श्री सतगुर हीरानन्द जी का भी कथन है :—

"सेवा बराबर तप नहीं, नहीं सेवा संग दान।
हीरा सेवा से ही पाईये, पद निर्वाण॥"

अर्थात गुरु जी की आज्ञा के तुल्य कोई सेवा नहीं है। सेवा के बराबर कोई तप अथवा दान नहीं है। जैसे वाणी में ही लिखा है :—

गुरु के गृह सेवक जो रहे, गुरु की आज्ञा मन में सहै।
बीस बिसवै गुरू का कहा माने, सो सेवक परमेश्वर की गति जानै
सेवक को सेवा बन आई, हुक्म बूझ परम गति आई।
मन बेचे सतगुरू के पास, तिस सेवक के कारज रास॥

गुरू की सेवा का पालन तो भाई लैहना जी ने किया था। एक मृत आदमी पड़ा था। गुरू नानक देव जी कहते हैं कि इस मुर्दे को कोई खायेगा। सब देखते ही रह जाते हैं कि ऐसी आज्ञा कौन माने। इतने में भाई लैहना जी आकर कहने लगे गुरु जी मुरदे को पैरों की तरफ से खाऊं या सिर की तरफ से। गुरू नानक देव जी बोले चाहे जिधर से मर्जी खाओ इसमें दोष वाली कोई बात नहीं है। होता क्या है जब भाई लैहना खाने को गए और उपर से पर्दा हटाया तो मुरदे का हलवा यानि कड़ाह प्रसाद बना हुआ दिखाई दिया। इस तरह के सच्चे गुरमुखों के लिये गुरू का बचन फलीभूत होता है सब के लिए नहीं। जैसे एक समय भाई लंहना और लक्ष्मी चन्द और

श्री चन्द जी बाबा गुरु नानक देव जी के साथ जा रहे थे तो गुरू नानक देव जी की मुन्दरी गंदी बदररोत वाली नाली में गिर गई तो गुरु नानक देव जी कहने लगे भाई ! कोई नाली में जा कर मुन्दरी निकाल लाओ । लक्ष्मी चन्द आदि साहिबजादे बोले, भला बताओ इस गंदी नाली में कौन जाये । चलो मुन्दरियों का कोई घाटा है। गुरु जी बोले, बेटा घाटा तो किसी बात का नहीं लेकिन हमारी आज्ञा की तो कोई कदर नहीं रही। इतने में भाई लैहना जी भी पीछे से आ पहुंचे तो कहने लगे गुरु देव जी इन साहिबजादों से क्या वर्तालाप हो रही थी। गुरू नानक देव जी बोले बेटा ! हमारी मुन्दरी हाथ से इस गंदी नाली में गिर गई है मैंने इस लड़कों से कहा कि इस नाली से मुन्दरी को निकालो लेकिन यह कहते है कि गन्दी नाली में कौन जाये। इतनी बात सुन कर भाई लैहना जी वस्त्र समेत ही गंदी नाली में कूद पड़े और मुन्दरी निकाल कर गुरु नानक देव जी को दी । उस समय गुरु नानक देव जी ने भाई लैहना जी को अपने गले लगा कर कहा तुम ने लेना हम ने देना। इस का मतलव यह है गुरु नानक देव जी ने भाई लैहना को देने की जगह क्या दिया 'रूहानी ताक्त' उन्होंने अपने श्री मुख से कहा था तुम हमारे अंग लगे हो इस लिए तुम्हारा नाम गुरु अंगद होगा। यदि गुरु के हुक्म में रहने वाले को यह फल होता है । सेवक से गुरू की पदवी मिली। इसलिये वाणी में लिखा है :—

"हुक्में अन्दर सब को वाहर, हुक्म न कोय।"

अर्थात जो गुरू की आज्ञा के अधीन रहता है उस को निज धाम, दयाल देश को प्राप्ति होती है और जो भक्त गुरु वचन त्याग कर मन वाला काम करता है वह काल देश हो जाता है। मैं नहीं, सन्त कबीर जी फरमाते हैं :—

"गुरु बचन को उलांध कर सेवक जहां जाये।
जहां जाए तहां काल है, कहे कबीर समझाये ।।"

सच्चे गुरूमुख का दर्जा तो गुरु से भी बड़ा कहा गया है जैसे रामायण में लिखा है :—

"स्वामी से सेवक बड़ा चारों युग प्रणाम ।
सतू बांध रघुवर गए कूद पड़े हनुमान ।।"

कहने का मतलव यह है कि स्वामी राम समुन्द्र पर पत्थरों का पुल बांध

कर पार किये थे और सेवक हनुमान बिना पुल के ही छलांग लगा कर पार कर गये थे। जैसे रामायण में ओर भी सेवक के विषय में लिखा है :—

"मेरे मन प्रभु अस विश्वासा,
राम ते अधिक राम कर दासा ॥

सन्तों का कथन है :—

"हरि से जनमत् हेत कर, कर हरि जन से हेत।
माल मुल्ख हरि देत है, हरि जन हरि को देत ॥"

अर्थात महापुरूषों ने फरमाया है कि भगवान से मत प्रेम कर। जो भगवान के सच्चे भक्त यानि दास हैं उन से प्रेम कर क्योंकि भगवान तो माल मुल्क दुनियां के जाल को देता है और भगवान का भक्त भगवान को ही देता है। दरबार साहब में भी लिखा है :—

"गुरूमुख ढूंढ ढडेदियां हर सज्जन लद्धा"

यानि गुरुमुख भक्त को ढूंढ लेना हो भगवान को ढूंढ लेना है जैसे भाई वुड्डा सिंह गुरमुख जी की एक कथा है। छेवी पातशाही गुरु हरगोबिन्द राये दरबार में संगते गुरू की जय जयकार लगाये और शब्द गाते जा रही थी। माई सुलखनी ने सोचा कि मेरे सन्तान नहीं है इस लिये मैं भी गुरू के दरबार जाती हूं और वहां से सन्तान का वर मांग लाऊंगी। सो इस भावना को लेकर मईया सुलखनी गुरू छेवीं पातशाही के दरबार में पहुंच गई। गुरू साहिब जी ने पूछा कि मईया तुम कैसे आई हो। मईया सुलखनी बोली, महाराज मेरे सन्तान नहीं है आप कोई बच्चा देने की कृपा करें।

इस भाव से मैं यहां आई हुं तो महाराज जी ने कहा मईया तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है मईया सुलखनी गुरू के बचन सुनकर बड़ी निराश हुई और श्रद्धाहीन हो कर वहां से घर को चल दी। रास्ते मे गुरू की व गुरू दरबार की निंदा करती जा रही थी। आगे से भाई वुड्डा सिंह जी मिल पड़े। उन्होंने पूछा मइया गुरू की निंदा क्यों कर रही हो। निंदा अथवा सुनना भी महान् पाप होता है। जैसे लिखा है :—

"गुरू की निंदा सुने जो काना,
गऊ घात लगे पाप समाना।"

सो भाई बुड्डा सिंह जी कहते हैं कि मैं गुरु की निंदा नहीं सुन सकता तो मईया सुलखनी बोली, गुरमुख जी मैं निंदा इसलिये कर रही हूं कि मैं सन्तान की आशा रख कर गुरू दरबार में गई थी लेकिन गुरु जी ने मेरा दिल ही तोड़ दिया। कहने लगे तुम्हारे भाग्य में सन्तान नहीं है। गुरमुख भाई बुड्डा सिंह जी बोले मईया मैं कहता हूं जाओ तुम्हारे घर एक लड़का होगा लेकिन आज से लेकर गुरु की अथवा गुरू दरबार की निन्दा मत करना सुलखनी बोली 'सतवचन' मैं आज से निंदा नहीं करूंगी। इतना कह कर मईया सुलखनी फिर गुरु दरबार में गई। छेवीं पातशाही गुरु महाराज जी को कहने लगी आप कहते थे कि तुम्हारे भाग्य में सन्तान है ही नहीं लेकिन आपका चेला गुरमुख भाई बुड्डा सिंह जी ने कहा है कि तुम्हारे एक लड़का जरुर होगा। गुरू हर गोबिन्द राय बोले मईया भाई बुड्डा सिंह जी ने छैवी पीढ़ी तक गुरू वचन और गुरू दरबार की सेवा सच्चे दिल से की है वह अवश्य पूरा होगा क्योंकि निष्ठा और विश्वास का यह फल है इसलिये गुरमुख का दर्जा गुरू से भी महान कहा जाता है। प्रभु प्रेमियों। गुरु समुद्र और चेला बादल है। जैसे समुन्द्र से भाप बादल बन कर जब बारिश होती है सब जगह पानी आता है। ठीक इसी प्रकार गुरू से ज्ञान प्राप्त करके चेला संसार में उस ज्ञान को फैलाता और बांटता है। गुरू को चन्दन की तरह भी शास्त्रों में कहा गया है और चेला पवन की तरह कहा गया है। जैसे चन्दन का पेड़ सबसे अच्छा होता है। लेकिन सुगन्ध की पहचान हवा के बिना नहीं हो सकती। हवा जब चलती है तो चन्दन की सुगन्धि सर्व ओर फैला देती है। ठीक इसी प्रकार गुरू की उपमा अथवा ज्ञान बगैर गुरमुख के किसी को नहीं हो सकता। इस दृष्टि कोण से गुरु से भी बढ़ कर गुरमुख को माना जाता है। फल तो भक्त को सच्चाई और भावना का होता है। जितना ऊंचा अपने इष्ट के प्रति कोई भाव बनाएगा उतना ऊंचा उसका हृदय भी जरूर बनेगा। एक प्रमाण है कि एक समय श्री गुरू शंकराचार्य जी स्नान कर रहे थे तो उन्होंने अपने चेले को आवाज लगाई, कहा बेटा मुझे कटी वस्त्र यहो गंगा में ही आ कर पकड़ा दीजिए लेकिन चेला सोचता है कि गुरू महाराज जी के स्नान करने से गंगा तो सारी चरणामृत बन गई है। इस लिए इस चरणामृत में पांव रख कर मेरा चलने का धर्म नहीं बनता लेकिन उधर गुरू महाराज की आज्ञा भी है इस लिये क्या करूं चेले ने अपनी हृदय की भावना प्रकट कर दी तो गुरू भगवान शंकराचार्य

जी अपने शिष्य की दिव्य भावना को देखकर अति प्रसन्न हुए। इतने में क्या होता है कि गंगा में स्वर्ण के पदम उत्पन्न हो जाते हैं तब वह चेला उन स्वर्ण के फूलों पर चल कर गए और गुरु जी को कटि वस्त्र दे दिये। गुरु शंकराचार्य जी हृदय को देख कर चकित से हो गए और कहने लगे बेटा तुम्हारे हृदय के दिव्य भाव के फलस्वरूप ही गंगा में यह सोने के पदम उत्पन्न हुए है तुम अपने पाद इन पदमों के ऊपर रख कर गंगा में चले इस लिये मैं तुम्हारे गुरुमुख धर्म पर प्रसन्न हो कर आज से तुम्हारा नाम पदमपाताचार्य रखता हूँ। यह होता है गुरमुखों का धर्म श्रद्धा और विश्वास। भाव हीन जीवों को गुरू दर्शन, गुरु भक्ति, गुरु सेवा का यथार्थ फल नहीं होता। एक घटना मेरी आंखों देखी है जब इस वर्ष पहले विश्व में अष्ट ग्रह आये थे। उस समय पर पूजनीय श्री गुरु हीरानन्द पुरी जी महाराज शहर दोरांगला में पधारे हुए थे। उनके स्नान कराने की सेवा सुबह चार बजे इस दास की थी। हम और भक्त बूआदास की भी थी। हम दोनों रोज गुरू महाराज जी के चरणो के चरणामृत बना कर रख लेते थे। जो श्रद्धालु गुरुमुख मांगते थे, उन को दी जाती थी। एक दिन डुगरी गांव से संगत चरणामृत लेने के लिये आई। यह दास चरणामृत बांट रहा था उन में एक मनमुख गैर उपदेशी ब्राह्मणी मईया भी खड़ी थी। उसने चरणामृत लेने के लिये तो कहा नहीं था लेकिन मैंने उस को उपदेशी समझ कर कहा ? मईया का अन्दर से मन चरणामृत लेने को नहीं था लेकिन कहने के अनुसार उसने हाथ आगे कर दिये। मैंने उसको चरणामृत दे दी। उस मईया ने क्या किया हाथ तो मुंह की और किया लेकिन चरणामृत पिया नहीं नीचे अपने वस्त्रों पर गिरा दिया। होता क्या है उसी समय मईया के शरीर में छाले पड़ गए। मईया करने लगी हाये यह ऐसा मेरे शरीर को क्यों हो गया है। हमने कहा मईया झूठ मत बोलना आप के मन में जात पात का ख्याल जरुर उत्पन्न हुआ होगा जो कि मेरे इष्ट देव का चरणामृत का अपमान करने के फलस्वरूप ही आप के शरीर में यह छाले पड़े होंगे। मईया झट से बोली हां भक्त जी मेरे मन में यह आया था कि यह कुम्हारों के गुरु हैं और मैं ब्राह्मणी हूं। इस ख्याल से मैंने चरणामृत पिया ही नहीं और गिरा दिया। मैंने फिर मईया से कहा साधू महात्मा की जात नहीं पूछनी चाहिये। जैसे लिखा है :—

"जात न पूछे साध की पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल कीजिये तलवार का, पढ़ी रहन दो म्यान॥"

इन बातों में किसी को नहीं आना चाहिए। यह केवल कुम्हारों के ही गुरु नहीं हैं बल्कि समस्त जगत के स्वामी हैं लिखा भी है :—

जगत गुरु मानियों ब्राह्मण ब्राह्मण मानियों सन्यासी।

यानि शास्त्र भी यह कहता है ब्राह्मण का गुरु सन्यासी होना चाहिए मईयां यह सब बातें सुन कर मन ही मन में पश्चाताप करने लगी और गुरु महाराज जी के चरणों मैं जाकर प्रणाम करके क्षमा मांगी और गुरू दीक्षा ली प्रभु प्रेमियों इस देखी हुई घटना को मेरा सुनाने का मतलब था कि भाव और कुभाव में यह अन्तर होता है जिस सेवक के मन में अपने गुरू के प्रति अक्षेप अथवा शंका बनी रहती है वह अध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता। एक समय गरूड़ जी को अपने इष्ट राम भगवान पर शंका हो गई थी। जिस समय भगवान राम युद्ध के मैदान में नागफांस में बन्दे हुए थे। गरूड़ जी ने इस दृश्य को देख कर कहा हम इनको भगवान समझ कर आये थे लेकिन यह भगवान नहीं हैं जो अपने आप को इन नागों के लपेटों से नहीं छुड़ा सकते तो बताओ यह हमको जन्म मरण के चक्कर से क्या छुड़ाएंगे चलो हम इनको नागफांस से छुड़ादे हैं। गरुड़ जी गए और अपनी चोंच द्वारा उन नागों को डरा धमका कर भगा दिया। गरूड़ जी कहने लगे इस भगवान से तो मैं ही बड़ा हूं। जो कि सांपों से इनको बचा दिया ऐसा मन में सोच कर गरूड़ जी वहां से चल दिये तो रास्ते में शंकर भगवान जी से भेंट हो गई। शंकर जी ने कहा गरुड़ जी कहां से आये। बोले गए तो थे राम रूप भगवान का दर्शन करने लेकिन वहां उनको नागफांस में बन्धा हुआ देख कर मेरे मन में उनके प्रति शंका हो गई कि यह भगवान नहीं हैं ऐसा आक्षेप करते हुए चल दिया। भगवान शंकर कहने लगे गरुड़ जी तुम्हारे जीवन का सत्यानाश हो गया कि तुम इष्ट पर शंका कर बैठे हो वह तो उनकी नर लीला थी। तुम नर लीला में आ गए हो जैसे वाणी में भी लिखा है :—

"सतगुरू सांग पलटियां सिख सिदक न डोले।"

अर्थात इष्ट गुरू कोई भी नर रुप में स्वांग धारण करे तो उस सेवक को

विश्वास नहीं तोड़ना चाहिए। गरूड़ जी बोले इस समय तो मेरा विश्वास टूट गया है आप कृपा करके कोई ऐसा उपाय बता दीजिएगा जिससे मेरा फिर पूर्ण विश्वास इष्ट के प्रति हो जाये। शंकर जी बोले :—

"चलते मार्ग गरुड मिलयो अब मोहि।
कहूं भांति समझाऊं तोहि॥"

अर्थात शंकर भगवान कहते है कि गरूड जी मार्ग में में चलते समय तुम अब मिले हो इतनी जल्दी किस विधि से तुझे समझाऊं कि इष्ट को कैसे प्रसन्अ किया जा सकता है। हां एक उपाय हैं तुम भगवान के सच्चे गुरमुख भक्त काग भशुण्डी जी की संगत करो और श्रद्धापूर्वक लगातार उनका सतसंग सुनो तब तुम्हारी शंका दूर होगी ओर पुनः अपने ईष्ट पर विश्वास कायम हो जायेगा क्योंकि लिखा भी है :—

"जब कछू काल करो सतसंगा।
तब होवे संशय भ्रम भंगा॥"

तब गरूड़ जी ने काग भशुण्डी जी के पास भाव सहित जाकर सतसंग के द्वारा अपनी शंका दूर की और भगवान के अनन्य प्रेमी भक्त बने। इस कथा का मतलव था कि इष्ट पर शंका करने से भक्ति नष्ट हो जाती हैं। लिखा है :—

"जाको गुरु पर शंका होई, जन्म मरण दुःख भोगे सोई।
जाको गुरू पर पूर्ण विश्वासा, ताको मेरे जन्म की त्रासा॥"

अर्थात जो लोग गुरु पर शंका रखते हैं। उनको पूर्ण जन्म-मरण का दुःख भोगना पड़ता है। जिन लोगों का गुरू पर पूर्ण विश्वास होता है जो किसी के कहने पर भी विश्वास में कमी नहीं करते यानि आने देते। ऐसे गुरमुखों के लिए यम की त्रास मिट जाती है और उनकी परम गति होती होती है। गुरू मूर्ति पर कैसा विश्वास होना चाहिए जैसा एकलव्य का हुआ। एक समय जिकर है कि एक बार एकलब्य जी गुरु द्रोणाचार्य जी के पास अस्त्र शस्त्र विाद्या सीखने के लिए गए तो द्रोणाचार्य जी ने इन्कार कर दिया और कहने लगा कि मैं राजकुमारों को ही शस्त्र विद्या सिखाता हूं और किसी छोटी जाति को नहीं तो एकलव्य जी बोले गुरूदेव जी जैसी आपकी मौज, इतना कह कर

वहां से घर को चल दिये लेकिन मन में गुरू द्रोणाचार्य को गुरू मान लिया था और उनका तसब्बर अपने हृदय में वसा लिया । वह जंगल में कुटिया बना कर उसमें गुरू द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर रख लेते हैं उसी मिट्टी की मूर्ति में गुरू द्रोणाचार्य जी को साक्षात समझ कर और पूर्ण श्रद्धा निष्ठा बना कर साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं और मन ही मन में कहते हैं गुरूदेव हुक्म करो, शस्त्र कैसे चलाऊं। उस एकलव्य भक्त की लगन अथवा सच्ची भावना का असर यह पड़ा कि गुरु द्रोणाचार्य जी की मूर्ति बोलती है और संकेत करती है कि बेटा तीर ऐसे छोड़ो इसी तरह एकलव्य जी अपनी सच्ची धारना के अनुसार मिट्टी की मूर्ति में चैतन्य इष्ट का रूप मान कर अस्त्र शस्त्र विद्या में निपुण हो गए । यहां तक एकलव्य धनुर्विद्या में इतना निपुन तथा पूर्ण हो गये कि अर्जुन जैसे वीर भी उस धनुर्विद्या को देख कर चकित रह गए। एक समय एकलव्य जी तीर का निशाना बाँध रहे थे कि उधर से एक कुत्ते ने भौंकना शुरू कर दिया उस कुत्ते की आवाज से एकलव्य जी का निशाना चुकता था। इसलिए उन्होंने सोचा कि पहले कुत्ते का भौंकना बन्द कर ले फिर वह निशाना ठीक बेठेगा। एकलव्य जी ने क्या किया कि उस कुत्ते के हल्क में इस तरह तीर छोड़े कि उसका मुंह तीरों से भर दिया और कुत्ते का भोकना बन्द हो गयालेकिन सिफत यह थी कि कुत्ते के गले में एक तीर ने भी जख्म नहीं किया । तीरों से उसका हल्क भी बन्द कर दिया और कुत्ता भी जीवित रहने दिया । यह कौतुक अर्जुन जी ने देख लिया था क्योंकि वह गुरू द्रोणाचार्य जी के साथ जंगल में सैर करने आये हुए थे। रोता क्या है अर्जुन जी भक्त एकलव्य के पास जाकर कहने लगे कि मैं तुम्हारी धनुर्विद्या पर बहुत प्रसन्न हूं लेकिन यह बताओ कि अस्त्र-शस्त्र चलाने वाले तुम्हारे गुरु कौन है ? एकलव्य जी बोले, हमारे गुरु हैं द्रोणाचार्य जी महाराज। यह बात सुनकर वह बड़े हैरान हुए और कहने लगे तुम झूठ बोलते हो हमने तो तुम्हें कभी गुरु द्रोणाचाय के पास नहीं देखा है अच्छा गुरू जी से पूछ लेते हैं। अर्जुन गुरू द्रोणाचार्य को कहने लगे आप मुझ कहते थे कि अर्जुन तुम्हारे जैसी शस्त्र विद्या मैंने दुनियां में किसी को नहीं सिखाई। अर्जुन बोले मैं अभी आपके सामने उसको लाता हूं। अर्जुन जी एकलव्य के पास जाकर कहने लगे कि चलिये गुरु जी के पास इस बात को सिद्ध करियेगा आप उनके शिष्य हैं

कलव्य जी गुरू द्रोणाचार्य के पास हाजिर होकर कहने लगे मेरे गुरू तो आप ी है। जब मैं आपके पास शास्त्र विद्या सीखने के लिए गया था तो ापने इन्कार कर दिया था कि मैं राजकुमारों को विद्या सिखाता हूं ओर किसी को नहीं। तब मैंने जंगल में आकर आपकी मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसको आपका साक्षात रुप मान कर दण्डवत प्रणाम करता रहा। आप ही तो उस मूर्ति में बोलकर संकेत से कहते थे तीर ऐसे चलाओ अगर किसी को नहीं विश्वास तो वहां चलकर देख लिया जाये। अर्जुन और द्रोणाचार्य जी ने वहां पहुंच कर देखा तो गुरू द्रोणाचार्य का सचमुच मिट्टी का माडल पाया। गुरु द्रोणाचार्य जी ने अर्जुन को कहा, मैंने इसको धर्नुविद्या नहीं सिखाई यह तो अपनी निष्ठा से हमारा मिट्टी का फोटो बनाकर सीख गया। अर्जुन भी एकलव्य की गुरु भक्ति के आगे नतमस्तिक हुए। प्रभु प्रेमियों इस कथा सुनाने का भाव यह था कि एकलव्य ने तो अपनी भावना द्वारा उस मिट्टी की गुरुमूर्ति से चेतन्य उस सत्य को प्रकट कर लिया था तो क्या हम चलती फिरती जीती जागती उपदेश करती हुई गुरु मूर्ति से उस परम तत्व को प्राप्त नहीं कर सकते? जब हमें गुरू वचन को मान कर और उस पर पूर्ण श्रद्धा विश्वास रखकर चलेंगे तब ही। जैसा लिखा है :—

"गुरू कहे सो कीजिये सब कारज सिद्ध होय।
चौरासी आवे नहीं जन्म मरण नहीं कोय॥
गुरमुख सोई जानिए जो गुरु का वचन कमाये।
आधोगति को जाये नहीं परम पद को पाये॥"

इसी को कहते हैं गुरमुख धर्म ! यही मेरा प्रथम विषय था॥

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।



॥ ईश्वर दर्शन ॥

उस आत्म परम तत्व अथवा ईश्वर दर्शन बातों से नहीं होता बल्कि करनी करने से होता है बातें तो हम बहुत सुना देते हैं लेकिन देखना यह हैं कि हमारा अमल उन बातों पर है एक उदाहरण मिलता है। एक महात्मा के पास एक गांव के लोग आए और कहने लगे महात्मा जी हमारे गांव चलिए और हमें कुछ ज्ञान सुनाईये। महात्मा जी गए वहां जाकर सब लोगों से कहने लगे, कि तुम सब लोग ईश्वर को मानते हो। उन्होंने उत्तर दिया "जी हां।" तो महात्मा जी ने कहा कि जब ईश्वर को जानते हो, मानते हो तो फिर हो गया उपदेश। हम जा रहे हैं। बाबा जी उठे और अपने आश्रम पहुंच गये। गांव के लोगों ने कहा कि कल हम सब बाबा जी को कहेंगे फिर उपदेश सुनाने के लिये जब वह पूछेगें कि क्या तुम ईश्वर को जानते हो तो हम कहेंगे नहीं तब बाबा जी महाराज सतसंग सुनायेंगे उन लोगों ने ऐसा ही किया। बाबा जी को सतसंग के लिए बुलाया। जब बाबा जी ने पूछा कि तुम ईश्वर को मानते हो तब सभी बोले "जी नहीं।" बाबा जी कहने लगे कि जब तुम मानते ही नहीं हो कि ईश्वर है तो फिर हम उसके लिये क्या सुनावे। जब वह है ही नहीं तो हम चलते है। बाबा जी फिर अपनी कुटिया को चल दिए। लोग बड़े हैरान हुए कि यह बाबा बड़ा अजीब है। जब हम कहते है कि ईश्वर को मानते है तो कहता है फिर उपदेश को क्या जरुरत है और जब हम कहते हैं कि नहीं जानते तो कहते हैं जब वह है नहीं तो उसके लिए फिर कहना ही नहीं बनता। अच्छा अब की बार बाबा जी को बुला कर सतसंग के लिये कहेंगे। जब वह पूछेगे कि ईश्वर को मानते हो आधे लोग कहेंगे 'हां' और आधे लोग कहेंगे नहीं तो फिर बाबा जरुर सतसंग सुनायेंगे। बाबा जी को बुलाया और कहा कि सतसंग सुनाओ तब बाबा जी कहने लगे जो ईश्वर को जानते है वह उन को जानते है वह उनको जनादो जो नहीं जानते। अब मेरी क्या जरूरत है। बाबा जी उठे और चल दिए। लोगों ने कहा कि बाबा जी किसी तरह भी काबू नहीं आते, चलो अब सब लोग इक्ट्ठै हो कर बाबा जी के पास प्रणाम करके वैठ जायेंगे।

कुछ नहीं कहेंगे उनकी मौज होगी तो उपदेश करेंगे ऐसा भाव बना कर सब बाबा जी के पास गए। सब कोई नहीं बोलता तब बाबा जी प्रसन्न हो कर कहने लगे कि एक तुम उपदेश सुनने के भावनुसार बैठे हो। ठीक श्रद्धावान लोग ही ज्ञान की प्राप्ति करते हैं। संसार को महांपुरूषों ने सपने की तरह बताया हैं जैसे सपने की अवस्था में जीव जो कुछ देखता है सत्य प्रतीत होता है लेकिन जागने पर झूठ हो जाता है। ठीक इसी प्रकार यह जो भी कुछ हम देख रहे हैं मौत के समय सब झूठ व मिथ्या हो जायेगा इसे पहले ही क्यों न बिचार द्वारा त्याग दिया जाए और सत्य भगवान को अपनाया जाए। एक महात्मा जिस का नाम चवान्से जी था वह कहीं जा रहे थे वो रास्ते में शमशान भूमि से गुजरे तो क्या देखा कि वहां एक आदमी के सिर की बहूत बड़ी खोपड़ी पड़ी हुई थी महात्मा जी ने उसे अपने झोले में रख लिया और चल दिए। लोग पूछते है महात्मा जी मुर्दे की खोपड़ी काहे अपने पास रखते हो। महात्मा जी बोले इसमें उपदेश मिलता है लोग कहने लगे कि क्या उपदेश मिलता है तब महात्मा जी बोले, देखो कि यह कितने बड़े महांपुरुष की खोपड़ी है। उस समय जब यह जिन्दा था गफलत, आलस, प्रमाद और अभिमान में रहा करता था। किसी मन्दिर, गुरद्वारे अथवा संत-सतगुरू की शरण में न यह सिर झुका और आज यह सिर की खोपड़ी सब के पेरों की ठोकर खा रही है। यह खोपड़ी उपदेश करती है याद रखो ए दूनिया वालो मैं तो भूल गया लेकिन तुम मत भूलना। अगर इस समय को चूक गये, इस सिर को संत सतगुरु की शरण में न दिया तो वही हाल तुम्हारा होगा जो हाल हमारा हुआ है। महात्मा जी ने कहा इसलिये मैं खोपड़ी को पास रखता हूं इससे वैराग्य बना रहता है तथा मौत और भगवान की मन में हर समय याद बनी रहती है। महांपुरुषों का कथन है :—

"दो बातों को भूल मत, जो चाहत कल्याण।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान॥"

सब मानव के कल्याण की मूल चीज यही है जो इन बातों को याद रखता है। उसका भ्रम मिट जाता है। भ्रम की निवृति का नाम ही ज्ञान है ऐसे जीव का संसार में रहते हुए मोह दूर हो जाता है और कल्याण को प्राप्त होता है। कई लोगों का सपना भी भ्रम का कारण हो जाता है। जैसे एक बार चीन कें महात्मा चवान्से जी सोये हुए थे तो स्वपन में उन्होंने अपने आप को

तितली के रूप में देखा। तितली के रूप में उड़ कर कभी इधर जाते हैं कभी उधर जाते हैं। कुछ समय बाद उनकी नींद टूटी तो वह तितली नहीं था चवान्सें जी थे। उनको इस का भ्रम हो गया यह मैंने क्या तमाशा देखा है। जब मैं सों गया था तो चवान्से से तितली बन गया था और जब जागा तो फिर चवान्से हो गया। हो सकता है कि मैं पहले तितली होगा। तितली के रूप में सो गया होगा या कुछ समय बाद मैं चवान्से बन गया, चवान्से सोया तो फिर तितली बन गई, जागा तो फिर तितली से चवान्से बन गया। अब जागा हूं तो तितली सो गई होगी। जब तितली जागेगी तो चवान्से फिर तितली बन जायेगा। उसें भ्रम हो गया कि मर कर कहीं मैं तितली ही न हो जाऊं। लेकिन उसे फिर बिचार हुआ कि ऐसी बात नहीं है मैं भ्रम क्यों करूं। मैं तितली नहीं बनूंगा बल्कि सपने से ज्ञान होना चाहिये ठीक दुनियां एक स्वपन की तरह हैं, मिथ्या है झूठ है, धोखा है और सत्य एक भगवान का नाम है जैसे रामायण में एक स्थान पर शंकर भगवान पार्बती के प्रति कहते हैं:—

"उमा कहूं मैं अनुभव अपना।
सत्य हरि भजन जगत सब सपना॥

जगत का स्वपनवत प्यार त्यागने के लिये उपाय है अपने इष्ट से मन को जोड़ देना, सच्चा प्यार वही है जो यहां भी साथ देता है और परलोक में भी साथ देता है। दुनियां का प्यार झूठा है जो यहां भी धोखा देता है और साथ छोड़ देता है फिर बताओ परलोक में क्या साथ देगा। अज्ञानी मनमुख जीव संसार को मांगते है भगवान की भक्ति को नहीं। जो फंसे हैं वह निकलना चाहते हैं और कोई फंसना चाहते हैं। कई ऐसे भी विचार शील है जो दुनियां नहीं मांगते केवल प्रभु भक्ति ही मांगते हैं। जैसे लिखा है:—

"तुद बिन होर जो मांगना, सिर दु:खां दे दु:ख।
दे नाम सन्तोषिए उतरे मन दी भूख॥"

यानि संसार में ऐसे भी लोग है उत्तम प्राकृति के जो दुनियां के पदार्थ न मांग करके भगवान की भक्ति ही मांगते हैं क्योंकि परम सुख अथवा सन्तोष ईश्वर के नाम में ही मिलता है। इस पर एक प्रमाण है एक महात्मा के

ास किसी व्यक्ति ने प्रश्न किया कि महात्मा जी संसार में सुखी कौन है। महात्मा जी ने उत्तर दिया सन्तोषी सदा सुखी होता है। वह व्यक्ति बोला सन्तोषी कौन होता है महात्मा जी बोले सतोगुण प्रधान जीव।" वह व्यक्ति कहने लगा 'सतोगुण प्रधान का स्वरुप अथवा लक्षण क्या होता है? महात्मा ने सोचा यह तो बात बढ़ाता ही जाता है। समझता एक भी नहीं इसकी तो अन्धे जैसी मिसाल हैं। कि एक अन्धा लोगों से पूछता है कि भाई! प्रकाश कैसा होता वह बोले जो प्रकाश है वह कैसा है। भई मैं तो यह बताने में असमर्थ हूं। चलो तुम्हे महात्मा बुद्ध के पास ले चले। महात्मा जी ने पूछा कि इसे किस लिये लाये हो। लोगों ने महात्मा जी से कहा कि यह कहता हैं प्रकाश कैसा होता है? इसको जरा दिखा दो चखा दो, सूंघा दो। महात्मा जी बोले कि भाई वह प्रकाश सूंघने और चखाने की बात नहीं है वह तो देखने की बात है लेकिन तुम अन्धे हो इसलिये तुम आंखो का आप्रेशन कराओ और जब मोतिया बिन्द दूर हो जायेगा तो प्रकाश अपने आप ही दीख पड़ेगा महात्मा जी ने उन लोगों से कहा, इस अन्धे को ले जाओ और इसका आप्रेशन कराओ। फिर मेरे पास ले जाओ। उन लोगों ने ऐसा ही किया। अन्धे का आप्रेशन कराने के बाद उसे महात्मा जी के पास ले गए। अन्धा महात्मा जी के चरणों में सिर रख कर प्रार्थना करता हुआ कहता है कि आप धन्य हैं। आपने मुझ पर बहुत कृपा की है। मैं इस कृपा का जन्म-जन्म का बदला नहीं ही चुका सकता जो कि मुझे प्रकाश दिखा दिया। महात्मा जी बोले कि प्रकाश ज्यों का त्यों ही था केवल तुम्हारी आखों पर मोतिया बिंद का पर्दा चढ़ा हुआ था अब उतर गया, तुमने प्रकाश देख लिया। अब तुम प्रकाश को देखते हो। हमें भी प्रकाश सुंघा दीजिये, चखा दीजिए, तब पता चलेगा प्रकाश कैसा है। वह महाराज! प्रकाश सूंघने और चखाने की वस्तु नहीं है, यह तो देखने की चीज है। तब महात्मा जी बोले कि यही बात मैंने पहले कही थी। उसे बतलाने में हर कोई असमर्थ है। अब तुमने देख लिया बतला नहीं सकते। यह तो अनुभव की चीज है। ठीक उस व्यक्ति की यह हालत है जो मैं पहले कह रहा था कि उस महात्मा से प्रश्न ही किये जाते हैं कि सुखिया कौन है? सन्तोषी किसे कहते हैं। सतोगुणी प्रधान स्परूप अथवा लक्षण क्या है? आखिर उस महात्मा ने भी उस व्यक्ति को इसका लक्षण कराने कि लिए कहा कि भाई दुनियां में तीन तरह के लोग होते है।

जैसे तमोगुणी, रजोगुणी तथा सतोगुणी। इन तीनों के लक्षण क्या होते हैं चलो तुम्हें उस नदी के किनारे बैठ कर समझाते हैं। वह व्यक्ति महात्मा जी के साथ नदी के किनारे पहुंच गया। वहां क्या देखते हैं कि एक मछेरे ने मछलिया पकड़ने के लिये नदी में जाल डाला हुआ था। कुछ मछलियां आती लेकिन जाल के पास खड़ी नहीं होती यानि भाग जाती है और घूमती है। इस दृश्य को देखकर महात्मा जी ने उस व्यक्ति को संकेत करते हुए कहा, "देख भाई! तुम हमारे को प्रश्न करते रहे थे अब तुम्हारे को प्रत्यक्ष देखने में आ गया। संसार में तीन प्रकार के लोग ऐसे है जैसे यह जाल और फंसी हुई मछलियां तथा जाल के साथ सटी हुई मछलियां और तीसरी स्वतन्त्र मछलियां। अब इन तीनों का मतलब समझिएगा। तमोगुण आदमी की हालत ऐसे होती है जैसे जाल में फंसी हुई मछलियां की। यह फंस तो गई है लेकिन अब छटपटा रही है और बाहर निकलना चाहती है और दूसरी मछलियां जो जाल के बाहर साथ-2 सटी हुई है और फंसना चाहती है वह मिसाल है दूसरे रोजीगुणी आदमीयों की। ठीक उसी प्रकार तमोगुणी पुरुष संसार में फंसे हुए हैं और संसारिक दुखों से छटपटा रहे हैं। जाल में फंसी हुई मछलियों की तरह और दूसरे प्रकार के रजोगुणी लोग संसार के प्रलोभनों में आकर उसी में फंस जाना चाहते हैं जैसे जाल के आस पास की सटी मछलियां जो जाल में फंसना चाहती है। रजोगुणी लोगों को संसार सुखमय भासता है और वह उस में फंसना चाहते हैं। तीसरे प्रकार के वह लोग जो सतोगुणी प्रधान होते हैं वह ठीक स्वतन्त्र मछलियों जैसे हैं। वह लोग संसार में आते हैं लेकिन संसारिक पदार्थों का प्रलोभन उन्हें अपनी ओर खींचने में असमर्थ रहता है। वे उन के पीछे नहीं पड़ते बल्कि त्याग कर वे असार संसार को छोड़ देते हैं और अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर ठीक राह पर चलते है और यह ही सतोगुण पुरुष सन्तोषी होते हैं और सन्तोष में ही सुख है। वैसे दुनियां के सारे भोग एवं पदार्थ मिल जायें तो जीव में अशान्ति बनी रहती है। उसे स्थाई का अनुभव तो तब होता है जब उसे सन्तोष होता है। कहा भी है :—

"गोधन, बाजिधन और रत्न धन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूल समान॥

लेकिन इन बातों को समझने के लिये जीव को सतसंग में समय अवश्य देना

चाहिये। जैसे तुलसी दास जी ने कहा :—

"भक्ति सकल सुख खानी, विनु सतसंग न पावहि प्राणी।
भक्ति हीन सब गुण ऐसे, लवण बिना बहु व्यंजन जैसे ॥

अर्थात भक्तिहीन मनुष्य के और जो गुन है कैसे है जैसे छप्पन प्रकार के व्यंजन भी बनाओ पर बिना लवण के सभी बेकार लगते हैं। ठीक इसी प्रकार वह मनुष्य जिसके हृदय में भगवान की भक्ति नहीं है और धनवान भी है बलवान भी है विद्वान भी है बुद्धिमान है सौन्दर्य भी है पर सभी गुण बगैर भगवान की भक्ति के बेकार है जैसे लिखा है :—

"जाति पाति कुल धर्म कढ़ाई,
धन बल परिजन गुण चतुराई।
भक्ति हीन नर सो हिय कैसा,
बिनु जल वारिद देखिये जैसा ॥"

मानव मात्र को सुख देने वाली भगवान की भक्ति होती है और भक्ति की प्रेरणा बगैर सतसंग महात्मा के नहीं मिलती। भगवान् राम ने भी नवधा भक्ति में शिवरी के प्रति कहा था :—

प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा।
दूसरी भक्ति मम कथा प्रसंगा।
गुरु पद पंकज सेवा तीसरी भक्ति अमान,
चौथी भक्ति सम गुणगन करई कपट तजि गान ॥
मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा,
पंचम भजन सो वेद प्रकासा।
छठदम सील विरति बहु कर्मा,
निरत निरंतर सज्जन धरमा।
सातवों भक्ति मोहि मय जग देखा,
मौते अधिक संत करि लेखा।
आठव कथा काम सन्तोषा,
सपनेहु नहि देखई परदोषा ॥
नवम सरल सब सन घल हीना।

मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥

नवमंहु एकऊ जिन के होई ।

नारी पुरूष सचराचर कोई ॥

सो अतिशय प्रिय भामिनी मोरे,

सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे, ॥

जोगिबृन्द गति दुर्लभ जोई ।

तो कहु आज सुलभ भई सोई ॥

मम दर्शन फल परभ अनूपा ।

जीव भाव निज सहज सरूपा ॥

लेकिन सत्संग और संत पुरूषों का दर्शन भी भगवान की अपार कृपा से ही प्राप्त होता है जैसे लिखा है :—

अब मोहिमा भरोस हनुमतां,

बिन हरि कृपा मिलहिं नहीं संता ।

अर्थात हनुमान और विभीषण का जब मिलाप हुआ उस समय विभीषण जी ने हनुमान जी से कहा था कि हे हनुमान जी । अब यह भरोसा हो गया कि बिना भगवान की कृपा के दर्शन नहीं होता । राम चरित्र मानस में लिखा है :—

सन्त विशुद्ध मिलहि पुनितेहि,

चितवहि राम कृपा कर जेहि ।

अर्थात तत्ववेता संतों की संगत उन्हें मिलती है जिन पर भगवान की विशेष कृपा होती है । और भी गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है :—

"बिन सतसंग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई ।"

अर्थात बिना सतसंग के किसी को विवेक नहीं होता और वह राम कृपा द्वारा सुलभ होता है । सतसंग की बहुत बड़ी महिमा कही है जैसे लिखा है :-

"तप के वर्ष हजार हैं, सतसंग की घड़ी एक ।

तो भी नहीं बराबरी, श्री सुखदेव किया विवेक ॥

संत कबीर जी कहते हैं :—

"राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोये।
जो सुख संत समाज में, सो बेकुंठ न होये।

संत तुलसीदास जी ने भी कहा है :—

"सात स्वर्ग अपवर्ग, धरिए तुलाइक अंग।
तुलै न तोहि सफल मिल, जो सुख लव सतसंग।।"

अर्थात स्वर्ग और अपवर्ग के कुल सुख को मिला कर तराजू के पलड़े पर रख दिया जाए तो भी लव मात्र के सतसंगमुख की बराबरी नहीं कर सकता। लिखा है :—

इकलया तो दुने होन ओनां दे, जो सतसंग विच आवन।
दूनयों चौने होन ओनां दे, जो आवन ते बैठ जावन।।
चौनयों ठौने औनां दे
जो श्रवण मनन निध्यासन कर जावन।
खाली हथी जान जहानो, जो आवन ते रोला पावन।।

अर्थात जो श्रद्धायुक्त सतसंग में जाते हैं उनको परम लाभ होता है और जो संत समाज में जा करके मनमानी चलाते हैं शोर मचाते हैं वह खाली हाथ लौट जाते हैं यानि सुख शान्ति से वंचित रह जाते हैं। जो सबसे बड़ी वस्तु है उस का बोध जीव को सतसंग द्वारा ही होता है। अन्यथा नहीं जैसे कवि कहता है।

किसी ने कहा ब्रह्म जी बड़े, जिन सृष्टि कुल रचाई होई ऐ।
फिर कहते हैं ब्रह्म जी नहीं बड़े, हैं पृथ्वी बड़ी,
जो खलकत का बौझ उठाई होई ऐ।
फिर कहते हैं पृथ्वी नहीं बड़ी,
शेष बड़े जिन पृथ्वी भी सिर पर उठाई होई ऐ।
फिर कहते हैं शेष नहीं बड़े, है विष्णु बड़े,
जिनां शेष ते सेज बछाई होई ए।
विष्णु नहीं बड़े हैं महेश बड़े,
जिन शेष नाग माला गल पाई होई ए।

महेश नहीं बड़े हैं कैलाश बड़ा,
जहां शिवां भी धूनी रमाई होई ए ।
कैलाश नहीं बड़ा है रावण बड़ा,
जिन कैलाश की भी ताकत अजमाई होई ए ।
रावण नहीं बड़ा है बाली बड़ा,
जहां रावण ने भी हार खाई होई ए ।
बाली नहीं बड़े हैं राम बड़े,
जिन बाली की भी की सफाई होई ए ।
राम नहीं बड़े हैं भक्त बड़े,
जिना राम तो भी कार करवाई होई ए ।
भक्त नहीं बड़े है सतसंग बड़ा,
जहां भक्तां भी शिक्षा पाई होई ए ।

प्रभु प्रेमियों अन्त में सार यही निकाला है कि सतसंग ही सब से बड़ा है क्योंकि भक्ति की पहचान सतसंग से होती है । सच्चा भक्त मुक्ति नहीं मांगता वह सेवा अथवा प्रभु भक्ति ही मांगता है जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है :—

"मुक्ति निरादर भक्ति लुभानी ।"

जिस में स्वार्थ सहित भक्ति होती है उसे भक्ति सुख का पूर्ण लाभ नहीं होता निस्वार्थ भक्ति ही आनन्द युक्त होती है । अंगद जी ने भगवान जी से मांगा था :—

नीच टहल गृह का सब करिहूं ।
पद विलोकि भव सागर तरिहूं ॥

इसमें अंगद को भवसागर तरने का स्वार्थ लगा हुआ है, दूसरी तरफ भरत जी निष्काम भाव से केवल भक्ति की जाचना करते हैं इस लिए उनकी भक्ति श्रेष्ठ है वह कहते है :—

अर्थ न धर्म न काम रूचि गति न चाहुं निर्वाण ।
जन्म-जन्म सिय राम पद यह वरदान न आन ॥"

अर्थात भरत जी यह मांगते हैं कि मुझे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन में से किसी की कामना नहीं है । वह तो बार-बार जन्म ले कर भी सियाराम

के ही चरणों में रहने की कामना करते हैं। प्रभु के पद भक्ति का वरदान मांगते हैं अन्य चीज का नहीं। अतः अंगद जी की भक्ति इन से बढ़ कर है। भक्त अथवा सेवक का दर्जा सबसे ऊंचा होता है। शरीर द्वारा सेवा करने से अभिमान दूर होता है। अभिमान युक्त भक्ति अधोगति का कारण बनती है :—

तन पवित्र कर सेवा, धन पवित्र कर दान।
मन पवित्र कर भक्ति, त्रिविध हो कल्याण॥"

जो मानव इन तीनों बातों को अपने में धारण कर लेता है उस के कल्याण में कोई बाधा नहीं पड़ती। सेवा अथवा भक्ति हीन मनुष्य किसी काम का नहीं होता है चाहे वह कितना भी अमीर क्यों न हो। एक समय का जिकर है कि श्री गोबिन्द सिंह महाराज जी सतसंग कर रहे थे तो उनको प्यास बहुत जोर की लगी हुई थी। उन्होंने कहा कि भाई कोई भक्त एक गिलास पानी लाईयेगा तो गुरु महाराज जी के पास एक अमीरजादा लड़का भी खड़ा था। वह दौड कर गिलास पानी का लाया कि चलो अब हम ही गुरु जी को पानी पिलाते हैं तो गुरु जी भक्त लोगों में बातचीत कर रहे थे। अमीरजादा पानी का गिलास लेकर बहुत देर तक खड़ा रहा। मन ही मन सोचता है कि भली मुसीबत में पढ़ा हूं। वह सोचता है कि गुरु जी इधर ताकतें भी नहीं हैं। उसने फिर गुरू जी से कहा, गुरूदेव मैंने आज तक किसी को पानी नहीं पिलाया केवल मेरा इन हाथों से पानी पिलाने का पहला अवसर है और यह इधर देखते भी नहीं है। गुरु जी ने उसके हाथ से पानी का गिलास लिया और गिरा दिया और कहा ऐसे नापाक हाथों से पानी नहीं पियेगें। जिस ने आज तक किसी को भी पानी नहीं पिलाया। गुरु की इतनी बात सुन कर उस अमीरजादे के दिल में ज्ञान हो गया कि सेवा से ही तन पवित्र होता हैं और सेवा सब से बड़ा तप है। महापुरुषों का कथन है :—

"सेवा बराबर तप नहीं, नहीं सेवा संग दान।
हीरा सेवा से ही पाईये, पद निर्वाण।"

ओर भी कहा है :—

"सेवक सेवा करत है, आठ पहर दिन रात।
हीरा सो सेवक है, सत्य लोक को जात॥"

दरबार साहिब में भी लिखा है :—

"सेवक ते सेवा बन आई, हुक़्म बूझ परम गति पाई ॥"

लेकिन किस सेवक की परम गति होती है जो निष्काम सेवा करता है। भगवान भक्त का मान नहीं रहने देते क्योंकि उनका नाम गर्व प्रहारी है यानि कहने का मतलव है भगवान का आहार है गर्व। इस पर एक प्रमाण है कि एक समय गरूड़ जी को इस बात का मान हो गया कि भगवान यहां भी जाते है, मैं ही ले जाता हूं। मेरे बिना यह कहीं नहीं जा सकते तो यह भगवान काहे के हैं। जब यह अपने आप कहीं नहीं जा सकते तो इससे ज्यादा तो मैं शक्तिशाली हूं। हम न होते तो भगवान को कौन पूछता ? अन्तर्यामी भगवान जान गए कि गरुड़ जी को मान हो गया है तो भगवान गरुड़ जी का मान तोड़ने के लिए गरूड़ जी को कहने लगे कि एक भक्त मेरे दर्शनों को बहुत उतावला, बेचैन है लेकिन वृद्ध है, वह आ नहीं सकता इसलिए जाओ, उसे उठा लाओ। गरूड़ जी बोले 'सत्यवचन' प्रभु वह भक्त कहां है ? भगवान बोले वह सामने की पहाड़ी के ऊपर बैठा हुआ है जो यहां से सैंकड़ों मील दूर है। यह भक्त कौन था 'हनुमान' जी थे। गरूड़ जी ने झट उडारी लगाई और पहाड़ी पर पहुंच गए वहां जाकर देखा तो ठीक एक बूढ़ा भक्त वैठा हुआ था। गरूड़ जी बोले भक्त जी, भगवान आप को याद कर रहे हैं इसलिए आप मेरी पीठ पर वैठिए और चलिए। वह बूढ़ा भक्त बोला, 'हां' आप चलिये हम पीछे आ जाते हैं। वह सोचने लगा हद हो गई, यह बूढ़ा कैसे आयेगा। गरुड़ जी बोले ऐ बूढ़े वह जगह सैंकड़ों मील दूर है तुम कैसे जा सकोगे। तुम मेरी पीठ पर बैठो और चलो भगवान की आज्ञा है। हनुमान जी बोले, अरे मैंने कहा न तू चल मैं पीछे आ रहा हूं। गरुड़ जी यह कह कर चल दिये कि मरने दे इस बूढ़े को। जब गरुड़ जी यह कह कर चल दिये कि मरने दे इस बूढ़े को। जब गरूड़ जी आधी राह तय कर लेते हैं और पीछे हनुमान जी को देखते हैं कि अभी वहीं बैठा है। वह कैसे आयेगा ? गरुड़ जी जब विष्णु के दरबार के गेट पर पहुंचते हैं तो देखते है कि वह बूढ़ा वहां पहले से ही बैठा हुआ है। कहते हैं "तेरी जय" बताओ यह मुझ से पहले कैसे पहुंच गया। गरुड़ जी का मान टूट गया कि भगवान के ऐसे भक़्त भी हैं जो बिना पंखो के उड़ सकते हैं। जब गरुड़ जी भगबान के पास पहुंचते हैं तो पूछते हैं कहो गरूड़ क्या हाल

है मेरे भक्त को किसने पहुंचाया तुम तो मुझे ही उड़ाते हो। गरुड़ जी बोले भगवान क्षमा कीजिये। गरूड़ जी फिर भगवान की सेवा में हाजिर हो जाते हैं। उधर सोलह हजार छः सौ साठ भगवान की रानियों को मान हो गया था तो भगवान ने उनसे कहा कि आप सभी हट जाईये। हनुमान जी आ रहे हैं लेकिन जो सीता बन सकती है वह मेरे पास बैठ सकती है। सीता जी बनने के लिए सत्यभामा जी तैयार हुई। वह भगवान के सामने ही बैठ गई। हनुमान जी आये और भगवान को प्रणाम किया। सत्यभामा जी की तरफ उन्होंने नहीं देखा। उनकी तरफ देखकर भगवान पूछते हैं। प्रभु सीता माता जो कहां हैं? उनकी जगह पर यह दासी कौन बैठी हुई है। हनुमान के इतना कहने पर सत्यभामा जी को प्रणाम न करने पर सत्यभामा जी का मान भी चूर हो गया। एक समय हनुमान और अर्जुन की बहस हुई। दोनों एक दूसरे से अपने को अधिक कहने लगे। अर्जुन बोले तुम उस राम के दास हो जो पत्थरों के बने पुल पर समुद्र पार हुए थे और मैं कृष्ण का दास हूं जो तीरों से पुल बांध दूं तो सभी पार हो सकते हैं। हनुमान जी बोले उन पत्थरों से निर्मित पुल पर कितने महान वीर चढ़ कर पार हुए थे और तेरा तीरों का पुल मेरा अकेले का भार नहीं सह सकता। दो भक्तों के झगड़े में भगवान पीसे गए तब अर्जुन ने तीरों से पुल बनाया तो हनुमान के एक पैर रखने से चकराने लगा उधर भगवान ने कछप रुप धारण कर नीचे भार सहा। हनुमान ने देखा जल पर रक्त आ गया है। अर्जुन का गर्व टूटा और हनुमान को दुःख हुआ कि उन्हीं के चलते भगवान को कष्ट उठाना पड़ा। फिर भगवान प्रकट हुए और वह दोनो दास प्रभु से क्षमा मांगते हैं कि आगे हम फिर वाद विवाद में नहीं आएंगे।

सो कहने का मतलब यह है कि जो मान बड़ाई को त्याग करके भजन अभ्यास करता है उसी का मन ही स्थिर होता है और वही जीव ईश्वर दर्शन को प्राप्त होता है।

इति सो ॐ शान्ति, शान्ति, शान्ति।



भाग दसवां

"सर्व तीर्थों की मणि भगवान का नाम ही है"

'प्रभु प्रेमियो प्रत्यक्ष स्वपन की घटना

8-5-73 को मंगलवार सुबह ब्रह्ममुहूर्त में हम भजन करके लेटे थे तो स्वपन में अक्षरों की पंक्ति लिखी हुई दिखाई दी जिसमें लिखा हुआ था " सर्व तीर्थों की मुकुट मणि भगवान का नाम ही है" प्रभु प्रेमियों ! मैं इस स्वपन को स्वपन न समझ कर बल्कि इष्टदेव भगवान की आवाज अथवा अकाशवाणी जानकर इस पर लेख लिख रहा हूं।

मन को शुद्ध अथवा पवित्र बनाने के लिए भगवान के कीर्तन नाम का सुमिरण सर्व श्रेष्ठ तीर्थ है जैसे लिखा भी है :—

"हरि नाम की घट में गंगा, मन में गोता ला प्राणी ।
जन्म मरण की मैल धुले, परम पद को पा प्राणी ॥"

अर्थात भगवद् नाम की गंगा सर्व मानव मात्र के अन्दर बह रही है। महांपुरूष कहते हैं कि ए जीव, मन को उस नाम रुपी गंगा से स्नान करा, तेरा आवागमन मिट जायेगा और मोक्ष की प्राप्ति होगी । सर्व तीर्थों की मुकुट मणि हरि कथा है, जो भागवत कथा, सतसंग अथवा सन्तों की संगत करने से प्राप्त होती है जैसे भगवान राम स्वयं कहते हैं :—

'प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा, दूसरी भक्ति मम कथा प्रसंगा'

भगवान कहते हैं कि मेरी पहली भक्ति संतों का संग है और संतों के संग से ही दूसरी भक्ति मेरी सन्तों द्वारा कथा सुनाने से मिलेगी । जिसके सुनने से मन की मैल उतर जाती है। इसी लिये लिखा है :-

"भरा सतसंग का दरिया, नहा लो जिसका जी चाहे ।
जिगर से दाग पातक का, छुड़ा लो जिसका जी चाहे ॥"

प्रभु प्रेमियों ! भगवत कथा रुपी गंगा तीर्थ में जाने के लिए सर्व नर नारी

आदि यानि सभी को अधिकार है। इस हरि नाम की गंगा से जो भी चाहे, अपने जन्म जन्मांतरों की मैल को उतार सकता है। मन की शुद्धि के लिए इससे बढ़ कर और कोई तीर्थ नहीं है। मैं नहीं कहता सन्त पलटू जी ने फरमाया है :—

"सतसंग में जाय के, मन को किजै शुद्ध।
पलटू वहां न बैठिए, यहां उपजै कुबुद्ध ॥"

पलटू जी महाराज कहते हैं कि ए जीवों सन्त दर्शन सतसंग में जाओ। इसी से ही तुम्हारा मन शुद्ध होगा और तुम्हें शान्ति प्राप्त होगी। कुसंग अथवा मनमुखों के पास मत बैठो क्योंकि ऐसे लोगों को संगत करने से मन में कुबुद्धि उत्पन्न होती है और वृति में फरक पड़ जाता है। उनकी बैठक करने से परेशानी कलह, कल्पना और दुःख बढ़ते है। इसलिये सत्य शास्त्र, धर्म ग्रन्थ, सन्त व भगवान को निंदा करने वाले से सदा के लिए बचो उनकी संगत का सर्वथा त्याग करो तभी शान्ति प्राप्त होगी अन्यथा नहीं। शास्त्र अथवा संतो का कथन है कि जितना निंदा करने से पाप लगता है उतना ही निंदा सुनने से पाप लगता है। ऐसे जीव परमेश्वर की तरफ से मारे जाते हैं आज ऐसे अज्ञानी अहंकारी जीवों को पता नहीं लगता कि हम क्या कर रहे हैं। लेकिन आगे के लिये महान नरक खरीद लेते हैं और इससे भी नीची गति को प्राप्ति होते हैं। जन्म-मरण का महान दुःख गले पड़ जाता है फिर छूटना मुश्किल हो जाता है। यह तो पलटू जी महाराज ने कहा है और भी सुखमनी साहब में दर्शाया है :—

"सन्त का निंदक महा हत्यारी, संत का निंदक परमेश्वर मारी ॥"

प्रभु प्रेमियों निंदा किसी की भी नहीं करनी चाहिये क्योंकि सबके अन्दर प्रमात्मा का अंश आतमा निवास कर रहा है। आतमा न स्त्री है न पुरुष वो तो उस सत्य अथवा ईश्वर का प्रतीक तत्व रूप से सर्व शरीरों के अन्दर विद्यामान है। जैसे एक ही सूर्य प्रतिबिम्ब अनेक घड़ों में पड़ा हुआ होता है। अगर कोई कहे कि इन घड़ों में अनेक सूर्य हैं लेकिन ऐसी बात नहीं है। यह भ्रम है अथवा यहीं अज्ञानता है। अनेक तो घड़ें हैं और भी अनेक तरह के व अनेक आकृतियों के हैं। कोई घड़ा चितरा हुआ और कोई सादा, कोई छोटा, कोई बड़ा लेकिन सूर्य न छोटा है, न बड़ा है वो तो एक है और एक जैसा सभी घड़ों में विद्यामान है। भ्रान्ति के कारण

घड़ों की उपाधि से अनेक रुपों में दिखाई देता है। इसलिये बिम्ब और प्रतिबिम्ब में अन्तर पड़ा क्योंकि बीच में घड़ों की उपाधि है। उन घरों को फोड़ दो तो बिम्ब और प्रतिबिम्ब एक ही है, दो नहीं।

ठीक इसी प्रकार आत्मा और प्रमात्मा में भी अन्तर नहीं है। प्रमात्मा बिम्ब है और आत्मा प्रतिबिम्ब है। हम जीवों को इन घड़ों की तरह भ्रान्ति हो गई है। कोई कहता है यह स्त्री है, वह पुरूष, यह ब्राह्मण है वह क्षत्रिय है, यह वैश्य है वह शूद्र है इसी प्रकार रंग रूप जाति पाति मजहब आदि में फंसें हुए दुःख उठा रहे हैं सुख कैसे हो ? सुख स्वरुप तो आत्मा है उस आत्मदेव को जो जानता है उसे सच्चा सुख प्राप्त होता है और वही ज्ञानी होता है। शास्त्र भी कहता है :—

"आत्मवत् सर्व भूतेषु यो पश्यति सः पण्डितः।"

अर्थात ज्ञानी उसे कहते हैं जो स्त्री पुरुष अथवा सर्वभूत प्राणियों में अपने जैसी आत्मा जानने वाला होता है। यह हुई एक ज्ञान प्रकिया और दूसरी है भक्ति की प्रकिया। भक्त उसे कहते है जो सच्चे प्रेम सहित श्रद्धा रख कर दृढ़ मन से अपने इष्ट देव पर परिपक्व पूर्ण विश्वास रखते हुए साधना भजन करे। अपने इष्ट देव भगवान के इलावा और किसी चीज की भी कामना न रखे। निष्काम सेवा पूजा भजन करे जैसे लिखा है :—

तुद बिन होर जो मंगना, सिर दुःखां दे दुःख।
दे नाम सन्तोषियो उतरे मन दी भुख ॥"

सच्चा भक्त उसे कहते हैं जो भगवान को ही मांगता है। ऐसी जिस की धारणा अथवा भावना बन जाती है बस उसे फिर सर्वत्र अथवा सभी में अपना इष्ट देव ही दिखाई पड़ता है। फल तो भक्त को अपनो भावना का होता। लिखा है।

"जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि ॥"

अर्थात जिस दृष्टिकोन से हम देखेंगे वह मूर्ति भी उसी रुप में दिखाई पड़ेगी जिसका जैसा दृष्टकोण हो उसको वैसा दर्शन। जैसे श्री रामायण में भी कहा है :—

जाकी रही है भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी तैसी ॥"

लिखा है :—

कामी क्रोध लालची, इनसे भक्ति नहीं होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वर्ण कुल खोये॥"

ऐसे भक्त के लिये लिखा है :—

जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है।
हर शै में तेरा जलवा हू वहु है॥"

जैसे गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है :—

"सिया राम मय सब जग जानी,
करहुं प्रणाम जोरि युग पाणि।"

यह हुई भक्ति की प्रक्रिया। प्रभु प्रेमियों! बताओ ज्ञान और भक्ति में कुछ भेद है? हां भेद उनके लिए है जो खुद अज्ञानी व अन्धे हैं। शास्त्र अथवा अनुभवी महापुरुष सन्त कहते हैं :—

"ज्ञानहि भक्ति नहीं कुछ भेदा।"

अर्थात ज्ञान और भक्ति में कोई भेद नहीं है। जो किसी देवी देवता, अवतार सन्त अथवा धर्म ग्रन्थ, सत्य शास्त्र, भक्ति ज्ञान ही निन्दा करते हैं।

उन्हें रूहानियत का इलम नहीं है। ब्राह्‌ किताबी अक्षरों का बोध है। वही अज्ञानी होते हैं उनकी कथा प्रसंग सुनना भी पाप है क्योंकि वाणी कहती है, मैं नहीं कहता :—

"सतसंग ओथे जानिए, जिथे इक्को नाम वखानिये।"

सतसंग वही है यहां एक ही सत्य परम तत्व ईश्वर की कथा हो, दूसरे किसी की निंदा न हो बल्कि पहुंचे हुए सन्तों का यही अनुभव है कि प्रथम प्रेमा भक्ति को विश्वास पूर्वक करे, ज्ञान सहज ही अपने आप हो जाता है। फिर सब तर्क वितर्क आदि झगड़े समाप्त हो जाते हैं। तव भक्ति और ज्ञान अथवा ज्ञानी और भक्त एक हो जाते है यनि ज्ञानी और भक्त की स्थिती एक बन जाती है। आप पूछोगे कैसे?

देखो ज्ञानी जो होता है वह सभी के अन्दर अपनी ही आत्मा को

जानता है और भक्त सबके अन्दर अपने ही इष्ट देव को देखता है । अन्तर तो उसी के मन में होता है जिसके स्वयं अपने मन में फरक हो । मैं नहीं कहता, हमारे धर्म ग्रन्थ तथा सन्त वाणी कहती है:—

बुरा जो देखने मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजे अपना, मुझ से बुरा न कोय ।।''

बुरा कौन है जो दूसरों को बुरा कहता हैं जिसका मन शुद्ध होता है उसको दोष अथवा बुराईयों में भी गुण अथवा अच्छाई नजर आती है । इसलिये हमारा सब का धर्म है किसी की बुराई अथवा दोष मत चुने किसी की निंदा मत करें और किसी प्राणी मात्र को अपने मुख से बुरा न कहें क्योंकि सभी रुहें अथवा आतमा का तिरस्कार न करो बल्कि सभी में आतमा को जानकर व इष्ट देव को जान सत्कार करना चाहिए क्योंकि आतमा का तिरस्कार ही परमात्मा का तिरस्कार है और आत्मा का सत्कार ही परमात्मा का सत्कार होता है। अगर हम सुखी बनना चाहते हैं तो ऐसी भावना अपने अन्दर लागू करनी चाहिए । यही एक सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिये सबसे बड़ा उपाय है। श्री ब्यास जी महाराज का कथन है :—

"अष्टादश पुराणेषु ब्यासस्य बचन द्वयम् ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परि पीडनम् ।।"

अर्थात श्री ब्यास जी महाराज कहते हैं । ऐ जीवो अगर तुम सुख चाहते हो तो दूसरों के साथ परोपकार करो किसी का भी दिल मत दुखाओ । उन्होंने अठारह पुराणों में दो बचन कहे हैं वह यह हैं :—

"परोपकाराय पुण्याय पापाय परि पीडनम"

यानि वे कहते हैं कि दूसरों से परोपकार करना पुण्य है और दूसरों को पीड़ा यानि दुःख देना ही पाप है । वेदों में भी लिखा है अथवा शास्त्रों में भी आता है :—

चार बेद छः शास्त्र में बात मिली है दोय ।
सुख दीने सुख होत है दुःख दीने दुःख होये ।।"

प्रभु प्रेमीयों ! मनुष्य वही है जो सर्व के अन्दर एक ही परमात्मा का अंश

आत्मा समझ कर प्यार हित करता है उसी का भी भगवान हित करते हैं मिसाल के रूप में जैसे किसी के बच्चे को कोई मारता है तो उस बच्चे का पिता मारने वाले पर खुश होगा ? कभी नहीं। ठीक इसी प्रकार प्रमात्मा भी हम जीवों का पिता है अगर हम परमात्मा रुपी पिता के किसी भी जीव रूपी बच्चे को दु:ख देंगे तो परमात्मा रूपी पिता हम पर कभी प्रसन्न नहीं होगा उस परमात्मा को प्रसन्न करना चाहते हैं तो उसकी अंश आत्मा सर्व शरीरों अपने ऊपर अगर में समझ कर सबसे प्यार प्रेम करें तो भगवान प्रसन्न हो जायेंगे। बस यही एक सच्चा उपाय है, सुख शान्ति के लिए।

प्रभु प्रेमियों में यह समझता हूं कि अपने इष्ट देव जी की असीम कृपा के द्वारा प्राणीमात्र का हित अथवा जनता जनार्दन की सेवा सबसे बड़ा भजन अथवा तप है और जो ऐसा कहता है कि मेरे लिए कोई मरे या जिए मुझे किसी से क्या ऐसी धारणा अथवा ख्याल रखने वाला मनुष्य, मनुष्य नहीं है बल्कि पशु से भी बदतर अथवा निकृष्ट होता है। इन्सान उसे कहते हैं जिसमें इन्सानियत होती है। एक कथा है कि एक गुरु के चार चेले थे। गुरु जी ने चारों को शिक्षा दी कि बेटा अपने भाग्य अनुसार जो तुम्हारे को मिले उसी में सन्तुष्ट रहना और किसी का हक नहीं खाना। सभी प्राणीमात्र में भगवान की आत्मा समझ कर हित प्यार करना और निंदा बुराई किसी की भी नहीं करना अपने इष्ट पर पूर्ण भरोसा रखना फिर तुम्हारा जीवन सुखी अथवा आन्नद मय बनेगा और तुम्हारा कल्याण होगा। वह गुरु 'गिरी सन्यासी था। उनकी लाईन धूना तपने की थी। उन चार चेलों को भी यह आज्ञा दी कि नर्वदा नदी के किनारे जाकर अपना-अपना धूना लगाकर भजन साधन करो और मेरी इन पांच बातों पर अमल करना फिर तुम्हारे को किसी प्रकार अथवा किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। चेले आज्ञा पाकर नर्वदा नदी के किनारे जा कर धूने लगाकर आसन जमा कर बैठ गए। बारह साल तप करते रहे।

होता क्या है कि बारह साल के बाद भगवान उनकी परीक्षा लेने के लिये अपना शेर का रुप बनाकर और माया को गाय का रुप बनाकर आये आगे गाय और पीछे शेर। शेर गाय को खाने के लिये जा रहा है। जहाँ चारों महात्मा धूना तप रहे थे उन चारों धूनों के बीच में से गाय और शेर गुजरे तो एक महात्मा ने गाय और शेर देखे और कहने लगा

कि शेर गाय को खाने चला है मुझे क्या ? मुझे क्या खाने दो, मेरे लिए कोई जिये, कोई मरे, मैं तो अपना भजन कर रहा हूं और यही करना है फिर आंख बन्द कर ली और भजन करने लग पड़ा । इतने में दूसरे महात्मा उसके गुरु भाई की आंख खुली, उसने शेर और गाय को जाते देखा तो उसने सोचा कि गुरु जी ने कहा था कि सभी के अन्दर परमात्मा की अंश आत्मा समझ कर हित करना, तो इस वक्त मेरा धर्म यह है कि भजन छोड़ कर गाय की रक्षा करूं क्योंकि आत्मा रुप जान कर सेवा करना यही भगवान की सेवा और भजन है : बस फिर क्या था, झट उठा, शेर की तरफ दौड़ पड़ा और जोर से कहा, 'जय गुरूदेव' तो होता क्या है कि शेर गाय दोनों गायब हो गए और शेर की जगह भगवान विष्णु तथा गाय की जगह श्री माता लक्ष्मी जी थी । महात्मा देख कर बड़ा हैरान हुआ कि यह क्या खेल है । भगवान बोले कि तुम चारों भाईयों की परीक्षा में आये थे कि इनको अभी बोध हुआ है या नहीं । तो पहले ने जब गाय के पीछे शेर को जाते देखा तो मन में कहने लगा कि मुझे क्या है कोई जिये या कोई मरे, शेर गाय को खाता है तो खाय; मुझे तो अपना भजन अभ्यास ही करना करना चाहिये अत: फिर वह आंखे मूंद कर अपना भजन अभ्यास करने लगा । जब तूने गाय के पीछे शेर को जाते देखा तो विचार किया कि गुरु जी ने तो कहा था कि सब प्राणियों में अपनी आत्मा समझना और यहां शेर गाय को खाने जा रहा है। अत: शेर के पंजे से गाय को बचाना ही मेरा धर्म है । ऐसा विचार कर जब तुम गाय को बचाने के लिए उठे और "जय गुरूदेव" का नारा लगाया तो हमें तुम्हारी दिव्य भावना को देख कर असली रूप प्रकट में होना पड़ा। हम तुम्हारे पर बहुत प्रसन्न हैं इस लिये वर मांगो ।

तब उस महात्मा ने कहा कि भगवान ! मुझे मुक्ति दान दीजिये तब भगवान विष्णु बोले कि मुक्ति तो अभी मिल नहीं सकती ; क्योंकि तुम में अभी जाति अभिमान है। तुम अपने मन में सदा यह समझते रहो कि मैं ब्राह्मण हूं, ऊंचे कुल का हूं और यह तीनों मेरे गुरु भाई शूद्र जाति के है और इसलिये तुम उन से घृणा करते रहे । इस लिये तुम्हारा अभी एक और जन्म होगा तुम अगले जन्म में एक भंगी के घर पैदा होगे लेकिन तप के बल पर तुम राजा बन जाओगे और हमारे आशीर्वाद से तुम्हारा

पूर्व जन्म का ज्ञान बराबर बना रहेगा और तुम, "आतमवत् सर्व भूतेषु यह देखते हुए मुक्ति लाभ कर लोगे। लेकिन यह तो तुम्हारा पहले वाला साथी है। उसने यह विचारा था कि मुझे क्या चाहे कोई जिये या मरे" तो वह अगले जन्म में अपने तप के बल पर राजा के घर पैदा होकर पतासे बांटते ही अर्थात बच्चा उत्पन्न होने की खुशीयां मनाते ही मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा और जो तुम्हारे दूसरे दोनों साथी हैं, वे दीर्घ काल तक तपस्या करते हुए अभी कई जन्मों में मुक्ति लाभ करेंगे। ऐसा कह कर भगवान वहीं अर्न्तध्यान हो गए। अब कुछ ही समय के बाद पहले बाले दोनों महात्मा शरीर त्याग देते हैं।

प्रथम तो एक राजा के घर जन्मता है और दूसरा भंगी के घर। लेकिन राजा पहले वाला राजा के घर जन्म लेते ही मिठाईयां बांटते मर जाता है उधर राजा की भंगिनी के घर दूसरे महात्मा का जन्म होता है। भंगिन राजा के बालक की मृत्यु पर राजा को अपना बालक गोद लेने की सलाह देती है। वह कहती है कि राजकुमार के मरने की खबर तो अभी किसी को पता नहीं अतः आप मेरे ही नवजात बच्चे को गोद में लेवे तो किसी को किसी प्रकार का संदेह न हो सकेगा। राजा ने भंगिन की बात मान ली और उस भंगिन के बच्चे को गोद में ले लिया। लेकिन इस बात को राजा का बजीर भी सुन रहा था। राजा ने भी इस बात को गुप्त रखने के लिए कहा तथा वजीर से कहा कि मेरे बाद यही गद्दी पर बैठेगा। बजीर ने "सत्य बचन" कह कर राजा की आज्ञा के आगे सर झुकाया।

लेकिन संयोग वश ऐसा होता है कि राजा भी कुछ समय बाद चल बसता है। अब भंगी के उस बच्चे को बजीर गद्दी पर बैठाने से झिझकता है। उस का मन बदल जाता है। वह सोचता है कि इस भंगिन के बेटे को राजा बना कर इसके आगे झुकने से तो य ी बेहतर होगा कि मेरा ही बेटा राजा बने। ऐसा विचार कर वह उस भंगिन के बेटे को जल्लाद के हाथ मारने के लिए भेज देता है। लेकिन होता क्या है? ज्यों ही वह जल्लाद उसे मारने के लिए कमरे में जाता है तुरन्त अन्धा हो जाता है। वहां उसे कुछ दिखाई नहीं देता। लेकिन जब वह बाहर जाता है तो सब कुछ दीखने लग पड़ता है। वह फिर कमरे में उस बच्चे को खतम करने के लिए जाता है लेकिन अन्दर जाते ही फिर उसी प्रकार अन्धा हो जाता है। वापिस

बाहर आने पर फिर सब कुछ दिखाई देने लग जाता है। ऐसा वह कई बार करता है लेकिन अन्दर जाते ही अन्धा हो जाता है और बाहर आने पर फिर पुन सब कुछ दिखाई देने लग जाता है। वह मन में सोचता है कि जरूर इस बालक को परमेश्वर बचा रखना चाहता है अतः इसके न मारने में ही भलाई है।

"जाको राखे साईंयां मार सकै न कोय।
बाल न बांका करिसकै, जो जग वैरी होय।"

ऐसा विचार कर वह बजीर को लड़का लौटा देता है। बजीर ने सोचा, शायद जल्लाद दया वश लड़के को न मार सका। इस लिए वह खुद ही उसे मारने के लिए तैयार हो जाता है। लेकिन ज्यों हो वह उसे मारने के लिए जाता है। आकाश वाणी कहती है— 'ऐ बजीर तू इस बालक को खत्म करेगा। तेरे सर्व कुल का नाश हो जायेगा।" बजीर मन में सोचता है कि इसके मारने से जब कुल का नाश हो जाएगा, तो फिर राज भोगने वाला कौन रह जायेगा। इस से तो यही बेहतर है कि यह जीवित रहे।

बजीर अपने मन में ऐसा विचार करके उसे मारने का ख्याल छोड़ देता है और उलटा अब वह उसका पालन पोषण करने लगता है। अब वह लड़का बड़ा हो जाता है तो राजनीति की बातें स्वतः ही उसके मन में उदय हो जाती है बजीर उसका हर प्रकार से हुकम तो मानता है लेकिन वह प्रणाम दोनों हाथ ऊपर उठा कर करता है। सिर वह अब भी नहीं झुका पाता। कारण वही कि रह कर उसके मन में ख्याल आता है कि यह भंगिन का बेटा है इसलिए वह हमेशा दोनों हाथ ऊपर उठा कर ही प्रणाम करता है।

एक दिन राज सभा लगी हुई थी। बजीर ने पहले की ही भांति अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर राजा को प्रणाम कहा। इस बार राजा ने पूछ ही लिया कि तुम मुझे हाथ ऊपर उठा कर प्रणाम क्यों करते हो? तुम्हारा सिर प्रणाम करते समय क्यों नहीं झुका इस बार बजीर उत्तर देता है कि हे महाराज आप मुझे चाहे जो भी सजा दे दीजिये लेकिन यह बात मैं एकान्त में आप से ही कह सकता हूं। राजा ने कहा एकान्त में हो, कहो

फिर एकान्त पाकर बजीर कहने लगा ए महाराज मैं यह बात अभी तक भुलाने से भी नहीं भूल सकता हूं कि आप भंगिन के बेटे हैं। इस लिए सिर झुका कर प्रणाम करना मुझ से किसी प्रकार भी नहीं बन पड़ता है। इस पर राजा हंसे और कहने लगे कि इसी भूल की ही सजा मैं अभी तक पा रहा हूं। मैं वास्तव में भंगिन का बेटा नहीं हूं बल्कि ब्राह्मण हूं। पूर्व जन्म में हम चार गुरु भाई नर्वदा नदी के किनारे तप किया करते थे। उन चारों गुरु भाईयों में से मैं तो ब्राह्मण वर्ण का था और शेष तीनों शूद्र वर्ण के थे। इसलिये मैं अपने को उन से श्रेष्ठ समझता था और उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा करता था। एक बार हमारी परीक्षा के लिये भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी जी आये तो उन्होंने मुझ से अपूर्ण बोध हुआ जान कर यह कहा कि अभी तुम्हें जाति अभिमान का दोष है। तुम मन में यह अहम् भाव रखते हो कि मैं ब्राह्मण वर्ग और ऊंचे कुल का हूं तथा मेरे यह तीनों गुरू भाई शूद्र वर्ण और नीच कुल के है। इस अहंभाव की निवृति के लिये तुम्हारा अगला जन्म भंगी के घर होगा लेकिन भगवत कृपा एवं तप के बल पर तुम्हारी पूर्व स्मृति बनी रहेगी और तुम राजा बनोगे। इतना कह कर भगवान अर्न्तध्यान हो गए। तब राजा बोला कि यदि तुम्हें अब भी यकीन न आए तो आप नर्वदा नदी के चढ़ाव की ओर चले जायें और रास्ते में तुम्हें एक स्थान पर नर्वदा के किनारे दो महात्मा तप करते हुए मिलेंगे, जिन के पास चार धूनियां होंगी। दो धूनियां तो दो महात्मायों के शरीर छूट जाने पर ठंडी पड़ गई होंगी और दो धूनियां अभी गर्म होंगी जो मौजूदा महात्माओं की है राजा की बात की परीक्षा के लिये बजीर चल पड़ा और चलते अन्त में उसी स्थान पर पहूंच गया जहां वे दोनों महात्मा बैठे हुए थे। दण्डवत प्रणाम आदि करने के पश्चात वजीर ने पूछा —इन धूनियों के महात्मा कहां है? तब उन्होंने बताया कि वे दोनों शरीर छोड़ चुके है। पहले वाला महात्मा तो राजा के घर जन्मता है और कुछ ही समय जीवित रह रह कर पतासे बंटते ही मर जाता है और दूसरे महात्मा का जन्म भंगी के घर हुआ है और अब वह राजा है। इस पर बजीर ने पूछा कि अब वह राजा कहां है? तब उन्होंने कहा कि जहां से तुम आये हो। वह तुम्हारा ही तो राजा है। इस पर बजीर ने पूछा कि वह भंगी के घर क्यों पैदा हुआ? तब उन महात्मों ने कहा कि अब आगे की बात तू उसी से जाकर पूछना।

बजीर ने लौट कर पूरी बात बताई। तब उस राजा ने बताया कि मैं ब्राह्मण हूं और वह नीच हैं। इसी अभिमान ने ही तो मुझे भंगी के घर जन्म दिलवाया वरन् मैं उसी जन्म में मुक्त हो गया होता। अब मैं इसी कारण सर्व भूत प्राणियों में एक ही आत्मा जान कर सभी से बराबर प्यार करता हूं। अब बजीर का माथा ठनका वह सोचने लगा कि भेद भावना करने से (मैं ऊंच हूं वह नीच है) ऐसा मिथ्या अभिमान करने से जब इस महात्मा की यह गति हुई तो हमारा क्या हाल होगा। ऐसा विचार कर उसने वह भेद भाव करना त्याग दिया और राजा को एक महात्मा और मुक्त आत्मा जान कर आगे से साष्टांग दण्डवत प्रणाम करने लगा।

प्रभु प्रेमियों। मेरा इस कथा को सुनाने का भाव यह था किसी जीव का भी दिल नहीं दुखाना चाहिये और किसी को बुरा नहीं कहना चाहिये अथवा किसी की भी निंदा नहीं करनी चाहिये क्योंकि लिखा है :—

"पर निंदा करे जो कोई। सुपने में भी सुख न होई।"

इस लिये प्रभु प्रेमियों सभी जीवों से परोपकार करना चाहिये और सभी प्राणी मात्र में परमात्मा की अंश आत्मा जान कर हित करना चाहिये। यही सुख और शान्ति के लिए सबसे बड़ा उपाय है लेकिन ऐसा कौन कर सकता है बड़ा तीर्थ हरि कीर्तन अथवा नाम की गंगा है। यह हम सब का धर्म बनता है कि फजूल की बातों को त्याग कर भगवान की कथा सतसंग धारण करें। यही एक सबसे बड़ा तीर्थ है।

इति शुभम्

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।



॥ प्रार्थना ॥

भजन नं 1

सुन प्रभु मेरी वेनती नादान जान के,
मैं आया तेरे द्वारे मेहरवान जान के ।
कोई कहता तुम्हें दीनानाथ प्रभु ।
दीन हूं मैं पकड़ मेरा हाथ प्रभु ।
कृपा कर दो प्रभु अनजान जान के, मैं तो आया तेरे.........॥
यह भी सुनते हैं सृष्टि के स्वामी हो तुम ।
घट घट के प्रभु जी अन्तर्यामी हो तुम ।
बख्शो मुझको भी पापी महान जान के। मैं तो आया तेरे
सदा दुखियों के दुख हरते आये हो।
कृपा दीनों पे तुम करते आये हो ।
आया मैं भी हूं कृपा निधान जान के । मैं तो आया.........॥
दास ने आज तुझको पुकारा प्रभु ।
दुखी जीवों में तेरा सहारा प्रभु ।
सभी तुझको पुकारे भगवान जान के । मैं तो आया तेरे... ...

भजन नं 2

आया हुं शरण में आज रख मेरी लाज ।
वाघम्बर वाले शिव शंकर भोले भाले ॥ टेक ॥
सब देवों के सरताज हो तुम प्रभु बड़े गरीब निवाज़ हो तुम ।
तुम बिन मेरी विपदा कौन प्रभु जी टाले, शिव शंकर भोले भाले......
शशी चमक रहा मस्तक पर है, और मली विभूती बदन पर है ।
गले मुण्ड माला कानों में झूले, शिव शंकर भोले... ...
शोभित है गंग जटाओं में लिपटे हैं भुजाओं में ।
फिरते हो मस्त कान्धे पर झोली डाले । शिव शंकर भोले... ...
मृग चर्म आप का आसन है नन्दी गण आप का वाहन है ।
है त्रिशूल डमरु हाथ में काशी वाले, शिव शंकर भोले भाले......

यह दासुनदास तुम्हारा है तू प्राणों से भी प्यारा है।
कर दया दृष्टि चरणों का दास बनाले। शिव शंकर भोले......

भजन नं: 3

हे सतगुरु जी भूल न जाना हम को,
आना जी आना दर्श दिखाना हमको॥ टेक
मुझ गरीब को छोड़ के जाने वाले,
माया ममता को तोड़ के जाने वाले।
सीख गए तुम भी कलपाना दिल को, आना जी आना......
जो बिसराना ही था मुझको ऐ दाता,
तो प्रथम प्रेम का जोड़ा ही क्यों नाता।
भूल गए अब प्रीत निभाना तुम तो आना जी आना......॥
मैं न समझा था मुखड़ा मोड़ोगे।
प्रीत लगा कर फिर क्या ऐसे तोड़ोगे।
आता है जी सिर्फ रूलाना तुम को आना जी आना......
कैसे दिल का हाल तुझे बतलायें,
निश दिन आंसू हो ए नैन बहायें।
मुश्किल है अब तो समझाना दिल को, आना जी आना... ..॥

भजन नं: 4

मेरे प्यारे गुरुवर मेरे मन का मन्दिर तुम बसाना,
तेरे रहने का है यह ठिकाना ॥ टेक ॥
अपनी नगरी को आकर बसाओ।
मेरे हृदय में आसन लगाओ।
मेरो मन का भरम मेरे परम प्यारे भगवाना,
तेरे रहने का है यह ठिकाना॥
बिन तेरे मेरी नगरी है सूनी।
मन की पीड़ा भई और दूनी।
मेरे परम पिया मेरा तड़पे जिया निकले प्राणां
तेरे रहने का है यही ठिकाना॥

मैं तो हरदम जपूं तेरी माला।
मेरे नैनों का है तू उजाला।
दिल में है जुस्त जू पलकों में तू ही समाना,
तेरे रहने का यह है ठिकाना ॥
दर बदर घूम कर यह दिवाना।
पाया चरणों में तेरे ठिकाना ॥
नैया टूटी मेरी किस्मत फूटी मेरी तुम बनाना,
तेरे रहने का यह है ठिकाना ॥

भजन नं: 5

मेरा मन तो है अवगुणों की खान प्रभु जी।
कैसे होगा मेरा कल्याण प्रभु जी।
मैंने नेकी कभी कोई की ही नहीं।
तुझको मन में जगह मैंने दी ही नहीं।
नहीं किया मैंने तेरा कभी ध्यान प्रभु जी । कैसे होगा......
मैने पापों से मन को हटाया नहीं।
तेरे चरणों में इसको लगाया नहीं।
सदा विषयों में रहा गलतान प्रभु जी ॥ कैसा होगा......
मैं तो दुनिया का बन कर ही जीता रहा।
सदा विषयों के विष को ही पीता रहा।
कभी किया नहीं अमृत का पान प्रभु जी ॥ कैसे होगा मेरा......
मैं तो अब तक भी दुनिया का बन्दा रहा।
हुआ दुनिया के लालच में अन्धा रहा ।
कभी किया नहीं पुण्य दान प्रभु जी। कैसे होगा......
बन्दा अवगुण हजारों ही करता रहा ।
तेरा नाम हरी पाप हरता रहा।
नहीं मन में बसा परम ज्ञान प्रभु जी ॥ कैसे होगा......

भजन नं: 6

हे दीना बन्धु करुणा सिन्धु पार करो मेरी नैया।
मेरो नदी दूर किनारा तेरे बिना कौन खवैया है।
भगवान तेरे बिना कौन खवैया, हे दीनाबन्धु ...

प्रहलाद भगत की रक्षा कीनी,
हे भगवन नरसिंह रूप धरेआ रे।
हे दीनाबन्धु करूना सिन्धु......
द्रोपदा की तुने लाज बचाई,
सभा में चीर वडेइआ रे
हे भगवन सभा में चीर वडैइआ रे।
हे दीनाबन्धु करुणा सिन्धु......

भजन नं 7

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाए।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाए, कुछ बन न पाया मेरे बनाए ॥ टेक ॥

1. संसार में ही आसक्त रहकर,
दिन रात अपने मतलब की कहकर।
सुख के लिए लाखों दुख सहकर,
ये दिन अभी तक यों ही विताये ॥
2. ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊं,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊं।
मैं आपको चाहूं और पाऊं,
संसार का कुछ भय रह न जाए
3. वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ,
अपने हृदय में सदभाव भर लूँ।
नर तन है साधन भव सिन्धु तर लूं,
ऐसा समय फिर आए न आए ॥
4. हे प्रभु हमें निरभिमानी बना दो,
दरिद्र हर लो दानी बना दो।
आनन्दमय विज्ञानी बना दो,
मैं हूं भगत यह आशा लगाये ॥

भजन नं: 8

वह शक्ति हमें दो सतगुरु जी शुभ कर्मों का करना सीखें
कैसी भी विपदा आन पड़ें परसमता में रहना सीखें । टेक ।

1. को चाहे कुछ कह लेवे।
पर उसमें भी सन्तोष करें।
कड़वे तीखे शब्दों को भी हंस हंस करके सहना सीखें।
2. झूठी चुगली अरु निन्दादिक।
यह दोष मिटे मन वाणी का
सिर जाता है तो जाने दो पर सत पथ पर चलना सीखें॥
3. जो अहित हमारा करता है
हम उसके भी हित की सोचें।
समझे उसको अपना ही है यों धैर्यवान बनना सीखें॥
4. कर्तव्य धर्म की वेदी पर।
मेरा ये तन मन धन जावे।
उद्देश्य यही हो जीवन का, पर हित जीना मरना सीखें॥

भजन नं: 9

गुरुवर छाया में अपनी विठा लो हमें,
हम हैं तेरे तू अपना बना लो हमें॥
1. ना हो गम का ही गम न खुशी की खुशी।
आप चाहो तो जग से बचा लो हमें। हम हैं तेरे......
2. देख कर मैं किसी की खुशी न जलूं,
राह इन्सानियत पे हमेशा चलूं।
राह इन्सानियत की दिखा दो हमें। हम हैं तेरे......

भजन नं: 10

मेरी चाह यही है सतगुरु जी तेरा दरश हमेशा पाया करूं।
मेरी इसमें खुशी तुम रूठा करो, मैं हरदम तुमको मनाया करूं॥
1. कोई बहसी कहे या दीवाना कहे।
चाहे पागल सारा जमाना कहे।
मेरे रोने पे तुमको जो आए हंसी,
रो रो कर तुमको जो हंसाया करो॥
2. क्या चीज है जो सेवा में तेरी।
कर दूं अर्पण जो कुछ है मेरी॥

मैं फूल बनाकर दिल अपना,
चरणों पर तेरे चढ़ाया करूं ॥

3. मैं कैसे भूला दूं नाम तेरा।
पलकों से बुहारूं राह तेरा।
तेरे चरणों की धूली को प्रभु,
माथे पे अपने चढ़ाया करूं ॥

4. इस दास का इतना कहना है।
तेरे चरणों पे मुझे रहना है।
मैं भूल के दुनियां सारी को,
सतगुरु जो तुमको रिझाया करूं।

भजन नं: 11.

मेरे मन नु प्रभु जी समझा लो मेरे आखे नईयों लगदा।

1. काम क्रोध वाला दीवा हरदम जगदा,
विच नाम वाली जोत जगा दो।
मेरे आखे नईयों लगदा मेरे मन नु......

2. जित्थे होवे निन्दा चुगली,
ओथे टुक टुक जा बैठदा।
मेरे आखे नईयों लगदा मेरे मन नु......

3. नाम जपने नु जदों मैं बैठा।
मेरी सुर्ती फिरे चुफेरे।
मेरे आखे नईयों लगदा मेरे मन नु......

भजन नं: 12

लिखन वालिया तू होके दयाल लिख दे,
मेरी फटी ऊते गुरां जी दा नाम लिख दे।

1. हथा ते लिख दे सेवा गुरां दी—2
मेरे हृदय विच ओहना दा प्यार लिख दे मेरी फटी......
लिखन वालियां......
मेरी फटी उते.........

2. जीभां ते लिख दे सुमिरण गुरां दा—2

मेरीयां अखां विच ओहना दा स्वरुप लिख दे मेरी फटी......
लिखन वालियां......
मेरी फटी उते.........

3. इक न लिखीं गुरां दी जुदाई—2
भावें छुट जावे सारा संसार लिख दे मेरी फटी.. ...
लिखन वालियां..... ...
मेरी फटी उते.........

भजन नं: 13

शिव शंकर भोला भाला डम्बरु के बजाने वाला
शिव गोंरा जी के संग घोटे अक धन्तुरा भंग
गोदी खेलेगा गनपति बाला डम्बरु के बजाने वाला
शिव शंकर भोला......

2. सिर पै गंगा की धारा गल में सर्पो का हार
देखा कैसा है रूप निराला शिव शंकर भोला भाला
शिव शंकर भोला.........

3. शिव शंकर को मनाए जो फल मांगे सो फल पाए
भोले खोले भण्डार का ताला डम्बरु के बजाने बाला
शिव शंकर भोला.........

भजन नं 14

गुरुवर तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊं मैं ।
सतगुरु सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं ॥ टेक ॥
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाए हैं ।
न जानू इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाए हैं ।
स्वामी हू शरमिन्दा आप से क्या बतलाऊं मैं ॥ गुरुवर तेरे......
मरे पाप कर्म ही तुझसे प्रीति न करने देते हैं ।
जब चाहूं मैं मिलू आपसे रोक मुझे ये लेते हैं ।
भगवान कैसे हरदम आपके दर्शन पाऊं मैं ॥ गुरुवर तेरे......
जो बीती सो बीती स्वामी वाकी ऊमर सम्हालू मैं ।
चरणों में बैठ आपके गीत प्रेम के गालू मैं ।
प्रभु जी छींटा मारो प्रेम का होश में आऊं मैं ॥ गुरुदेव तेरे......

तू है नाथ बरों का दाता तुझसे सब बर पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरा ही गुण गाते हैं।
दाता भक्ति दे दो दास को और न चाहूं मैं ।। गुरूवर तेरे......

भजन नं 15

मानुष को बिना गुरु के निज ज्ञान नहीं मिलता।
जिस ध्यान से मुक्ति है वह ध्यान नहीं मिलता ।। टेक ।।

1. जय, यज्ञ, योग साधन करते अनेक देखे।
मन में है द्वेष जब तक भगवान नहीं मिलता ।।

2. घट घट में आप पूरन सब ग्रन्थ हैं यह गीत गाते।
इस घट में यहां है वद स्यान नहीं मिलता ।।

3. वन तीर्थो में भटको उल्टे बदन से लटको।
सव तीर्थो में करके स्नान नहीं मिलता ।।

4. किस काम की है प्यारे थोथी ऐ ज्ञान गाथा।
हृदय में भरा जब तक अज्ञान नहीं मिटता ।।

भजन नं: 16

गुरूवर दया निधान तुझे कैसे रिझाये।
भक्तों के भगवान तेरा गुण कैसे गायें ।। टेक ।।

1. मुझ में ध्रुव के समान तप के लिए शक्ति नहीं।
और शवरी भाँति भाव नहीं भक्ति नहीं।
मन में मीरा तरह धुन बहीं अनुरिक्त नहीं।
योगियों की तरह भोगों से है विरक्ति नहीं।
ऐसे पतित महान तुझे कैसे रिझायें ।।

2. जगत को ब्रह्म मय देखे हमें वो ज्ञान कहां।
करें विचार तो हैं ऐसे बुद्धिमान कहां।
जागते सोते तुम्हें ध्यायें ऐसा ध्यान कहां।
तुम हो घट घट में रमें पर हमें पहचान कहां।
हे मूरख नादान तुम्हें कैसे रझायें ।।

3. कोई दिन रात भजन में समय बिताते हैं।
कोई तप करके मन की वासना जलाते है।
कोई हठ योग से कुछ सिद्धियां जगाते हैं।

हमीं ऐसे हैं जो कुछ नहीं कर पाते हैं।
हो किस विधि कल्याण तुम्हें कैसे रिझावें।

4. तीर्थों में गए तुमको वहां नहीं पाया।
यज्ञ व्रत दान ने तो स्वर्ग मार्ग दिखलाया।
जिधर देखा उधर ही घोर अन्धेरा छाया।
तुम कहीं भी न मिले मिली तुम्हारी माया।
हुए देख हैरान तुम्हें कैसे रिझायें॥

5. तुम्हारी खोज में हम दर दर भटकते हैं।
जिधर भी जाते हैं उस और ही अटकते हैं।
तरह तरह की ख्वाहिशों में ही लटकते हैं।
घूम फिर करके फिर यहीं पे सर पटकते हैं।
खो करके अभिमान तुम्हें कैसे रिझायें॥

6. वहुत से तपसी व्रती सत्य मार्ग भूल गए।
वो सिद्धियों के ही अभिमान में बस फूल गए।
बहुत से जानकर ही धर्म के प्रतिकूल गए।
कण से पर्वत बने पर्वत से बन धूल गए।
हो जाता गर्व गुमान तुम्हें कैसे रिझायें॥

7. तुम्हारी राह मे कोई तो सूली चढ़ के चले।
बहुत से वेद वो शास्त्रों को ही पढ़ पढ़ के चले।
गिरे हुए भी उठे जोश में फिर बढ़ के चले।
वहुत मत सम्प्रदाय और धर्म गढ़ के चले।
बिरले पाये जान तुम्हें कैसे रिझायें॥

8. गिरे हुओं के लिये तुम्हीं उठाने वाले।
दुखों से रोते हैं जो उनको हंसाने वाले।
सतगुरु आप ही सोते को जगाने वाले।
सुनो महाराज जी भड़मार के रहने वाले।
ए दीन दास का गान तुम्हें कैसे रिझायें।

भजन नं: 17

हम सब के जीवन प्राण हो तुम,
महाराज तुम्हारी जय होवे।
सब भक्तों के भगवान हो तुम,

महाराज तुम्हारी जय होवे ॥ टेक ॥

1. मुद्दत से थी यह चाह मुझे ।
प्रभु मिलें आप से आप मुझे, ।
सेवा में लगा लो नाथ मुझे,
महाराज तुम्हारी जय होवे ॥

2. दुखियों के सुखकारक तुम हो ।
उधमों के उद्धारक तुम हो ।
भव सागर के तारक तुम हो, तुमसे सौभाग्य उदय होवे ॥

3. पशु में मानवता लाते हो ।
मानव के देव बनाते हो ।
वह साधन ज्ञान सिखाते हो, अति सुन्दर शुद्ध हृदय होवे ।

4. मैं पन सब तुम में खो जावे ।
अन्तर का मल यह धो जावे ।
जीवन अमृतमय हो जावे, चेतना तुम्हीं से लय होवे ॥

5. ऐसा अब दे दो ज्ञान प्रभो ।
कुछ रह न जाए अभिमान प्रभो ।
बस रहे तुम्हारा ध्यान प्रभो, यह दास प्रेम तुम मय होवे ॥



॥ श्री गुरु भक्ति ॥

भजन नं: 18

हम भी होंगे कभी भव से पार सतगुरु शरण लिये ।
दूर होंगे कभी तो विकार सतगुरु शरण लिए ॥ टेक ॥

1. जगत से हम नहीं सम्बन्ध तोड़ पाते हैं।
नहीं सतगुरु से सम्बन्ध जोड़ पाते हैं।
सुख के लोभी हैं अभी मन न मोड़ पाते हैं।
सभी छिन जायेगा पर हम न छोड़ पाते हैं।
कभी अपना भी होगा सुधार, सतगुरू शरण लिए......

2. मिला जो कुछ है वह सब है प्रभु तुम्हारा है ।
किन्तु अज्ञानवश हम मानते हमारा है ।
जहां तक लग रहा सुखों का भोग प्यारा है।
वहां सत का नहीं असत का सहारा है ।
पूर्ण होंगे कभी सदविचार सतगुरू शरण लिए ......

3. कभी अपना कठोर हृदय भी कोमल होगा।
सभी अभिमान तोड़ कृपा का ही बल होगा ।
नाम के आश्रय से कभी मन निश्चल होगा।
काम पूरा ही होगा आज नहीं कल होगा।
हम तो करते रहेंगे पुकार सतगुरु शरण लिए......

4. हमारी वाणी में यह मंत्र गुरु की शरण।
ज्ञानी भी लेते हैं हो निरभिमान गुरू की शरण।
निराश प्रेमी का अमोध ध्यान गुरू की शरण।
बना देती है यह लघु से महान गुरू की शरण।
उतर जाता है पथिक मन का भार सतगुरु शरण......

भजन नं: 19

1. पूरियां गुरां दे नाल मुहब्बता जिनां दियां।
जिनां दियां सच्चियां गुरां दे नाल मुहब्बतां जिनां दियां॥

2. जिस ने प्रेम गुरां नाल कीता।

उसने जन्म सफल कर लीता ।
मुड़ना बड़ा मुहाल मुहब्बतां जिनां दियां ।
जिनां दियां......

3. जिहड़े प्रेमी है सतगुरु दे ।
लख मुसीवत पवे न मुड़दे ।
छडन न अपनी चाल मुहब्बतां जिनाँ दियां ।
जिनां दियां सच्चियां... ......

4. प्रेम तेरे दे जो मस्ताने ।
लोकी मारन कस कस ताने ।
सब सहंदे गाल मुहब्बतां जिनां दियां ।
जिनां दियां सच्चियां... ......

5. लोकी सार न जानन साडी ।
मंजिल प्रेम दी बड़ी दुराड़ी ।
दिल चों उठन उछाल मुहब्बता जिनां दियां ।
जिनां दियां सच्चियां... ......

6. जिस नू प्रेम पिया दा प्यारे ।
पावें वरजन लोकी सारे ।
छडन न अपना ख्याल मुहब्बतां जिनां दियां ।
जिनां दियां सच्चियां गुरां.........

7. जिनां मुहब्बतां सच्चियां लाईयां ।
अपने झख झख मरन लुकाईयां ।
वींगा न हुंदा बाल मुहब्बतां जिनां दियां
जिनां दियां सच्चियां लाईयां.........

8. प्रेम पिया दा जे तू लोड़े ।
लोक लाज तू सब ही छोड़े ।
सतगुरु करे निहाल मुहब्बतां जिनां दियां ।
जिनां दियां सच्चियां... ......

9. सतगुरु बख्शे प्रेम उड़ारे ।
प्रीती गुरां दी पार उतारे ।
हरदम करे सम्भाल मुहब्बतां जिनां दियां ।
जिनां दियां सच्चियां.........

भजन नं: 20

मेरे परम सतगुरू प्यारे, मैं तेरा ही यश गावां।
तेरा नाम जपां दिन राती, हर वेले ही तैनू ध्यावां।
इक पल भी न विसारां तैनू, इतना ख्याल सदा रहे मैंनू।
दुनियां दी मोह माया विच फंस तैनू न भुल जावां।
मेरे सतगुरू परम प्यारे......

तुझे बनाया अपना जामन, छोड़ा कभी न तेरा दामन।
मेरे जन्म जन्म के साथी, कदी न तैनू बिसरावां।
मेरे सतगुरु परम प्यारे......

भक्ति पथ सदा चलूं मैं, अपना जीवन सफल करूं मैं।
तेरे पद चिन्हों पर चल कर, मैं सेवक धर्म कमाता हूं।
मेरे सतगुरु परम प्यारे......

मेरी काटो लाख चौरासी, काटो जन्म मरण फांसी।
तेरा नाम ही जपदे जावां, और मोक्ष द्वारा पावां।

भजन नं: 21

दरबार गुरां दा सुहाना, ऐनू मुड़ मुड़ देख जमाना।

1. जग मग ज्योति जग रही ऐ।
सब नू प्यारी लग रही है।
पा के दर्शन मैं हो गया दीवाना। ऐनू मुड़ मुड़......
2. दर तेरे जो आ जावे।
मंगियां मुरादां पा जावें।
तेरे आसरे सारा जमाना। ऐनू मुड़ मुड़......
3. कलियुग विच अवतार लिया।
घर घर मंगलाचार हुआ।
नहीं खुशिया दा कोई टिकाना। ऐनू मुड़ मुड़......
4. शैल छबीले नैन तेरे।
सुन्दर सुन्दर वचन तेरे।
अनमोल असां ने पाना। ऐनू मुड़ मुड़......
5. दासनुदासी बन जावां मैं।
मंगियां मुरादा पावां मैं.

मेरा शाम बड़ा मस्ताना । ऐनू मुड़ मुड़ ... ...

भजन नं: 22

इक दर दर लबदे सतगुरु नू इक फड़ के कोल बैठा लैंदे ।
इक मन्दिरों खाली मुड़ आंदे इक मन विच ओहनू पा लैंदे ।

1. जद प्यार दी अग्नि अन्दर इन्सान दी बुद्धि सड़ जावे ।
तद प्रीतम अपने प्रेमी नू पागल कह के गल ला लैंदे ।
इक दर दर . ...

2. कई मंजिल ढूढते फिरदे ने कई पहुंच के भी न पहुंच सके ।
इक लबदे शाम गवाचे नू इक लब के शाम गवा लैंदे ।
इक दर दर...... ...

3. दो रंग दी दुनियां दे अन्दर दो रुप ने दुनियां दारा दे ।
इक शक्ल चों आबे रब दिसदा इक रब दी शक्ल बना लैंदे ।
इक दर दर.........

4. इक भव दा सागर है विष्णु इसदा कोई भेद न पाया है ।
इक फड़ फड़ तारन लोकां नू इक आपना आप ड़ुबा लैंदे ।
इक दर दर.........
इक मन्दिरों वालो... ......

भजन नं: 23

असां तेरे पिछे सतगुरु जी जहान छडियां ।
छडे मन्दिर मसीत ते कुरान छडिया । असा तेरे......

1. अंसा तेरा चेहरा देख के नमाजा छडियां ।
कतबे पढ़ने पढ़ाने ते कितांबा छडियां ।
छड़े मन्दिर . ... । असां तेरे पिछे ....

2. इस रंज वाले मन नू की लैना फोल के ।
उस रब नू की लैना जेहड़ा मारे रोल के ।
सानू औही रब चंगा जेहड़ा दसे बोल के ।
गूंगे रब कोलों असां आना जाना छडिया ।
छड़ मन्दिर मसीत...... । असां ते पिछे.........

3. पीर रुसया भुल्ले दा हाए दिल दुखया ।

घर कंजरा दे जांके भुल्ले तपला सिखिया।
भुल्ले नच के गुरां नू मना छडिया।
छडे मन्दिर मसीत ...... असां तेरे पिछे......

भजन नं: 24

तर्ज :— जरा सामने तो आओ छलिए.........

आवो आवो मेरे गुरूदेव जी तेरे नाम दी मैं इको माला फेरनी
एह मानुष चोला मैंनूं मिलिया मुड़-2 के न मिलना फेर जी।
दुनियां पावे सारी रुस जावे दुनियां दी मैंनू लोड़ नहीं।
हारां वाले सतगुरु प्यारे मेरे वलो मुखड़ा न मोड़ लवी।
देवो दर्शन न करो हुन देर जी। तेरे नाम दी इको माला फेरनी।
आवो आवो मेरे.........
रिश्ते नाते सारे छड़ दिते ही दर आन गिरी।
जदो होवेगी मेरे बल मेर जी कट जानगे चोरासी वाले गेड़ जी।
आवो आवो मेरे.........
हथ मेरे विच हार फुलां दे सतगुरां दे गल पा देवा।
तन, मन, धन सब अर्पण करके तेरे दर शोश नवां देवां।
कदो होवेगी मेरे वल दी दूर करो अन्धेर जी।
तेरे नाम दी......... । आवो आवो मेरे.........
एह मानुष चोला मैंनू मिलिया मुड़ मुड़ के न मिलना फेर जी
आवो आबो मेरे.........

भजन नं: 25

मैं आ गया दर तेरे ते सुन सतगुरू प्यारे।
लैके दिल दीयां हावां अखां विच पानी।
मैं जग दे विच आके बड़े पाप कमाए।
तू नंगल वाले लख पापी तारे मैंनू भी चरणी ला लो,
मैंनू भी दर्शन दिखा दो। दर आ गया हूं मैं आ गया.........
तेरी दुनियां ने मेरी होश भुलाई,
या दिल जाने मेरा या तू जाने स्वामी
मैंनू दुनियां ने ठुकराया। मैं दर तेरे ते आया सुन सतगुरु...

नई दर्शन देना मुझ को बता दो
अपनी हथी मैनू दो कुट जहर पिला दो।
तेरे नाम दी धूनी हरदम लगावां आ गया दर तेरे।
सुन सतगुरु प्यारे......

भजन नं 26

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
महाराज तुम्हारे चरणों में गुरुदेब तुम्हारे चरणों में ।
1. यह विनती है पल-पल छिन-छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में—2
चाहे बैरी कुल संसार बने, चाहे मौत गले का हार बने।
मिलता है सच्चा सुख.........
2. चाहे संकष्ट ने हमें घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो ।
पर मन न डग-मग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सच्चा सुख——
3. चाहे अग्नि में हमें जलना हो, चाहे कांटों पे हमें चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सच्चा सुख.........
4. जीभा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
तेरी याद में आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है सचचा सुख....

भजन नं 27

ब्रह्म ब्रह्म कहिदियां ब्रह्म बन जायेगा आपे तर जायेगा तू—2
1, काल क्रोध मोह लोभ हंकार नू तू मार दे।
आशा ममता त्रिशना नू दिल तों विसार दे—2
सतगुरां दा चरणी जा के नाम चेते आयेगा—2
ब्रह्म ब्रह्म कहिदियां.........
2. बैठ के इकागर जो ध्यान जो लगा लिया।
योगियां ने प्रभु जी नूं हृदय च बसा लिया।
सोइंग शब्द से प्रेम जो लगायेगा—2
ब्रह्म ब्रह्म कहिदियां.........

3. राम राम अवतार अहल्या को तारिया।
शिवरी का प्रभु ने कष्ट निवारिया।
राम इस दासी दी नैया पार लगावेगा—2
ब्रह्म ब्रह्म कहिदियाँ......

भजन नं: 28

1. लाखों दर हैं जमाने में यूँ तो।
तेरे दर के बराबर नहीं है।
सोहनी सूरत जमाने में लाखों।
तेरी सूरत के काबल नहीं है।

2. मैं लेकर आई हूं तमन्ना,
मेरे भगवन जी अपना बना लो।
मुझे विश्वास है मेरे भगवन।
खाली दर से गया कोई नहीं है।
लाखों दर हैं.....

3. मेरे दाता मेरे सतगुरु जी,
तेरी सूरत पे कुरबान जाऊं।
वारूं हस्ती को अपनी मैं तुझ पे
कृपा तेरी से मुश्किल नहीं है।

4. और लोगों को कई हैं सहारे,
मान करते हैं वो उन्हीं पर।
दीनाबन्धु मेरे एक तुम्हीं हो,
मेरा एक सहारा तुमीं हो।
लाखों दर है......



॥ गुरु महिमा ॥

भजन नं: 29

मेरा गुरुवर परम प्यारा जमाने से निराला है।
यही ब्रह्म यही विष्णु यही कैलाश वाला है ॥ टेक
1. लखां जलवा जो गुरुवर का तो दुनिया ही भुला बैठा।
कि इनकी मोहनी मूरती ने कुछ जादू सा डाला है ॥
2. तुम्हें मुझ से अनेकों हैं मगर मेरे तुम्हीं तुम हो।
तुम्हीं सोचो हमारी कौन सुनने वाला है ॥
3. गरल के पात्र में मीरां के तुम ने ही सुधा भर दी।
तू ही शबरी के घर जा वेर झूठे खाने वाला है ॥
4. महा अदभुत बड़ी विस्तृत कथा है तेरी लीला की।
ए दासुनदास हरदम तेरी लीला गाने वाला है।

भजन नं: 30

गुरूदेव तुम्हारी शान्ति घटा गर नयनों में बस जावेगी।
फिर तो इस दुनियादारी की यह मोह घटा हट जावेगी। टेक।
1. निश दिन विषयों के फंदों में।
यह मन भरमाया रहता है।
हे करूणामय जब करो कृपा, तब भ्रान्ति सब मिट जायेगी।
2. अज्ञान अन्धेरा है जो भी।
सब क्षण भर में हट जावेगा।
जब अपनी अनुपम ज्योति,
अचल मन मन्दिर में जग जावेगी ॥
3. फिर दैहिक, दैविक अरू भौतिक।
दुख सहने की शक्ति होगी।
अरू बुद्धि भी निर्मल होकर सद चिन्तन में लग जावेगी ॥
4. यह विनय सदा इस दास की है।
सेवा में यह लगा रहे।
मन परमानन्द में रमा रहे तो यह माया हट जावेगी ॥

भजन नं: 31

गुरु की मूरती मन में बसा लो जिसका जी चाहे।
गुरु चरणों में विगड़ी बना लो जिसका जी चाहे। टेक

1. गुरु ब्रह्म गुरू विष्णु गुरु महादेव देवन के।
यही मन में सदा निश्चय बिठा लो जिस का जी चाहे॥

2. गुरु मूरतो है ईश्वर ही नहीं यह जड़ की पूजा है।
इसी के ध्यान को मन को लगा लो जिसका जी चाहे।

3. गुरु कृपा से नारद की कटी चौरासी पल भर में।
जनक शुक देव की पदवी को पा लो जिसका जी चाहे।

4. परम गुरुवर बिना कोई नहीं जग में ठिकाना है।
भटकना छोड़कर इक दर बना लो जिस का जी चाहे॥

5. कहे यह दास समझाई गुरु पूजन करो भाई।
इन्हीं चरणों में दो आंसू बहा लो जिसका जी चाहे।

भजन नं: 32

सतगुरू धोती धोवन आयां सुर्त मेरी जन्म दी मैली नूं. टेक

1. सतगुरु कलयुग दे विच आया,
अपने नाम दा साबुन लाया।
उसदा भेद किसे न पाया, देंदा मुखत सवाली नूं।
सतगुरु धोवी धोवन.........

2. आपे पानी विच खलोवे, सानू पटड़े उते धोवे।
उसदे कोल न कोई खलोवे, देखे हाल वेहागी नूं।
सतगुरू धोवी धोवन.........

3. जिसदे लैंदे नईयों पाप, उस नूं भट्ठी चढ़ावे आप।
बन के भाई, मां बाप पावे ठण्ड कलेजे नूं
सतगुरू धोवी धोवन आया सुर्त मेरी जन्म दी मैली नूं।

भजन नं: 33

सतगुरू मेरे चन्द वरगे, मेरी प्रीत न चकोरा वाली। टेक

1. गल विच सोहना चोला सजदा,
सोहनी सजदी ऐ धोती कनी वाली।

सतगुरू मेरे चन्द.........

2. मत्थे विच जोत जगदी, ओह्दे पटके दी शान निराली।
सतगुरू मेरे चन्द.........

3. गुट उते घड़ी सजदी, सोहनी सजदी ए शाप थेवे वाली।
सतगुरू मेरे चन्द.........

4. नैनां उते सोहनी ऐनक सजदी, नुरी मुखड़े जोत निराली।
सतगुरू मेरे चन्द.........

5. चरणां च सोहना जोड़ा सजदा चाल चलदे ने हंसा वाली।
सतगुरू मेरे चन्द.........

6. पंलग उते सतगुरू सजदे, संगत सजदी गुरां दे नाल सारी
सतगुरू मेरे चन्द.........

भजन नं: 34

सईयो नी मैंनू पीर मिलिया, जेहड़ा खंडा ब्रह्ममंडा दा वाली।

1. खुशियां दे विच मैं फुली न सामावां
तन होवे कपड़ा ता हेठ नी विछांवां।
मैं रोज मनावां दीवाली, सईयो नी मैंनू .....

2. जागी तकदीर मैंनु चरणा च ला लिया।
जान के जतीम मैंनु अपना बना लिया।
मेरी रोज करे रखवाली, सईयों नी मैंनु......

3. रूह ते मेरी कैद हो गई सी पापो मनए दे बस विच पै गई
मसा ही छुड़ाई अडियो नी मैं ता शरण गुरां विच आई
मोडदा न खैर तो बिना जिहड़े दर ते आए ने सवाली।
सईयो नी मैंनु ....

4. की की तेनु पीर दे मैं गुन सुनावा
चलो मेरे नाल नी मैं दर्शन दिखलावा
ओह ता दोहा जहाना दा वाली,
सईयो नी मैंनु.........

5. मेरे जिहियां रूहां ओथे लखां ते हजारा
दर्शन करके लैदियां वहारां

सदा रहदीं चेहरे ते खुशहाली
सईयो नी मैंनु.........

6. हरदम रहन्दा ओहदे नाम दा उधार नी
शब्द स्वरूप होके लैंदा मेरी सार नी
झली जावे न मत्थे वाली लाली
सईयो नी मैंनु.........

भजन नं: 35

1. संगत पुछदी ऐ पूरे गुरु केहड़े ने।
ऊंचे झण्डे ते नंगल डेरे ने।
ऊंचे झण्डे ते भरमाड़ विच डेरे ने।
संगत पुछदी ए.........

2. ओम नाम वाला शब्द सुनाया आन के
जात पात वाला भरम मिटाया आन के।
संगत पुछदी ऐ.........

3. भगवी चोला ते गल विच माला ऐ।
सुर्ती शब्द नाल मेल कराया आन के।
संगत पुछदी ऐ.........
ऊंचे झण्डे ते.........

(उपदेश)

भजन नं 36

जाके गुरां दे द्वारे झाती पान दा की कम।
करिये रज के दीदार खाली आन दा की कम।

1. सिर दित्तियां बिनां जी दीदार न हुन्दा।
कदमी डिगिया बिना खुश यार न हुन्दा।
मिट्टी होके रहना पैंदा ऐथे मान दा की कम।
जाके गुरां.........

2. जग कख है प्यारे ओहदा नाम है ऊंचा।
इस फक्कर दी फकीरी दा द्वार है ऊचा।
सिर रख गुरु चरणा ते शान दा की कम।

जाके गुरां दे... .....
करिये रज के... ... ...

भजन नं: 37

जिस पढ़ने से प्रभु मिलता है।
वो पढ़न पढ़ान इलहदा है।
जो हरदम अजपा जाप जपे,
हृदय की जवान इलहदा है॥ टेक

1. कोई जमुना जी में कूद रहा,
कोई गंगा जी में नहाता है।
घट में जो आत्म तीर्थ है
उस का अस्नान इलहदा है।

2. क्या पंडित कथा सुनाते हैं,
वक्ता तू चारों वेदों का।
जो परम ज्ञान का अक्षर है,
वो गुरु का ज्ञान इलहदा है॥

3. दुनिया में हजारों मन्दिर हैं,
हो रहा मूरती पूजन है।
यहां ठाकुर जी का डेरा है,
घट में स्नान इलहदा है।

4. है कोई धनी तलवारों के,
कहीं चलती तोप मशीने हैं।
जहां पांच शत्रु लड़ते हैं वो,
जंगों मैदान इलहदा है॥

5. मंडी में हज़ारों सौदे हैं,
हर रोज निलामी होती है।
जहां सच्चा सौदा होता है,
वो धर्म दुकान इलहदा है।

6. कहीं चूनी पन्ना नीलम है,
मोती, मानक, पुखराज कहीं।

यहां परम ज्ञान का हीरा है,
खानों में खान इलहदा है ।

7. क्या मूर्ख दर दर डोले है,
मत भटको गुरु की शरण गहो ।
जो दाता परम दयालू है,
तेरा भगवान इलहदा है ।

8. श्री सतगुरु परम देव जी की,
महिमा क्या दास बयान करे ।
दुनियां के पीर फकीरों से,
कुछ इनकी शान इलहदा है ।।

भजन नं: 38

राम नाम के साबुन से जो मन की मैल मिटाएगा ।
निर्मल मन के शीशे में वो राम के दर्शन पाएगा ।

1. रोम रोम में राम है तेरे, वो तो तुझसे दूर नहीं—2
देख सके जो आंख है तेरी, उन आखों में है नूर नहीं—2
देखेगा मन मन्दिर में, जो ज्ञान की जोत जगाएगा ।
निर्मल मन के. .. ...
राम नाम के साबुन... ... ...

2. ऐ शरीर अभिमान है जिसको, हरि कृपा से पाया है—2
झूठे जग में फंस करके, क्यों तूने उसे बिसराया है—2
राम नाम दा सच्चा धन जो साथ तुम्हारे जाएगा ।
निर्मल मन के..... ...
राम नाम के..... ...

3. झूठ, कपट निंदा को त्यागो, सब जग से तुम प्यार करो—2
घर आए महमान की सेवा, से न तुम इन्कार करो—2
पता नहीं किस भेष आकर नारायण मिल जाएगा ।
निर्मल मन के... ... ...
राम नाम के साबुन... ... ...

4. इस माया का मान न करिये, ये तो आनी जानी है.. 2
राजा रंक अनेकों हो गए, जिनकी सुनी कहानी है—2,

गया वक्त फिर हाथ न आवे, सिर धुन धुन पछताएगा।
निर्मल मन के शीशे.........
राम नाम के साबुन.........

भजन नं: 39

नाम जपो नाम जपो दिन राती हर का नाम जपो ।। टेक ।।

1. स्वास स्वास में वंदगी हो रही 2
अन्दर मार लो झाती, हर का नाम जपो ।।
नाम जपो.........

2. दो मनके दी माला जेहड़ी 2
बिना जीभ फिर जाती, हर का नाम जपो ।।
नाम जपो.........

3. आत्म ज्योति जगमग जागे 2
बिना घी के बिन बत्ती, हर का नाम जपो ।।
नाम जपो.........

4. दासुनदास ए रमज हकीकी 2
परलोक बनेगी साथी, हर का नाम जपो ।।
नाम जपो.........

भजन नं: 40

अपना आप पहचान बन्दिया अपना तू

1. यह तू अपना आप पहचान ।
मिलना साईं दा आसान ।।
बन्दिया अपना आप.........

2. दुनियां दौलत माल खजाना ।
औ संग किसी न जाना ।।
बन्दिया अपना आप.........

3. साढ़े तीन हथ जमीन बन्दे दी ।
ऐढे तम्बू न तान ।।
बन्दिया अपना आप.........

5. शहन शाह फकीर साईं दा।
छड़ दे खुशी धमाव।।

वन्दिया अपना आप.........

।। चेतावनी ।।

भजन नं: 41

1. नाम दी जोत जगा मन मेरे उमर पई बीती जांदी ऐ।
उमर पई बीती जांदी ऐ, उमर पई बीती जांदी ऐ।।

नाम दी जोत.........

2. गर्भ दे भुल गयो वायदे, जदों उल्टा लटकाया सी।
हजारां तरले कर-कर के, ए मूर्ख वाहर आया सी।।
फंस गया मोह जालां दे अन्दर, मरन दी याद न आंदी ऐ।

नाम दी जोत.........

3. जगत की झूठी माया, कि इसका नाम भी झूठा है।
जो कल महलां च बसदे सी, औनां दे हथ अज ठूठा है।।

नाम दी जोत.........

4. सफर लई खर्चा बन पल्ले, सफर जो करना भारी है।
जाना विच प्रदेसां दे, जित्थे न रिश्तेदारी ऐ।
नाम तों जांदे जो खाली, उन्हां दी हुन्दी खवारी ऐ।।

नाम दी जोत......

5. गुरू जी देखदयां बख्शो अवगुन-अवगुन हारां दे।
जे तैनू चाह मिलने दी कि लड़ खड़ लै अवतारां दे।
नाम ती जोत जगा मन मेरे आगे तेरे काम जो आनी ऐ।।

नाम दी जोत.. ...

भजन नं: 42

1. पहले सोहनेयां विचारां नू विचार लिया कर।
फिर हृदय दी फटी उते धार लिया कर॥

2. रख याद सच्चे सांई, जिनां रखां दितियां।
हथ, पैर, मुख, कन, नक, अखां दितियां॥
कदे ओस दा भी शुक्र गुजार लिया कर।

पहले सोहनियां......

3. देखीं दुखां दियां कड़ीयां च रुल न जावीं
बहुत खुशियां दे फुल देख फुल न जावीं।
दोवें कर्मां दे भोग ने तू भूल न जावीं।
सुखां नाल दुःख हस के सहार लिया कर।

पहले सोहनियां......

4. फिर आकड़ां दे नाल धौन मुंह मरोड़ के।
गलां करना ऐ अमीरां नाल मुख जोड़ के।
लंघ जाना ऐ गरीबां कोलों मुख मोड़ के।
गडो छोटे स्टेशना भी खलार लिया कर।

पहले सोहनियां......
फिर हृदय......

भजन नं. 43

1. जरा दिल को लगा देखो कि, अन्दर क्या नजारा है।
जरा सिर को झुका देखो, रुप कैसा तुम्हारा है।

2. यह पांचों तत्व का पुतला नजर आता है जो तुझको।
इसी में रत्न माणिक का, भरा भण्डार भारा है।

जरा दिल को......

3. करो तुम लाख तजवीजें जोग ज्ञान पाने की
बिना गुरु शान्ति न आवे नहीं खुलता वो द्वारा है।

जरा दिल को......

4. खींच कर प्राण को अन्दर, चले आओ कि निज मन्दिर
वहां की यह निशानी है चमकता लाख तारा है।

जरा दिल को......

5. धुन हरदम निराले शान की, उस घट में होती है
वही सुनता है कि, जिसको किया सतगुरु ने ईशारा है।
जरा दिल को......

7. अगर खवायश हो उस घट में, रहने की जरा तुमको
तो कहता दास है ढूढें, जो पूरा गुरु प्यारा है।
जरा दिल को......

भजन नं. 44

1. उठा कन आंख तुम देखो कि अन्दर क्या नजारा है।
ठिकाना है वही सबका यहां नौ लाख तारा है।
3. लगाओ ध्यान मस्तिक में, पहचानो उसको तुम भाई।
फैलाए हाथ जो बैठा है वही मालिक हमारा है।
उठा कर आंख......

3. रचाई खेल जग में, खिलाड़ी खुद खुदा जानो।
फंस न जाना दुनियां में हरी का सहारा है।
उठा कर आंख......

4. हटादे परदा गफलत का, नहीं वो दूर तुम से है।
परम सुख आत्म ज्योति में, वो ही सब का प्यारा है।
उठा कर आंख तुम देखो......
ठिकाना है वही......

भजन नं. 45

तर्ज़ :— एक डाल पर तोता बोले .....

तोते से जूं मैना बोली पिंजरा हुआ पुराना,
न तो है इक आस का पक्षी, कर ले और ठिकाना।
बोली मैना—पांच तत्व के मेल से तू मानव चोला पाया।
जन्म लिया दुनयिां में आ कर हरी भजन नहीं गाया।
राम नाम तू गाये जा जीवन सफल बनाए जा।
जग जंजाल को छोड़ के तू राम नाम गुण गा ले बोली मैना।
तोते से जुं.........

तोता बोला तू झूठा है जग सारा
मैना बोली :— मैनू सड के मल लै सतगुरू दा द्वारा।
गुरू शरण में आ जा, जीवन सफल बना जा।
इस दुनियां में फंस करके, तू क्या दुनियां में लेना।
बोली मैना तोते से तूँ........
कहे दास तेरा मैं तेरे चरणों में चित लगाऊं।
प्यारे सतगुरु आ जा बिगड़ी आन बना जा।
मैं हूं अब से दासी तेरी तारो मेरे नैना।
बोली मैना तोते से जुँ भैना बोली पिंजरा.........
तू तो है इक आस ....

भजन नं. 46

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो।
मन को विषयों के विष से हटाते चलो ।। टेक
1. देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगे।
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगे।
अपने रथ को सुमार्ग लगाते चलो ।।
2. प्राण जावें मगर नाम भूलें नहीं।
दु:ख में तड़पो नहीं सुख में फूलों नहीं।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो ।।
3. काम करते रहो नाम जपते रहो।
पाप की वासनाओं से बचते रहो।
सदा सतसंग में जीवन बिताते चलो ।।

भजन नं. 47

छोड़कर संसार जब तू जायेगा,
कोई न साथी तेरा साथ निभायेगा ।। टेक
गर हरि का भजन किया न,
सतसंग किया ना दो घड़ियां।
1. यमदूत लगाकर तुझको,
ले जायेंगे हथ कड़ियां
कौन छुड़ावेगा कोई न साथी ।।

2. इस पेट भरन की खातिर,
तू पाप कमाना निश दिन।
शमशान में लकड़ी रखकर,
तेरे आग लगेगी एक दिन,
खाक हो जायेगा, कोई न साथी ॥

3. सतसंग बहती गंगा है,
तू इस में लगा ले गोता।
वरना इस दुनिया से तू,
जायेगा एक दिन रोता।
फिर पछताएगा, कोई न साथी तेरा ॥

4. क्या कहता मेरा-मेरा
यह दुनियां रैन बसेरा ।
यहां कोई न रहने पाता,
है चन्द दिनों का डेरा।
हंस उड़ जाएगा, कोई न साथी तेरा।

5. अब गुरू चरणों में निश दिन,
तू ध्यान लगाले बन्दे।
कट जायेंगे सब तेरे,
ये जन्म मरण के फन्दे।
पार हो जायेगा, कोई न साथी ॥

भजन नं. 48

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या।
सहारे टूट जाते हैं, सहारों का भरोसा क्या ॥ टेक ॥

1. तमन्नायें जो तेरी हैं, वो सावन की फुहारें हैं।
फुहारे सूख जाते हैं फुहारों का भरोसा क्या ॥

2. दिलासे जो जहां के हैं, सभी रंगी बहारें हैं।
बहारे रूठ जाती हैं, बहारो का भरोसा क्या ।।

2. तू इन रंगी गुब्बारों पर, अरे दिल क्यों फिदा होता।
गुब्बारे फूट जाते हैं। गुब्बारों का भरोसा क्या ॥

3. छोड़ दे नाम की किस्ती, किनारे से किनारा कर।
किनारे टूट जाते हैं, किनारों का भरोसा क्या ॥

भजन नं: 49

मन भूला भूला फिरे जगत में कैसा नाता रे ॥ टेक ॥

1. माता कहे यह पुत्र हमारा, बहन कहे वीर मेरा रे।
भाई कहे यह भुजा हमारी नारी कहे नर मेरा रे।
मन भूला भूला.........

2. पेट पकड़ कर माता रोवे, बांह पकड़ भाई रे।
लपट झपट कर त्रिया रोवे, हंस अकेला जाई रे ॥
मन भूला भूला.........

3. तेरहां दिन तक त्रिया रोवे, छः महीने सखा भाई रे।
जब तक जीवे रोवे माता, बहन रोवे दस मासा रे ॥
मन भूला भूला ....

4. चार गजी चर गजी मंगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी रे।
चारों कोने आग लगा दी, फूंक दिया यश होरी रे ॥
मन भूला भूला.........

5. घर की त्रिया देखन लागी, ढूँढ फिरू चहु देशा रे।
कहत कबीर सुनो रे साधो, झूठी जग दी आशा रे ॥
मन भूल भूला ....

भजन नं: 50

हरि नाम के हीरे मोती, सन्त विखेरे गली गली।
ले लो रे कोई राम का प्यारा, आवाज लगाई गली गली ॥

1. दौलत के दीवाने सुन ले इक दिन ऐथों जाएगा—2
धन, यौवन और रूप खजाना, धरा यही रह जाएगा—2
अन्त बसेरा दो दिन का है, आखिर होगी चलो चली।
ले लो रे.........
हरि नाम के हीरे.........

2. रिश्ते नाते शखा सम्बन्धी, इक दिन तुझे भुलायेंगे—2
आज जो कहते हैं हम हैं तेरे, अग्नि में तुझे जलायेंगे—2

सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा हो गई गली गली।
ले लो रे.........
हरि नाम के हीरे.........

3. जिस को अपना कह कर बन्दे, तू इतना इतराता है—2
वक्त न तेरे काम न आवे, तू ही अकेला जाता है—2
दो दिन का यह चमन खिलेगा, मुरझायेगी कली कली।
ले लो रे.........
हरि नाम के हीरे.........
ले लो रे कोई.........

भजन नं: 51

प्रेमी बन्दे प्रेम से, श्री सतगुरु के गुण गाया करो।
मन मन्दिर में गाफला, तू झाड़ू रोज लगाया करो॥

1. सोते सोते रैन गवाई, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद बन्दे, होता अपना आप रहा॥
नित उठ सुबह प्रेम से, सत संगत में तू जाया कर।
मन मन्दिर.........
प्रेम बन्दे प्रेम से.........

2. नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥
हरि प्रभु का नाम है, नित सुबह शाम तू गाया कर।
मन मन्दिर.........
प्रेमी बन्दे प्रेम से.........

3. जाट अजामल दास कबीरा, एक तो नन्दा नाई था।
शिवरी भिलनी मीराबाई, सदना नाम कसाई था॥
मूर्ख जन्म सम्भाले अपना, मन को न भटकाया कर।
मन मन्दिर.........
प्रेमी बन्दे प्रेम से.........

4. पास तेरे इक दुखिया बैठा, तूने मौज उड़ाई क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तूने रोटी खाई क्या।

पहले सब को पूछ के; पीछे रोटी खाया कर।

मन मन्दिर.........

प्रेमी बन्दे प्रेम से.........

भजन नं 52

1. उठ जाग सबेरे नी जिंदडिए सुन सतगुरू दी बाणी।
हुन सतसंग सुन लै नी जिंदडिए मौज वथेरी मानी।

उठ जाग सबेरे नी.........

2. इस जीवन में धर्म न कीता न कोई पुण्य कमाया।
कर कर बन्दिया तू दिन राती हीरा जन्म गवाया।
यम ऐसे मारनगे जिंदडिए पीन न देंदे पानी।

उठ जाग सवेरे.........

2. न रहे छोटे न रहे मोटे, न रहे राजे-राने।
हस्स खेल के चार दिहाड़े कर गए कूच मकाने।
तू ऐसे रूढ़ जाना नी जिंदडिए ज्यूं नहरां दा पानी।

उठ जाग सबेरे नी.........

भजन नं: 53

किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाए उसे इन्सान कहते हैं।।

1. कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है,
कभी सुख हैं कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।

जो दुख में भी न घबराए, उसे इन्सान——

किसी के काम......

2. यह दुनियाँ एक उलझन है; कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हंस हंस जीता है, कोई जीता है रो रो कर।

जो गिर कर फिर सम्भल जाए उसे इन्सान......

किसी के काम......

3. अगर गलती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है।
बसर गलती का पुतला है ये अकसर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताए उसे इन्सान......
किसी के काम......

4. अकेले ही जो खा खा कर सदा गुजरान करते हैं।
ज्यों भरने को तो दुनियां में पशु भी पेट भरते हैं।
पर जो बांट कर खाए, उसे इन्सान......
किसी के काम जो......

भजन नं: 54

लहराएगा लहराएगा झंडा प्यारा ओम् का। लहराएगा......

1. यह झंडा सनातन धर्म का।
यह झंडा शुभ कर्म का।
लहराएगा-लहराएगा झंडा प्यारा ओम् का।
लहराएगा......

2. हमें ओम् ध्वज प्यारा है।
आखों का यह तारा है।
प्राणों से भी प्यारा है।
सबका यही सहारा है।
लहराएगा-लहराएगा झंडा प्यारा ओम् का।
लहराएगा......

3. कह रहा है यह झंडा।
पाप का फूटेगा भंडा।
बरसा ले लाठी डंडा।
नहीं झुकेगा यह झंडा।
लहराएगा-लहराएगा झंडा प्यारा ओम् का।
लहराएगा......

4. हिमालय की चोटी पर।
शहर-शहर की कोठी पर।

संसार की ऊंची चोटी पर।
बच्चे बूढ़े की सोटी पर ।
लहराएगा-लहराएगा झंडा प्यारा ओम् का।

लहराएगा......

भजन नं: 55

मने विचों मैल कढ़ाई जाया हों।
सतसंग गंगा विच नाही जाया हो।
रात दिने करदा तू निंदिया पराई
खाई खाईं मांस दिते वकरू मुकाई।
1. पापां ते अपराधा तो हटी जाया हो
सतसंग गंगा विच नाही जाया हो
2. मुर्खा पराया मांस चम भी तू देड़ना
कोहलु दे विच पाई यमां तेकी पीड़ना।
नरकां तो जिन्द छड़ाई जाया हो
सतसंग गंगा विच नाही जाया हो
नरसिंह वीर तेथो वकरू नहीं मंगदा
छेलुए दे लई सिध सूली न चढ़ादां।
चेले दे गलाये न वढ़ाई जाया हो
सतसंग गंगा विच नाही जाया हो
4. देवी कने देवते मांस नही खांवदे
चेले ते गालड़ी भुलेखे विच पांवदे।
राक्षसां हा खाना मत खाई जाया हो
सतसंग गंगा विच नाही जाया हो
5. वेद ते पुराण कने आखदे महातमा
सवना जीवा दे विच वसे इक आतमा।
दान पुण्य नाम कमाई जाया हो
सतसंग गंगा विच नाहीं जाया हो।

★ ★ ★

।। वैराग ।।

भजन नं 56

उसी को होता दुःख जग में, जो जग के रंग में रंगा हुआ है।
सुखों के पाने की लालसा का विचार जिस में लगा हुआ है। टेक

1. असन हो अच्छा, वसन हो अच्छा।
अच्छा रमण हो, अच्छा भ्रमण हो अच्छा।
इस अच्छे अच्छे की चाहना में,
बुरा ए जीवन बना हुआ है।

2. वियोग का योग में है संशय,
विषय के भोगों में रोग का भय।
निदान प्रत्येक सुख का बिखा व्यथा के
फल से फला हुआ है ।।

3. ए तन है मेरा ए जन है मेरा,
ए धन है मेरा; भवन ए मेरा।
इस मेरा मेरी में इस तरह से फंसा है,
जो बस फंसा हुआ है ।।

4. वही है निर्द्वन्द जो है त्यागी वही में,
कल्याण पथ का भागी।
घिरा है संपत्तियों से जो वह विपत्तियों
से घिरा हुआ है ।।

भजन नं 57

दो स्वांसों के जब सारे गिन जायेंगे।
प्राण तन से उसी दम निकल जायेंगे।
तेरे अधिकार न तेरे काम आयेंगे,
तुझको छू कर कुटुम्बी तेरे नहायेंगे ।।

1. तेरी मुश्कों को कसकर के बाधेंगे यह।
और दस पांच मिलकर उठायेंगे देह।
ये तुझे काढ़ घर से तेरे लायेंगे तेरे अधिकार........॥
2. ये धरा धाम धन जिस में उलझा है तू।
जिस को सर्वस्व ही अपना समझा हैं तू।
वे धरे के धरे सारे रह जायेंगे तेरे अधिकार........।
3. जिसपै दौलत ऐ सारी लुटादा हैं तू।
और जिन्हे अपना आज बताता है तूं।
एही मिल जुल के शमशान ले जायेंगे तेरे अधिकार.....
4. खुब धधकती हुई आग में झोंझकर,
और तेरे तन को जलता हुआ देखकर।
ए तुझे त्याग मरघट में घर आयेगे तेरे अधिकार......।
5. माल पर तेरे कब्जा जमायेंगे ये।
झूठी ममता फिर अपनी दिखायेंगे ये।
और बनाबट के आंसू बहा जायेंगे तेरे अधिकार ....।
6. नाम जप राम का शाम बावरे।
तू तनिक चेत माया से अब जाग रे।
नारी, मृत, बन्धु ए सब न संग जायेंगे तेरे अधिकार.......।
7. छोड़ आसक्ती माया को ममता को तज।
अपना जीवन बना राम भज कृष्ण भज।
आखिरी में यही तेरे काम आएंगे तेरे अधिकार.......।

भजन नं. 58

यह जगत सराय पुरानी है कोई आता है कोई जाता है।
इसमें फंसना नादानी है कोई आता है कोई जाता है।
1. मन माया में जब फंस जाये,
तब याद प्रभु की न आए।
हृदय में अन्धेरा छा जाये कोई.........
2. जब कृपा गुरू की होती है,
घट अन्दर जगदी ज्योति है।
तब गंगा विच कठौती है कोई आता है.........

3. हरि नाम बड़ा अलबेला है,
लगता नहीं पैसा धेला है।
जग चार दिनों का मेला है कोई आता है.........

4. इस जग में मन को फंसाना ना,
उल्टे रास्ते चले जाना न।
ऐ प्यारे प्रभु को भूलाना ना कोई आता है.........

॥ प्रेमाभक्ति ॥

भजन नं: 59

गोपियों का सन्देश श्याम से कह देना ऊधो॥ टेक ॥

1. जो मैं होती जल की मछलियां,
प्रभु करते स्नान चरण छुई जाती ऊधो,

2. जो मैं होती वन की हिरनिया,
प्रभु करते शिकार नाम ले मर जाती ऊधो ॥

3. जो मैं होती सीप का मोती,
प्रभु करते श्रृंगार गले विच सोहती ऊधो॥

4. जो मैं होती बांस की वंशी,
मुख पर करती बास अधर रस नित पीती ऊधो॥

5. जो मन में मन मोहन बसते,
मीरा के घनश्याम दरस नित पावती ऊधो॥

भजन नं: 60

दरश हमको न कभी कृष्ण दिखाया तूने,
भक्त हम भी है हमको भुलाया तूने ॥ टेक

1. पूतना ने तो जहर पिलाया था मगर,

हो दयावान भव से छुड़ाया तूने ॥
2. तूने भक्तों की सुनी टेर ए मुमकिन नहीं,
हमारी बार देर लगाया तूने ॥
3. वृज डूबने लगा था इन्द्र कोप से जब,
एक ऊंगली पे ही गिरिराज उठाया तूने ॥
4. द्रोपदी ने भी जब कि पुकारा था तुम्हे,
आये प्रेम के वश चीर बढ़ाया तूने ॥
5. तेरी लीला न कभी कृष्ण समझ में आए
लोग कहते हैं दही दूध चुराया तूने ॥
6. और तो भक्त तेरे भव से हुए पार सभी,
मेरी ही नाव नहीं पार लगाई तूने ॥

भजन नं: 61

जिधर उठाई निगाह मैंने,
उधर ही गुरूवर को आते देखा।
हर एक शय में हर एक जुनूं में,
उसी को सतसंग सुनाते देखा ॥ टेक

1. सुबह को सूरज की रोशनी में,
और रात के चन्दा की चांदनी में।
सितारों की महफिल में मैंने हरदम,
उसी को है चमचमाते देखा ॥
2. चमन में था तू गुलों में बैठा,
सजर में था बुलबुलों में बैठा।
हर इक कली का नशीला घूंघट,
उसी को मैंने उठाते देखा ॥
3. वही समुद्र में बह रहा था,
वही पहाड़ो में रह रहा था।
नज़र बिया मां जब झुकी तो,
उसी को जलवा दिखाते देखा ॥
4. कहीं पे वो नाच कर रहा था,
कहीं पे वो तान भर रहा था।

कहीं पे गीता का ज्ञान सुन्दर,
उसी मैंने सुनाते देख ।।

5. निगाह इस दास ने जो डाली ।
तो दिल भी उससे नहीं था कि खाली ।
इस मन के मन्दिर में उसको,
मधुर-मधुर मुस्कराते देखा ।।

भजन नं 62

पी गई प्याला रे प्याला मीरा पी गई जहर का प्याला
ले के श्याम के नाम की माला मीरा पी गई जहर ।। टेक

1. देखा मीरा ने जो विष का प्याला ।
देखा प्याले में गोकुल का ग्वाला ।
देखो मोहन का नाम कैसे आया है काम,
सारा विष अमृत कर डाला मीरा पी गई जहर ।।

2. जोर कितना भी राणा लगा ले ।
भक्त को हर तरह अजमाले ।
लाख कोशिश तू कर कुछ न होगा मगर,
उसका साथी है मुरली वाला मीरा पी गई जहर ।।

3. सच्चे दिल से जो मीरा भक्ति ।
काम आई न राणा की शक्ति ।
करके मोहन का ध्यान मीरा हो गई महान,
उसने आई मुसीबत को टाला मीरा पी गई जहर ।।

4. प्रभु भक्तों को जिसने सताया,
उसने एक दिन मुसीबत को पाया ।
उठा देखो इतिहास हुआ रावण का नाश,
पड़ा जिस दिन विभीषण से पाला मीरा पी गई जहर ।

भजन नं 63

जिना ताही प्रभु प्रेम वाले तीर लगदे ।
मीठे वचन ओना दे अकसीर लगदे ।।

1. रहिन्दे झलियां दे बाग, दिल प्रभु जी दे वांग
करदे कोई स्वांग, लीरों लीर लगदे ॥

जिना ताही.........

2. जग वल्लों बरबादी, अगे मिलदी आजादी।
गमी खुशी न शादी ओ फकीर लगदे ॥

जिना ताही.........

3. जिनू लगे प्रेम सच्चा, रहिन्दा अन्दरों ओ पक्का।
मन प्रभु नाल रचा, बाहरों कीर लगदे ॥

जिना ताही.........

4. रहिन्दा दास ए विचार, जे तू पावना दीदार।
पीछे प्रभु दे प्यार, ने शरीर लगदे ॥

जिना ताही.........

मीठे बचन.........

भजन नं 64

निक्का जिहा श्याम साडा रूस के नी वै गया।
तेरे नईयों आना सखी जांदा होया कह गया।

1. साड़े आ के कहदा सखी मक्खन लिया दे मैंनू।
अगों मैने आखिया सी मुरली सुना दे मैंनू।
छोटी जिनी गल दा पवाड़ा किना पै गया।

तेरे नईयों आना.........

निक्का जिहा श्याम.........

2. सोचया सी मुरली सुन दिल नू रिझावांगी।
रज-रज सांबरे नूं मक्खन खिलावांगी।
चाह साडे दिला वाला दिल विच रह गया,

तेरे नईयो आना.........

निका जिहा श्याम.........

3. साँबरे बगैर पल चैन नईयों आंवदा।
रोंदियां ने अखां दिल गोते पया खांवदा।
चोर चित कड के कलेजा मेरा ले गया,

तेरे नईयों आना.........

निका जिहा श्याम.........

भजन नं: 65

1 शामा करदा रिहा मुडो चोरियां वे,
कोल बैठ के मुन्दरी गुम कर लई। शामा करदा......
2 सानू आसरा मदन मोहन इस तरह
जिवें अनियां दे हथ डंगोरियां वे, शामा करदा......
3 मेरा सोहना ते मदन मोहन इंज होया,
जिवें बन्सरी दे विच विच मोरियां वे, शामा करदा......
4 तू ते वलियां दा बलि ए शाम सुन्दर,
असीं नारियां बहुत कमजोरियां वे, शामां करदा......
5 अग लग जावे इना बना ताई,
जित्थे न भरियां गुलाब दीयां बोरियां वे, शामां करदा......
6 जे मैं जानदी मदन मोहन रूस जाना,
काहनू भरीयां गुलाब दीयां बोरियां वे, शामा करदा रिहा......
7 तेनू माता यशोदा आवाजां मारदी ए,
घर आजा तू बन्सरी वालेया वे, शामां करदा......
8 छडो गुस्सा ते भरो पिचकारियां वे,
आओ रल मिल खेल लईए होलियां वे. शामां करदा......
9 सजरा मक्खन ते बईए रोटी शामा,
आ के भोग लगा जा सतगुरू प्यारिया वे, शामा करदा......

भजन नं: 66

शाम से कह दो अपनी मुरली को रोके,
सखियों के मन में बसी जा रही है।

1 रो रो कहती तू आ जा कन्हैया.
बिना तेरे न चलती यह जीवन की नैया।
जीवन की नैया प्रभु तेरे सहारे चली जा रही है।
शाम से कह दो......

2 रोती हैं गायें और ग्वाल सारे
आ जा कन्हैया तू यमुना किनारे
आंसुओं की दिन रात माला पिरोक कन्हैया,

कन्हैया रटे जा रहे हैं।

शाम से कह दो.......

3 दिन रो रो गुजारां कदों रात आवे,
जदों रात आई मगर तेरी सूरत न दिल में समाई।
डूबो दो चाहे किनारे लगा दो,
किनारे किनारे चली जा रही है।

शाम से कह दो——

भजन नं: 67

तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले......

मीराबाई जग तारी जिन भक्ति कीती कमाल,
जिसनू याद करे दुनियां सारी।

1 राणा ने भेजा सांप पटारा, मीरा को डस जावे,
हरी की करनी से नागों के हार बन जाए।

मीराबाई जग तारी......

2 राणा ने भेजा जहर प्याला, पी मीरा मर जावे,
हरी की करनी ऐसी, जहर अमृत बन जाए।

मीराबाई जग तारी .....

3 राणा ने भेजा शेर जंगल का, मीरा को खा जाए,
हरी की करनी ऐसी, होई कपला गऊ बन जाए।

मीराबाई जग तारी......

॥ विश्वास ॥

भजन नं: 68

दर दर दे फिरने नालों इक दर दा होके बेह जा।
गैरां दीयां बिटकां छड दे मुरशद दा होके बेह जा।

1 अलफ अल्ला रब मिलदा नइयों,
ते बहुत मेरा दिल सड़िया
पढ़ पढ़ थक गए वेद किताबां,
ते इलम बथेरा पढ़िया

सुनदे सां नित नाम जो तेरा,
पर नजर मेरी न चढ़िया
बुल्ले शाह जब रब मिलदा,
ता लड़ सतगुरू दा फड़िया।
दर दर दे फिरने ......

2 आशक रब दा हर कोई बनदा,
हथ माला तस्बी फड़के
आशकां दे तन खून न रहिन्दा,
देखो अन्दर वड़ के
हड्डियां सुकियां प्रेम करेदियां,
दिल हो गया कोला सड़के
पूछो उस मन्सूर तों जाके,
जेहड़ा नचिया सूली चढ़ के।
दर दर दे फिरने......

3 मुल्लां, काजी, पन्डित भटकन,
मत्थे तिलक लगा लैन्दे
अल्ला ओहना नू मिलदा,
जो मुरशद शरणी जा लैंदे
नटनी बन के मेरा कुछ नई लहिन्दा,
मैंनू नच के पीर मना लैंदे
दर दर दे फिरने......

4 न रब मिलदा मन्दिर मसीती,
न मिलदा काबे जा के
न रब मिलदा पत्थर पुजे
न मिलदा धूनियां ला के
बुल्ले शाह रब ताईयों मिलदा,
अपना पीर मना के।
दर दर दे फिरने......

5 इश्क तन्दूर प्रेम दा बालन,
नित उठ सबेरे ताईदा ए
जिस गली मैं आवां न जावां,
ओथे सौ-सौ फेरा पावां

बुल्ले पीर मनान दी खातिर,
सौ सौ मंकर बनाई दा ऐ
बुल्लेशाह छड लोक लाज,
इक मुरशद राजी करिए।
दर दर दे फिरने......
गैरां दीयां झिटकां......

भजन नं: 69

असां इक भुल कीती ए, तेरे नाल प्यार कर बैठे।
1 वहिष्ता तों कई बारी, फरिश्ते लैन आए,
तेरे ते मान है सानू, असीं इन्कार कर बैठे।
असां इक भुल......
2 सारी उमरां दे दुःख सजना असीं झोली पाए ने।
होके लैन दा वखरा, सिगो इकरार ला बैठे।
असां इक भुल कीती......
3 दिल वापस दे न दे, ओ तेरी अपनी मर्जी ए,
सौदा दिल दा दिल बदले, शेर बाजार कर बैठे।
असां इक भुल कीती......

भजन नं 70

तेरे नाल जे अखियाँ ला बैठे,
तकदीर दा हुन की वस सजना।
तेरे दर ते सीस निबा बैठे, हुन जाइये किहड़े दर सजना।
1 हस हस के मसोतां ते चढ़ जांदे,
जिहड़े राम मतवाले बन जांदे
तेरे नाम दे ठेके जे आंदे न,
तेरे प्रेम ने पाया झस सजना।
तेरे नाल जे अखियां ......
2 न जान नू ए कडदा ए, न जान नू ए छडदा ए,
पर दास जो पक्का तेरे दा ए, छड के न मैदानों नसदा ए।
तेरे नाल जे अखियां......

3 मर मर के द्वारा मलिया ए, किहड़ा दु:ख जो मैं न झलिया ए
हुन मेहर करो मेरे सतगुरु जी सानू ला के ठोकरा न ।
तेरे नाल जे अखियां ... ...
तेरे दर ते सीस... ...

नं: 71

लाके प्रीत सतगुरां नाल तोड़ न
तेरा जग विच बन्दिया कोई होर न ।

1 काहनु देखना ऐ महल चौबारे,
तेरा आखिरी मकान श्मशान है
आखिर बेले इना महलां विचों तोरना, लाके प्रीत सतगुरां ... ...

2 पावें सूट साड़ियां रंग-रंग दे.
रह जाने दुशाले सत रंग दे ।
कोरा खद्दर पुआके तैनू तौरना, लाके सतगुरां... ...

3 धीयां पुत्रां लई दिन रात तू खपदा ।
कदी सतसंग बल नई तू तकदा ।
बुडे बारे तैनू रोटी तों भी रोलना लाके प्रीत सतगुरां... ...

4 कर पाप दी कमाई न तू रजिया
रह जाना धन तेरा रखिया
आखिर बेले तैनू खाली हथ तोरना लाके प्रीत सतगुरां... ...



॥ आरती ॥

नं 72

ओ३म् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट छन में दूर करे ॥ ओ३म् ॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसे मन का स्वामी दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ओ३म् ॥
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ूँ किसकी स्वामी शरण पड़ूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिस की ॥ ओ३म् ॥
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥ ओ३म् ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता स्वामी तुम पालन कर्ता ।
मैं मूर्ख खलकामी कृपा करो भर्ता ।।ओ३म् ॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति स्वामी सब के प्राणपति ।
केहि विधि मिलूं दयामय तुम को मैं कुमति ॥ ओ३म् ॥
दीन बन्धु दुःखहर्ता ठाकुर तुम मेरे स्वामी ठाकुर तुम मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ओ३म् ॥
विषय बिकार मिटाओ पाप हरो देवा स्वामी पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥ ओ३म् ॥

नं 73

(श्री श्री 108 श्री परमहंस दयाल जी तथा श्री श्री 108 श्री महाराज जी की आरती)

हरि ओम् जय श्री जगतारन मैं वारी जय जय श्री जगतारन ।
शुभमग के उपदेशक यमत्रास निवारन ॥ हरि ओम् ॥
परमार्थ हित अवतार जगत में गुरु जी ने है लीना
मेरे स्वामी जी ने है लीना ।

हम जैसे भाग्यन को गृह दर्शन दीना ॥ हरि ओम् ॥

कलि कुटिल जीवन निस्तारन को स्वामी सन्त रुप धर के

मेरे स्वामी सन्त रूप धर के

आतम को दरशावत मल धोये तन मन के ॥ हरि ओम् ॥
आप पाप त्रप ताप गये जो गुरु शरणी आवे,

मेरे स्वामी गुरु शरणी आवे

गुरु जी से लाल अमोलक तिस जन ने पाए ॥ हरि ओम् ॥
सहज समाधि अनाहद धुनि जाप अजपा बतलाए;

मेरे स्वामी अजपा बतलाए

प्राणायाम की लहरें दासन्ह के मन भाए ॥ हरि ओम् ॥
हरि कृपा कर जन्म दियो जग मात पिता द्वारे,

मेरे स्वामी मात पिता द्वारे

उन से अधिक गुरू जी हैं भव निधि के तारे ॥ हरि ओम् ।
तले की वस्तु गगन ठहिराये गुरू के शब्द शर से,

मेरे स्वामी शब्द शर से

सो सूरा सो पूरा वल में वह बरते ॥ हरि ओम् ॥
तत्त स्नेही प्रेम की वातीयोग अगिनि जिन के,

मेरे स्वामी योग अग्नि जिन के

तेरी आरती लापके सोजन जो हैं शुद्ध मन के ॥ हरि ओम् ॥
स्वामी परम हंस गुरु जी की आरती अष्ट पदी रच के ॥

मेरे स्वामी अष्ट पदी रच के

साहिब चन्द ने गाई पद रज सज कर के ॥ हरि ओम् ॥
बिलहारी जय-जय श्री जगतारन, दयालु जय-जय श्री जगतारन ॥
दयालु जय जय श्री जगतारन, सदगुरू जी जय-जय श्री जगतारन
महाराज जी जय-जय श्री जगतारन,
मेरे रक्षक जय-जय श्री जगतारन ।
मेरे संकट मोचन जय-जय श्री जगतारन,
शुभ मग के उपदेशक यमत्रास निवारन हरि ओम् जय-जय
श्री जगतारन ॥

आरती श्री सदगुरू भगवान जी की

नं 74

ओम् जय श्री गुरु देवा स्वामी जय श्री गुरू देवा ।
भव सागर के तारन प्रकटे गुरु देवा ।। ओम् ।।
परमारथ दर्शक रक्षक भक्ति सुख दाता स्वामी भक्ति सुख दाता
ऋषि मुनि ज्ञानी सेवक मुक्ती दायक तव सेवा ।। ओम् ।।
सतचित आन्नद भक्त हित तुम दर्शन दीने स्वामी तुम दर्शन दीनें
आवागमन के संकट हमारो हर लीने ।। हरि ओम् ।।
हमारी नईया डोलत भव सागर भारी स्वामी भव सागर भारी
दया कृपा कर थामों ज्यों गिरिवर गिरधारी ।। ओम् ।।
निष्काम नाम गुण गावे हम हरि गुरु तेरे स्वामी हम हरि गुरु तेरे
ज्योति मूर्ति आप की हृदय बसे मेरे ।। ओम् ।।
हम निर्बल तुम समर्थ शक्ति दो मुझ में स्वामी शक्ति दो मुझ में
वृति विषयों से हटा कर नित लाऊं मैं तुझ में ।। ओम् ।।
विधि हरि हर ईश्वर गुरु मूर्ति धारी स्वामी गुरु मुर्ति धारी
अगम निगम नित गावे गुरु महिमा भारी ।। ओम् ।।
दासुनदास कर आरती सुन रीझो प्रभु मेरे
स्वामी सुन रीझो प्रभु मेरे
सुतदारा तन-मन-धन अर्पन तेरे ।। ओम् ।।

।। दोहावली ।।

नं: 75

ईश्वर स्वरूपा नन्द गुरु सर्वेश्वर सुख धाम ।
हम आए शरण आप की, हीरा कर पूर्ण काम ।।
अद्वैत स्वरूप हीरा गुरू, पूर्ण ब्रह्म दातार ।
हाथ जोड़ि कर बेनती करूं दास तुम्हारे द्वार ।।

मम हृदय में आयकर, कर हरि गुरु निवास।
सेवा प्रेम अरु नाम दे, चरण कमल में वास॥
भक्ति मुक्ति मोहे दीजिए, हरि गुरु सिरजन हार।
दास तेरो मांगत यहि, सद्गुरु सुनो पुकार।
शम दम श्रद्धा दो मोही, समाधान उपराम।
काम तितिक्ष धीरज ईच्छत सद्गुरु नाम॥
दीनों में अतिदीन मैं, हरि गुरू दीना नाथ।
हरि गुरू दया अपनी का, धरिये मम सिर हाथ।
दया सिद्धि शक्ति दान दो, सत्संग निश्चल जाप।
जन्म मरण कटे जीव का, छूटे सकल दुख पाप॥
आसमर्थ नादान हम, तुम समर्थ भरपूर।
सेवा मुक्ति भक्ति ज्ञान के, विघन करो सब दूर॥
विद्या धन बल मान पत, ईश बन्धु मां बाप।
सर्वस्व ईष्ट देव हो, हमरे सदगुरू आप।
परमात्मा अरू आत्मा हमरे हो गुरू एक।
तुम्हारे चरणों की सदा, सद्गुरु हम को टेक।
मोह कामादिक शत्रुओं का, है मम ऊर में वास।
दया अपनी से सद्गुरू, करिए इनका नाश।
चंचल चित भगवान जी, तुम्हारी और लग जाय।
अनन्य भक्ति दे चरण की, आवागमन नसाय॥
पारब्रह्म गुरू देव हो ज्योति स्वरूप सुखधाम।
दासुनदास विनती का, तुम को गुरू जी प्रणाम॥

आरती गुरू महाराज जी की

नं 76

नमों सद्गुरू सच्चिदानन्दरूपं.
नमों सद्गुरू ज्ञानदाता अनूप।
नमों सदगुरूं सत स्वरूपं विकाशं।
नमों सद्गुरुं भानुव्रत सु प्रकाशं॥

नमों सद्गुरूं बुद्धि विद्या प्रदाता,

नमों सद्गुरूं सृष्टि कर्ता विधाता ।

नमों सद्गुरूं वेद ब्रह्म स्वरूपं,

नमों सद्गुरु भूपभूपानुभूपम् ॥

नमों सद्गुरूं काल करालं,

नमो सद्गुरूं भक्त मानस मतालं ।

नमों सद्गुरूं दास पाप प्रहारी.

नमों सद्गुरूं निर्गुणं निर्विकारी ॥

दोहा :— कृपा उदीध गुरु देव के लहर वचन अनमोल ।

भक्ति योग के भेद को दियो पलक में खोल ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्दु च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वंमम देव-देव ॥

॥ विनती ॥

नं: 77

दोहा :—अवगुणहार की विनती सुनो गरीब निवाज ।

जो मैं पूत कपूत हूं बहुरि पिता को लाज ॥

नहीं विद्या नहीं बाहुबल, नहीं खरचन के दाम ।

तुलसी मो सम पतित को पत राखो श्री राम ॥

अवसर राखी द्रौपदी संकट ज्यों प्रह्लाद ।

कहन सुनन को कुछ नहीं शरण पड़े का लाज ॥

गुरू जी को सिर पर राखिए चलिए आज्ञा मांहि ।

कहैं कबीरता दास को, तीन लोक भय नाहिं ॥

गुरू समर्थ सिर पर खड़े कमा काहु तेहि दास ।

ऋद्धि सिद्धि सेवा करे मुक्ति न छोड़े साथ ।

जो मैं भूल बिगाड़िया ना कर मैला चित ।

साहिब गौरा लोड़िए नकर बिगड़े नित्त ।

आशावन्ता दर खड़ी साहिब न छोड़ि दे ।

ये दरवार न छोड़िए सद्गुरू कृपा करे ॥

क्या मुख ले विनती करूं लाज आवत है मोहि ॥
तुम देखत अवगुण करो कैसे पाऊं तोहि ।

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े किस के लागूं पायं ।
बलिहारी गुरू अपने निज गोबिन्द दियो बताय ॥
गुरु जी को कीजिए दण्डवत कोटि कोटि प्रणाम ।
कीट न जानै भृगी को स्वामी कर दे आप समान ॥
लेखे गिनत न छूटिए छिन-छिन भूलन हार ।
बखशन हारा बख्श ले नानक पार उतार ॥
सद्‌गुरु नाम जहाज है चढ़े सो उतरे पार ।
जो श्रद्धा कर सेवते स्वामी पार लगावन हार ॥
श्री गुरु महारज की महिमा मो सो बरनि न जाय ।
महाबली अवतार जल थल रहे समाय ॥
सतगुरु मेरा सूरमा करे शब्द की चोट ।
मारे गोला प्रेम का ढहे भरम की कोट ॥
फिरत फिरत प्रभु आपऊं पडेऊं तोहि सरनाय ।
नानक की प्रभु विनती अपनी भक्ति लाय ॥
भक्ति दान मोहि दीजिए गुरु देवन के देव ।
और कछु नाहिं चाहिए निशि दिन तुम्हारी सेव ॥
गुरू मूरति गति चन्द्रमा सेवक नयन चकोर ।
अष्ट पहर निरखत रहे गुरू मूरति की ओर ।
पार ब्रह्म परमेश्वर पूर्ण सच्चिदानन्द ।
नमस्कार प्रभु आप को सब सन्तन के संग ॥
श्री मात पिता सद्‌गुरु मेरे शरण पड़ू किस की ।।
गुरू बिन और न दूजा आस करूं जिस की ।
जय कारा निस्तारा धर्म का द्वारा, झूलेगी ध्वजा बजेगा नगारा ।
सुन कर बोलो सो निर्भय, बोलो सांचे दरबार की जय ॥

नं: 78 (स्तोत्र)

जय सतचित् आनन्द मूरति स्वामी जी के चरण बन्दनं,
जो दे उपदेश क्लेश नाशें कलि के कलुष विभंजनं ॥ स्वामी ॥
जो ज्ञान निधि विज्ञान दायकं सब दुष्कृतं,

युत योग भोगहिं रोग नाशे सुख दुख सम और मितं ॥ स्वामी ॥
परमार्थ पथ वेद भेद के खेद बिन जो दायकं ॥ स्वामी ॥
शरणागत के भरम हत के सत ही के कर लायकं । स्वामी ।
मलदल अमल अचल पनम्बुज श्री सतगुरु को जो ध्याववतं
सुखसुबश सुगतिसुवुद्धि सुशांति बिन प्रयास सोपावत । स्वामी ।
है जग जन्म सफल उन का जो गुरू पद रज मन लावहीं,
ज्यों पारस परस कुधातु सुधरे सो फिर जन्म न आवहीं । स्वामी ।
दया के सिन्धु ज्यों शीतब इन्दु ज्यों ओम् के बिन्दु ज्यों भाषत,
तेज महि भानु ज्यों विद्या की खान,
ज्यों अहर्निशि ध्यान भय भाषता । स्वामी ।
परम धर्म श्री सद्गुरु की सेवा विदित नरक निवारनं,
जो सो शब्द भव बन्धन काटे समझ पड़तएतो कारणं । स्वामी ।
सन्त महत्मा ओर बुद्धजन वेद पुरान सव गवाहीं,
प्रभु से अधिक गुरु जो सेवें सो निश्चय सतगुरू पावहीं । स्वामी ।
शुक सनकादिक ध्रुव नारद आदिक गुरु उपदेश से अमुनं,
ऋषिमुनि जन प्राक्रन जग मैं लै दिक्षा सतगुरु सुमिरन । स्वामी ।
गुरु यश दिग्पद ऐ निशि गावत दसो दिशा दुख जारतं,
गुरु पद जलज अलीमन जांको साहिब चन्द उच्चारतं । स्वामी ।

नं 79

छन्द

स्वामी मेरे परमहंस महाराज विद्यासागर परमानन्द । टेक ।
अपने गुरू जी की सेवा कीनी इन से निर्गुण भक्ति लीनी ।
गुरू जी ने हृदय बैठक दीनी है ये सन्तपुरी आनन्द । स्वामी ।
अपने ध्यान में लेव लगाई सकल ब्रह्म की ज्योति जगाई ।
जीवाजीव ब्रह्म दरशाई हो अज्ञान से ज्ञानानन्द । स्वामी ।
आप की महिमा अति अगम बुद्धि समझ न पावे मम,
हृदय शुद्ध दृष्टि सम मस्तक दरशे सूरज चन्द । स्वामी ।

आपकी मधुरी बानी उर पन्द शकर से ज्यादा मीठा कन्द,
करे सब संगत उसे पसंद सुने सो मिटे दर्द दुख द्वंद । स्वामी ।
दर पे भले जो बुरे जो आवे इच्छा पूर्ण होकर जावे,
पीछे सबसे यही बतलावें प्रीति गुरु की मुझ पर बुलंद । स्वामी ।
आप की कृपा सब पर भारी जो समझे सो है अधिकारी,
जो न समझ वह न कारी आप हैं सांचे और पांवद । स्वामी ।
आप ने दुख सुख सम कर न जानो हर घट आतम को पहचाना,
जिस ने मता आप का जाना मिट गया उस का यम का फंद

। स्वामी ।

स्वामी गौ हूं मैं सेवाहीन पर हूं कृपा के अधीन,
तुम्हारी चरण शरण मैं हीन काटो क्लेश और दुख द्वंद । स्वामी ।
भवसागर से हमें उबारो, करुण जहाज बनाकर तारो,
वैतरणी से पार उतारो स्वारी देकर ज्ञान समन्द । स्वामी ।
आप की महिमा क्या कोई गावे जिनकी बुद्धि पार नहीं पावे,
पर मन चित से शरणी आवे उसी को होवे सदा आनन्द । स्वामी ।
आप की महिमा जग में फैली वंड रही धन भक्ति की थैली,
दुनियां न समझे अलबेली मूर्ख वे हैं बुद्धिमतिमन्द । स्वामी ।
गुरु जी की महिमा हिलमिल गावो और अभिमान को दूर हटाओ
प्रेम की नदियां खूब बहाओ जोड़ कर कहे छंद आनन्द । स्वामी ।

नं: 80

।। भगवान 108 नाम ।।

कन्हैया, कृष्ण, केशव, चक्रधारी, नन्दलाल, माधो सुन्दर, श्याम, मुरारी, राधावर बंसी वजैया, रघुवीर, नटवर, नन्द नन्दन, गजवर, अजर, अमर, अविनाशी, नरोत्तम, अर्जुनसखा, सांवरिया, सांवला, गोपाल, दामोदर वृज नाथ दयालु, दीनाबन्धु, जगदीश, दीनानाथ, जगत पिता, बावन, यशोदा लाल, नारायण विहारी, मदन मोहन, कृपानिधि, सर्वरक्षक, ईश्वर, सर्व शक्तिमान सर्व व्यापक, मनहरन, बांके बिहारी, गोपी नाथ, बृजवल्लभ.

गोवर्धनधारी घनश्याम, परम आनन्द, पतित पावन, ज्योति स्वरूप. राधा-रमण, माधव, मधुसूदन, रघुपति, राम, हरि, मुरली मनोहर, श्याम, कल्याण कारी अनन्त, परम पिता, प्रभु परम पवित्र गोसांई, भक्त वत्सल, वासुदेव, प्रमात्मा दुखहरता, विधाता निरञ्जन, कलिनाग, नथिया, अभय, अन्तर्यामी सर्वाधार, घट घट के वासी, दीनानाथ दाता परमेश्वर, रमणीक, निराकार, निर्विकार, अच्युत न्यायकारी जगतकर्ता त्रिभुनाथ, शंकर विष्णु सत्य नारायण, ज्योति स्वरूप परमपिता, ब्रह्म, संहरता. पालनकर्ता सच्चिदानन्द स्वरूप, केशव, अनादि, विश्वकर्ता. पूर्ण परमानन्द स्वामिन ॥

नं 81

। आरती श्री ब्रह्म-विष्णु-महेश जी ।

ओ३म् जय शिव औंकारा, भज शिव औंकारा,
ब्रह्म विष्णु सदा शिव अर्द्धङ्गी धारा ॥2॥

ॐ हर हर हर महादेव

एकानन चतुरानन पंचानन राजे,
हँसासन गरुड़ासन बृषवाहन साजे ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

दो भुज चार चर्तुभुज दश भुज अति सोहे,
तीनों रुप निरखते त्रिभुवन मोहे।

ॐ हर हर हर महादेव

अक्षमाला वन माला रूण्डामाला धारी,
त्रिपुरारी कं सारी कर माला धारी ॥

ॐ हर रह हर महादेव ॥

श्वेताम्बण पीताम्बर वाघाम्बर अंगे,
सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

कर मध्ये सुकमण्डल-चक्र-शूलधारी,
सुखकारी दुखहारी जग पालन हारी ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जीवत अविवेका,
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे,
मनर शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

नं: 82

ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहंनाकं महिमान: सचन्त: यत्र पूर्वे साध्या: संति देवा: ॥1॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने-नमो वयं वैश्रवणाय कूर्महे ।
समेकामान् कामकामाय-मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥2॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नम: ! ≡
ॐ विश्वन श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतों बहुरूत विश्वतस्यात् !
सम्वाहुभ्यां धमति सम्पतत्रेधार्वामूसी जनयन देव एक: !!
ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च !
पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण परमेश्वर : !
त्वमेव माता च पिता त्वमेव-त्वमेव बन्धु श्च सखा त्वमेव !
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव-त्वमेव सर्वं मम देव देव ;

